वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

5.4

16 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

व्यवधान की शक्ति
फ्रांसेज फाक्स पिवेन

इस्लामिक स्टेट का आकर्षण
फ्रास्वाँ बुरगट

समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र
जेन ब्रेमन

आस्ट्रिया का जनोन्मुखी समाजशास्त्र
रूडोल्फ रिचतर

संक्रमण में क्यूबा
- > यू.एस. एवं क्यूबा
- > नस्लवाद और आंदोलन पर
- > बदलते समय में क्यूबा के सफाई कर्मचारी

ताईवान में समाजशास्त्र
- > सनफ्लावर आंदोलन
- > श्रम एवं पर्यावरणीय आंदोलन
- > सिकुड़ती अभिभावकता
- > ताईवान के पतन का निर्माण
- > ताईवान के समाजशास्त्र का विकास
- > स्ट्रीट कार्नर (नुक्कड़) समाजशास्त्र

स्मृति में
- > जुर्गन होर्टमेन, 1944–2015

पत्रिका

अंक 5 / क्रमांक 4 / दिसम्बर 2015
http://isa-global-dialogue.net

GD

International Sociological Association

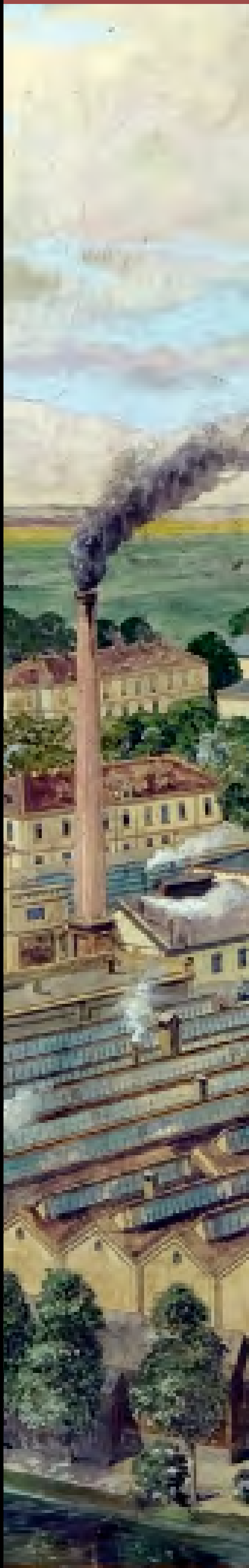

> सम्पादकीय

अन्तः वैषयिकता एवं विषय

यह अंक दो साक्षात्कारों से प्रारम्भ होता है। पहला, अमरीकी समाजशास्त्र के इतिहास में सबसे उल्लेखनीय विद्वानों में से एक, फ्राँसेज पिवेन के साथ साक्षात्कार है। कल्याण अधिकार, मतदाता पंजीकरण जैसे मुद्दों के प्रति उनके समर्पण और हाल ही के कब्जा आंदोलन ने उग्रवाद की शक्ति पर ध्यान आकश्रित कर, सामाजिक आंदोलना के उनके मौलिक विश्लेषण को सूचित किया है। अपने लंबे कैरियर के दौरान उन्होंने एक तरफ मिल्टन फ्रीडमैन जैसी हस्तियों से निड़र हो कर बहस की है, वहीं उसी दौरान दक्षिणपंथी पंडितों की शत्रुता का खामियाजा भी वहन किया है। दूसरा साक्षात्कार मध्यपूर्व के फ्रांसीसी विशेषज्ञ, फ्राँस्वा बुरगट के साथ है जहाँ वे अपने गृह राज्य में नृजातीय बहिष्कार के शिकार यूरोपीय मुसलमानों में इस्लामिक स्टेट के आकर्षण की व्याख्या करते हैं। तत्पश्चात् अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के प्रसिद्ध डच समाजशास्त्री जेन ब्रेमन का लेख है जिसमें वे मानवशास्त्र और समाजशास्त्र के मध्य के जटिल सम्बन्ध को सुलझाती है। तीनों सामाजिक वैज्ञानिकों का समाजशास्त्र में दखल है लेकिन सार्वजनिक मुददों पर कार्य करते समय राजनीति विज्ञान, नृविज्ञान और इतिहास के साथ समाजशास्त्र से भी आकर्षित हो वे दर्शाते हैं कि विषयगत सीमाएँ अब महत्वहीन हैं।

क्यूबा के उपर हमारे विशिष्ट खण्ड में लेख देने वालों के लिए भी यह सही है। लुइस रूमबॉट और रूबेन श्मबॉट यू. एस. और क्यूबा के मध्य के ऐतिहासिक समझौते पर चिंतन करते हैं और इस मेल–मिलाप के लिए उत्तरदायी भू–राजनैतिक और आर्थिक दबाव की संचयी ताकतों की तरफ ध्यान आकर्षित करते हैं जबकि लुइसा स्टूयर निम्न वेतन सफाईकमियों की दृष्टि से इसका अर्थ समझाती हैं। बाजारी अर्थव्यवस्था में रूस के रूपांतरण के जानकार के रूप में, वे देखती हैं कि क्यूबा में इसी प्रकार का परिवर्तन कैसे उन असमानताओं को गहरा करता है, जो पूर्व में नियंत्रण में थीं। आगामी लेख में, लुइसा स्टूयर, अफ्रीकी–क्यूबन कार्यकर्ता नार्बटो कार्बोनेल जो अपने दल के प्रति वफादार हैं, परन्तु क्यूबा में नस्लवाद पर स्पष्ट रूप से बोलते हैं, का साक्षात्कार करती हैं। ऐसे साक्षात्कार का प्रकाशन आज से एक वर्ष से पूर्व संभव नहीं था।

लेकिन अन्तः वैषयिकता के लिये विषयों की आवश्यकता होती है और समाजशास्त्र वैश्विक आधारों से प्रभावित होने के बावजूद भी राष्ट्रीय सीमाओं में विकसित होता है। ताईवान से प्राप्त छः लेख इस बिन्दु को रेखांकित करते हैं। अशांत सामाजिक आंदोलनों के इतिहास के साथ, चीन और अमरीका के मध्य स्थित इस लघु द्वीप ने एशिया के सबसे जीवन्त समाजशास्त्रों में से एक को जन्म दिया है। अधीनता के इतिहास सहित भू–राजनीति के प्रति संवेदनशील इस राष्ट्र ने वैश्विक समाजशास्त्र के नायाब उपागमों को उत्तेजित किया है। इसके अलावा, हमारे कई ताईवानी लेखकों ने 1990 के दशक के लोकतांत्रिक आंदोलनों में भाग लिया था और अतः उन्होंने सामाजिक आंदोलनों पर एक विशिष्ट दृष्टिकोण विकसित किया है। जैसा कि लेख दर्शाते हैं, हाल का सूरजमुखी आंदोलन आम जनता को अकादमिक से परे जोड़ कर समाजशास्त्र और उसकी विवेचनात्मक दृष्टि को राष्ट्रीय सुर्खियों में लाया।

रूडोल्फ रिचतर के आस्ट्रिया के समाजशास्त्र के वर्णन में सार्वजनिक समाजशास्त्र भी एक थीम है। उनका लेख जुलाई 10–14, 2016 में वियना में होने वाली तीसरे फोरम का आई. एस. ए. सदस्यों से परिचय करवाने वाली श्रंखला में प्रथम है। स्थानीय आयोजन समिति अपने ब्लॉग http://isaforum 2016.univie.ac.at/blog/ के माध्यम से एक आस्ट्रियाई दावत की तैयारी कर रही है।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 16 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

फ्रांसेज फाक्स पिवेन, *एक लंबे और प्रतिष्ठित कैरियर वाली अमरीकी समाजशास्त्री, लॉरेन मिनाइट के साथ साक्षात्कार में सामाजिक आंदोलन के अपने सिद्धान्त को प्रस्तुत करती हैं।*

फ्रास्वाँ बुरगट, *मध्य–पूर्व के विद्वान, सारी हनाफी द्वारा आयोजित किये गये साक्षात्कार में इस्लामिक स्टेट के आकर्षण की व्याख्या करते हुए।*

जेन ब्रेमन, *विख्यात डच समाजशास्त्री, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र के मध्य विचित्र सम्बन्ध पर चिन्तन करते हुए।*

रूडोल्फ रिचतर, *2016 आईएसए समाजशास्त्र फोरम की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष आस्ट्रिया में जनोन्मुखी समाजशास्त्र की विरासत पर*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Rafael de Souza, Benno Alves, Julio Davies.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo.

India:
Ishwar Modi, Rashmi Jain, Pragya Sharma, Jyoti Sidana, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Mohsen Rajabi, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Fuma Sekiguchi, Shinsa Kameo, Kanako Matake, Kaho Miyahara, Yuki Nakano, Yutaro Shimokawa, Sakiye Yoshioka.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Daurenbek Kuleimenov, Gani Madi, Almash Tlespayeva.

Poland:
Jakub Barszczewski, Mariusz Finkielsztein, Weronika Gawarska, Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Martyna Maciuch, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Patrycja Pendrakowska, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Justyna Zielińska, Jacek Zych.

Romania:
Cosima Rughiniș, Corina Brăgaru, Costinel Anuța, Telegdy Balasz, Adriana Bondor, Roxana Bratu, Ramona Cantaragiu, Alexandra Ciocănel, Alexandru Duțu, Ruxandra Iordache, Mihai-Bogdan Marian, Ramona Marinache, Anca Mihai, Radu Năforniță, Oana-Elena Negrea, Diana Tihan, Elisabeta Toma, Elena Tudor, Carmen Voinea.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Lubov Chernyshova, Anastasija Golovneva, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultants: Gustavo Taniguti.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

>इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : अन्त:वैषयिकता एवं विषय 2

व्यवधान की शक्ति : फ्रांसेज पिवेन के साथ एक साक्षात्कार
लॉरेन सी मिनिट, यूएसए द्वारा 4

इस्लामिक स्टेट की अपील : फ्रास्वाँ बुरगट के साथ साक्षात्कार
सारी हनाफी, लेबनान द्वारा 7

समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र का विचित्र इतिहास
जेन ब्रेमन, नीदरलैंड 10

जनोन्मुखी समाजशास्त्र की आस्ट्रियाई विरासत
रूडोल्फ रिचतर, आस्ट्रिया 13

> संक्रमण में क्यूबा

यूएसए एवं क्यूबा : करने से कठिन रचना करना है
लुइस ई. रूमबाट और **रूबेन जी. रूमबाट, यू.एस.ए.** 15

नस्लवाद एवं आंदोलन : नार्वेटो मेसा कार्बोनेल के साथ साक्षात्कार
लुइसा स्टूयर, डेनमार्क द्वारा 18

हवाना से सनसनी खबर
लुइसा स्टूयर, डेनमार्क 21

> ताईवान में समाजशास्त्र

सनफ्लावर आंदोलन एवं ताईवान का संकटग्रस्त समाजशास्त्र
मिंग शो हो, ताईवान 23

कौन पहले आया ? श्रमिक या पर्यावरणीय आंदोलन
हवा जेन लियू, ताईवान 25

ताईवान में सिकुड़ती अभिभावकता
पी–चिया लिन, ताईवान 28

पतन का निर्माण : 21वीं शताब्दी में ताईवान
थुंग होंग लिन, ताईवान 30

ताईवानी समाजशास्त्र के विकास में व्यापकता और विशिष्टता
माउ कुई चेंग, ताईवान 32

स्ट्रीटकार्नर (नुक्कड़) समाजशास्त्र
होंग जेन वेंग, ताईवान 34

> स्मृति में

जुर्गन होर्टमेन, 1944–2015 : एक समर्पित अन्तर्राष्ट्रीयवादी
ल्यूडमिला नर्स, यूके एवं **सिल्विया ट्रन्का, आस्ट्रिया** 36

> व्यवधान की शक्ति

फ्राँसेज पिवेन के साथ एक साक्षात्कार

फ्राँसेज पिवेन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त समाज वैज्ञानिक और एक बहुत प्यारी शिक्षिका हैं। वे कट्टरपंथी डेमोक्रेट और प्रेरणादायक विदुषी–कार्यकर्ता हैं जिनके गरीबों के समर्थन में किये कृत्य उनके उल्लेखनीय एवं साहसी कैरियर में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। रिचर्ड ए क्लोवर्ड के सह–लेखन के साथ उनकी पहली पुस्तक, निर्धनों को नियंत्रित करना : समाज कल्याण का प्रकार्य (1971) ने एक विद्वतापूर्ण बहस को भड़काया जिसने समाज कल्याण नीति के क्षेत्र को पुनः आकार दिया। उसके बाद की कृतियों ने उन स्थितियों की व्याख्या की, जिनमें निर्धनों की व्यवधानकारी गतिविधियों ने आधुनिक अमरीकी कल्याण राज्य की नींव को प्रभावित किया (निर्धन लोगों के आंदोलन, 1977) और जो प्रगतिशील सामाजिक नीतियों एवं राजनैतिक सुधारों की प्रगति के लिए आवश्यक हैं (अमरीकी सामाजिक समझौते का टूटना, 1977; सत्ता को चुनौती, 2006)। उन्होंने कल्याण अधिकार के लिए अभियान चला और फिर मतदाता पंजीकरण के साथ साथ कब्जा करो आंदोलन को सार्वजनिक समर्थन दे कर हमेशा अकादमिक शोध को राजनैतिक सक्रियता के साथ जोड़ा है। वे मीडिया में अपने विचारों की वकालत करने में कभी हिचकिचाई नहीं और उन्होंने टेलिविजन पर एक प्रसिद्ध बहस में उदारवादी अर्थशास्त्री मिल्टन फ्रीडमैन जैसे उल्लेखनीय विरोधी का सामना किया। उन्हें कई सम्मान और पुरूस्कार प्राप्त हुए हैं जिसमें 2007 में अमरीकी समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल भी सम्मिलित है। नीचे दिये गये वार्तालाप में वे अपने कार्यक्षेत्र के केन्द्र में स्थित ''अन्योन्याश्रित शक्ति'' के सिद्धान्त के बारे में विस्तार से बताती हैं। राटगर्स विश्वविद्यालय, यू. एस. ए. में राजनैतिक विज्ञानी और नीति विद्वान लॉरेन. सी. मिनि ने मिलरटन, न्यूयार्क में 30 मई 2015 को पिवेन का साक्षात्कार लिया।

फ्रांसेज फाक्स पिवेन

ल.म. : मैं आपके प्रथम प्रकाशित लेख ''राजनैतिक प्रक्रिया में निम्न आय के लोग'', रिचर्ड क्लोवर्ड के साथ 1966 में द नेशन में प्रकाशित कुख्यात लेख ''निर्धनों का भार'' के साथ आपके कृत्यों में बारम्बार आने वाली थीम व्यवधान के बारे में पूछना चाहती हूँ। आज हम व्यवधान के बारे में बहुत सुनते हैं। उच्च तकनीकी लैस उद्यमी मजे और लाभ के लिए अन्य उद्योगों में ''व्यवधान'' पहुंचाने के मंत्र का उपदेश देते हैं और सामाजिक आंदोलनों का विश्लेषण करने वाले भी इस शब्द को बहुत काम में ले रहे हैं। चूंकि यह लम्बे समय से आपके अध्ययन का केन्द्र रहा है, क्या आप बता सकती हैं कि सामाजिक सिद्धान्त में एक अवधारणा के रूप में व्यवधान से आपका क्या अर्थ है?

फ.प. : यद्यपि यह शब्द काफी अधिक काम में लिया जाता है, मुझे नहीं लगता कि इसे सावधानीपूर्वक काम में लिया गया है। तकनीकी उद्योग में इसका अर्थ वह नवाचार है जो बाजारों को उत्तेजित करता है और सामाजिक आंदोलन का अध्ययन करने वाले विद्वानों के लिए यह कोलाहलपूर्ण, अव्यवस्थित या शायद हिंसक सामूहिक क्रिया है। परन्तु कोलाहल और अव्यवस्था शायद इस की अच्छी तरह से व्याख्या नहीं कर सकते कि व्यवधान कभी कभी निचले स्तर के लोगों को कैसे शक्ति प्रदान करता है।

आपने मेरे प्रारंभिक कार्य जो गरीब अश्वेतों (और न्यूयार्क शहर में प्यूरटो रिकन) द्वारा प्रतिरोध उभार के समय लिखे गये थे, का जिक्र किया है।

>>

विरोध वास्तव में बहुत मुखर और उच्छृंखल थे। मैंने पूछा, क्यों? 1960 के दशक के शुरू में ग्रामीण दक्षिण एवं प्यूरटो रीको से बड़ी संख्या में लोग अमरीका के मुख्य शहरों में प्रवास कर गये थे। निस्सन्देह, वे एक बेहतर जीवन के प्रति आशावान थे। निश्चित तौर से वे बेहद गरीब थे। उन्होंने देखा कि नगरीय श्रम बाजार उन्हें उचित नौकरियों की पेशकश नहीं करता है और नगरपालिका प्रशासन उन्हें सेवाओं से वंचित रखता है। अतः, लोग एकट्ठे हुए, मार्च किया, चिल्लाए, उन्होंने सिटी हाल के लॉन पर कचरा फेंका। और इसकी प्रतिक्रिया में, कई श्वेत उदारवादी, अक्सर समाज कल्याण क्षेत्र में पेशेवर, ने कहा, ''हम आपके लक्ष्यों से सहमत हैं, परन्तु आपके तरीकों से नहीं। यह सही है कि आपको रोजगार मिलना चाहिए, आपके पास आय का स्त्रोत होना चाहिए, आपको स्वास्थ्य सेवाएँ मिलनी चाहिए, आपके घरों में ताप एवं गर्म पानी होना चाहिए। परन्तु इन समस्याओं को दूर करने का तरीका हल्ला मचाना, परेशानी खड़ी करना नहीं है। आपको यह करना चाहिए कि आप एकजुट हों, मत दें, अपने प्रतिनिधियों से विनती करें'' अर्थात् आपको नियमित प्रामाणिक लोकतांत्रिक राजनीति के दस्तूर का पालन करना चाहिए।

मैं इस बारे में हैरान थी। मैं इस निष्कर्ष पर आई कि लोग जो कर रहे थे, वे इसलिए कर रहे थे क्योंकि उन्हें जो परामर्श उन्हें अपने उदारवादी साथियों से मिल रहा था वह बुरा परामर्श था। असल में, उनमें से कई ने निवारण की सामान्य प्रक्रियाओं को काम में लेने का प्रयास किया था। उनमें से कईयों ने सिटी हाल पर कुछ प्रभाव डालने की कोशिश की थी। उन्होंने कल्याण या अन्य सामाजिक सेवाओं के लिए आवेदन किया था परन्तु उन्होंने पाया कि उनके आवेदन पत्र नजरअंदाज कर दिये गये।

मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि व्यवधानकारी रणनीति के प्रति लोगों का रूझान इसलिए था क्योंकि ये रणनीति उनके लिए प्रभावशाली हो सकती थीं। निम्न–आय वाले लोग कभी कभी क्यों विध्वंसकारी हो सकते हैं प्रश्न पर यह मेरा पहला मत था। निस्सन्देह, वास्तव में निर्धन लोग अधिकांश समय शांत ही रहते हैं। लेकिन जब कभी वे राजनैतिक मंच पर उभरते हैं, वह अक्सर उच्छृंखल तरीकों से होता है।

समय के साथ, मैंने रिचर्ड क्लोवर्ड के साथ व्यवधानिक कहलाने वाली गतिविधियों को समझने का अधिक विश्लेषणात्मक और सुविज्ञ तरीका विकसित किया है। मैं जो तर्क दे रही हूं इसको समझने के लिए, आपको जाँच के दायरे में आने वाले लोगों के विशिष्ट व्यवहारों से ध्यान हटा कर यह प्रश्न पूछना होगा : समाज को निर्मित करने वाले अन्यन्योश्रित सम्बन्धों की जटिल व्यवस्था, समाज को निर्मित करने वाले सहयोगी सम्बन्धों के जटिल जाल में, ये निर्धन लोग क्या भूमिका निभाते हैं? अथवा, अन्य भाषा में, श्रम के विभाजन में ये क्या भूमिका निभाते हैं?

ल.म. : दुर्खीम का विचार?

फ.प. : हाँ, निश्चित तौर पर दुर्खीम का प्रभाव है।

जब लोग अपनी भूमिकाओं के लिए मना कर देते हैं और उच्छृंखल हो जाते हैं तो उसका परिणाम क्या होता है? शायद उच्छृंखलता न सिर्फ हताशा से पैदा होती है अपितु यह शक्ति का स्त्रोत है।

अतः यह तर्क है : निर्धन लोग अक्सर बाहर रखे जाते हैं। यह बिल्कुल सही नहीं है। आम तौर पर वे सम्मिलित किये जाते हैं, परन्तु उन्हें दबाने और शोषित करने के लिए सम्मिलित किया जाता है। वे घरेलू श्रमिक या आया, गृह स्वास्थ्य सहायक और नौकरानियाँ; या चौकीदार फास्ट फूड़ एवं खुदरा कामगार, सफाई और कचरा एकत्रित करने वाले कर्मचारियों जैसी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पिछले कुछ दशकों में, इस प्रकार के रोजगार अंशकालिक, मांग आधारित एवं अनुबंध रोजगार के विस्तार के परिणामस्वरूप अधिक असुरक्षित हो गये हैं और वह भी तब, जब वेतन गिर रहे हैं।

लेकिन क्या ये कामगार वास्तव में शक्तिहीन हैं? न्यू योर्क, या लंदन या सैन फ्रांसिस्को या बोस्टन जैसे वैश्विक नगरों के घरेलू कामगारों के बारे में सोचिए। वे बच्चों का ध्यान रखते हैं, घरों की सफाई करते हैं, वे उस भोजन को शायद पकाते हैं जो समृद्ध, बेहतर शिक्षा प्राप्त महिलाएँ, जो अब पेशेवर या मध्य स्तर के प्रबंधन पर कार्यरत हैं, अन्यथा पकाती। यदि नौकरानियाँ और आयाएँ काम बंद कर दें, इसका असर तेजी से विकसित होती वित्तीय अर्थव्यवस्था को चलाने वाले वकील, अकाउटेंट, प्रबंधकों के सभी स्तरों पर होगा।

अन्य शब्दों में, घरेलू कामगारों में एक तरह की शक्ति है क्योंकि यदि वे काम पर नहीं आते हैं, उनके मालिक काम पर नहीं जा पायेंगे। घरेलू कामगारों का इन्कार आदान–प्रदान की व्यवस्था के गियर में रेत डालने जैसा होगा। मैं इस प्रकार के व्यवधान की बात कर रही हूँ, अन्यन्याश्रितता की जटिल व्यवस्था में सहयोग को वापिस लेना। यह वस्तुतः एक हड़ताल है। जब आप सहयोग वापिस लेते हैं, व्यवस्था ठप्प हो जाती है। यह पूरी तरह शायद न रूके परन्तु यह सुचारू रूप से कार्य नहीं करती है। कार्यों को बंद करने की क्षमता ऐतिहासिक रूप से तली के लोगों के लिए शक्ति का स्त्रोत रही है। अर्थात् अन्यन्योश्रित व्यवधानिक शक्ति।

ल.म. : निर्धन लोगों के आंदोलन में, आप और रिचर्ड क्लोवर्ड, कल्याण–कारी राज्य का निर्माण कैसे हुआ, सामाजिक सुधार कैसे होते हैं, की व्याख्या करने में सामूहिक बगावत की केन्द्रीय भूमिका का तर्क देते हैं। व्यवधान के आपके सिद्धान्त और अपने जीवन में सुधार लाने के लिए उपलब्ध शक्ति के संबंध में अभी जो घटित हो रहा है के बारे में आपका क्या आकलन है?

फ.प. : अधिकांश समय, लोग प्रतिनिधिक चुनावी प्रणाली को एक ऐसे क्षेत्र के रूप में देखते हैं, जहाँ उनकी उम्मीदें, यदि पूरी हो सकती हैं तो, पूर्ण हो सकती हैं। हालाँकि, मैं नहीं सोचती कि चुनावी राजनीति निचले स्तर के लोगों के लिए कामगार होती है। उत्तरोत्तर, मुझे लगता है संयुक्त अमरीका में चुनावी राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार और यूरोप में क्योंकि सुपरा–राष्ट्रीय संस्थाएँ अब राष्ट्रीय निर्णयों को रद्द करती हैं, के कारण अधिकांश लोगों के लिए यह कामगार नहीं होती हैं। तथापि, चुनावी व्यवस्था की अवहेलना नहीं की जा सकती है। चुनावी राजनीति पर होने वाले आंदोलनों की प्रतिध्वनि मोटे तौर पर उनकी सफलता या असफलता को तय करती है।

वास्तव में चुनावी प्रतिनिधित्व लोकतंत्र एक अद्भुत संस्थागत उपज है। यह सापेक्ष समानता के क्षेत्र का निर्माण करती है। एक ऐसा क्षेत्र जिसमें आबादी के बड़े हिस्से को कालिक चुनावों में मत डालने का अधिकार होता है और राज्य सरकार में मुख्य निर्णयकर्ता उन मतदाताओं के वोटों के चपेट में रहते हैं। अन्य शब्दों में, शासक अभिजन इन मतदाताओं के द्वारा कार्यालय और सत्ता के बाहर धकेले जा सकते हैं। चुनावी प्रतिनिधित्व लोकतंत्र संगठित होने के कुछ अधिकारों की गारण्टी भी देता है ताकि कई एकल मतदाताओं में सामूहिक आवाज विकसित करने की कुछ क्षमता हो।

चुनावी प्रतिनिधित्व लोकतंत्र के इन बुनियादी लक्षणों के कई प्रकार हैं और उनका महत्व है। लेकिन दरअसल यह आविष्कार सामाजिक जीवन के एक ऐसे क्षेत्र का निर्माण करता है जहाँ तकरीबन सभी के पास कोई ऐसा संसधान है जिस पर सबसे उपर वाले लोग निर्भर हैं और वह संसाधन सिद्धान्ततः अधिक या कम समानता से वितरित है।

>>

समस्या स्पष्ट है। समानता का यह क्षेत्र, बाकी समाज जहाँ असमानता चरम हैं, से कटा हुआ नहीं है। और ये असमानताएँ निस्सन्देह फैल जाती हैं और चुनावी क्षेत्रों में होने वाले को बिगाड़ती हैं। अमरीका में, सर्वोच्च न्यायालय के Citizens United निर्णय (जिसने चुनावों में संलग्न समूहों को मिलने वाले चंदों को सीमित करने वाले दशकों पुराने अमरीकी निर्णय को पलट दिया) और चुनावी अभियानों पर अब लाखों डालर खर्च होने के साथ अधिक खराब हो रहा है। इसके अलावा, यह चुनावी प्रतिनिधित्व व्यवस्था है और मतों का प्रतिनिधित्व में बदलना भी गंभीर रूप से विकृत है। ऐसा आंशिक रूप से अमरीकी संविधान द्वारा, लेकिन आज से ज्यादा नहीं, जब लाबिस्ट विधायी समितियों की चर्चाओं में बैठते हैं और नियमित रूप से राजनेताओं को खरीदते हैं के कारण होता है।

हालाँकि, अब मेरा तर्क भिन्न है। ध्यान रखिये कि चुनावी प्रतिनिधित्व लोकतंत्र के चमकीले विचार के केन्द्र में राजनैतिक अभिजन और मतदाताओं के समूह के मध्य निर्मित अन्योन्याश्रितता पर निर्भरता है।

जब आंदोलन होते हैं, कार्यकर्त्ताओं को यह निर्देश देने के लिए कई लोग तत्पर होते हैं कि उन्हें परेशानी खड़ी करने के बजाय सुधार उम्मीदवार को चुनने पर कार्य करना चाहिए, जबकि आंदोलनकर्ता अधिकतः चुनावी राजनीति को पूर्ण रूप से तिरस्कृत करते हैं। कोई भी पक्ष इस बात की सराहना नहीं करता कि चुनावी लोकतंत्र, वास्तविक दुनिया में अपने विकृत स्वरूप में भी, किन तरीकों से आंदोलनों के साथ अंतर्क्रिया करता है और कभी कभी आंदोलनों और व्यवधानिक प्रभाव जो आंदोलनों की शक्ति का स्त्रोत हैं, को प्रोत्साहित भी करता है।

राजनैतिक दल और उम्मीदवार संगठन बहुमत का निर्माण कर जीतने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने के लिए, उन्हें समूहों को विभाजित करने वाले मुद्दों और जो भावी वित्तीय समर्थकों को अलग करते हैं, को दबाना पडता है। जब आंदोलन उभरते हैं वे आम तौर पर ऐसे ही मुद्दों को उठाते हैं। आंदोलन समर्थकों के मतों की चाह रखने वाले राजनेता इन नई माँगों को हटाने का प्रयास करेंगे। वे कहेंगे, ''निस्सन्देह, मैं नस्लीय एकीकरण में विश्वास करता हूं। लेकिन इसे धीरे धीरे करना होगा।'' और, बेशक, धीरे धीरे का अर्थ अक्सर हमेशा या कभी नहीं होता है। यह तथ्य कि राजनेता माँगों को शांत करने का प्रयास करते हैं इस बात का संकेत है कि आंदोलन की आशा या हताशा की पुकार का चुनावी राजनीति में कुछ प्रभाव है। और यदि आंदोलन इस बढ़ावे से मजबूती और लोगों का साथ पा सकता है, जैसा कि नागरिक अधिकार आंदोलन ने इस सच्चाई से मजबूती पाई कि डेमोक्रेटिक पार्टी के मंच से आंदोलन की माँगों की गूंज सुनाई देने लगी, तो वे तीव्र होंगे।

जैसे ही आंदोलन गति पाते हैं, वे उन राजनैतिक उम्मीदवारों, जिन्हें चुनावी जीत के लिए मतदाताओं के बड़े झुण्ड के साथ चुनावी अभियान को धन देने वाले हितैशियों को किसी तरह एक साथ रखने की आवश्यकता है, के लिए अधिक धमकाने वाले हो जाते हैं। आंदोलनों की सफलता का कारण राजनेताओं द्वारा उन विभाजनों को दबाने हेतु छूट देना है।

ल.म. : व्यवधान, अन्योन्याश्रित शक्ति, चुनावी परिस्थितियाँ जिनके अंतर्गत आंदोलन सुधार अर्जित कर सकते हैं के बारे में आपके सिद्धान्त अमरीकी इतिहास के साथ गहन सम्बद्धता और आपके स्वयं के सक्रियतावाद, विशेषज्ञ तौर पर 1960 के दशक में न्यूयोर्क शहर में कल्याण अधिकार आंदोलन, से विकसित हुई हैं। ये सिद्धान्त अन्य देशों के राजनैतिक विकास क्रम की कितनी अच्छी तरह व्याख्या कर पाते हैं?

फ.प. : इनमें से कुछ अन्य देशों के लिये भी सही है, यद्यपि अमरीका की द्वि–दलीय व्यवस्था शायद इन आंदोलनों के प्रति शायद अतिसंवेदनशील है। ग्रीस में प्रतिरोधों ने PASOK गठबंधन को खण्डित करने में मदद की और कट्टरपंथी वामपंथी गठबंधन सिरिजा की विजय को संभव बनाया।

ल.म. : समकालीन चुनावी–आंदोलन गतिशीलता बराक ओबामा के चुनाव और इस बात की भी कि इससे प्रगतिशील सामाजिक सुधार पर क्या रूकावट आई हैं, की किस तरह व्याख्या करती है?

फ.प. : ओबामा को चुनावी समर्थन प्रमुख तौर पर युवाओं और अल्पसंख्यकों से प्राप्त हुआ। उनके कार्यभार लेने के समय वित्तीय संकट अपने सबसे बुरी अवस्था में था लेकिन आंदोलन किसी भी पैमाने पर तब तक उभरे नहीं थे।

सिंहावलोकन करने पर मुझे लगता है, ओबामा के राष्ट्रपति काल की तुलना सबसे अच्छे से 1929 में रिपब्लिकन राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर के कार्यकाल से की जा सकती है, जब स्टाक एक्सचेंज के ध्वस्त होने से ग्रेट डिप्रेशन की शुरूआत हुई। यद्यपि समर्थक ओबामा की तुलना हूवर के उत्तराधिकारी फ्रेंकलिन डेलानो रूजवेल्ट, न्यू डील के निर्माता, से करना चाहते हैं। 1930–31 में विरोध–प्रदर्शन हुए थे परन्तु वे काफी छोटे थे। लोगों को जो घटित हुआ है, का आकलन करने में और उसके लिये वे क्या कर सकते हैं, की तलाश करने में समय लगता है।

1930 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में, ग्रेट डिप्रेशन के कई सालों और हूवर के बारम्बार इस घोषणा के कि बहाली होने वाली है के द्वारा चीजों को इकट्ठा रखने की कोशिशों के कई सालों बाद बड़े प्रदर्शन उभरने लगे।

इसी तरह 2008 में : यह सही है कि Move-on folks जैसे युवा सक्रियकर्त्ता अभियान के लिए कार्य कर रहे थे। परन्तु वे विरोध आंदोलन नहीं थे। विस्कोन्सिन में छात्र एवं श्रमिक प्रदर्शन, फिर कब्जा, फाइट फॉर फिफ्टीन और हैण्डस अप, डोन्ट शूट, सभी को विकसित होने में समय लगा। निस्सन्देह, वे यदि 2008 में घटित हुए होते, मुझे लगता है, ओबामा एक बेहतर राष्ट्रपति होते। अब 2015 में, ये आंदोलन, जिसमें निम्न–मजदूरी कार्य और पुलिस कार्यवाही पर प्रतिरोध सम्मिलित हैं, वास्तव में तीव्र हो रहे हैं। अमरीका में, हमारी उम्मीद है कि आंदोलन फलेंगे फूलेंगे और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि क्लिंटन राष्ट्रपति काल इनकी उपेक्षा नहीं कर पायेगा। ■

फ्रांसेज फाक्स पिवेन से पत्र व्यवहार हेतु पता <fpiven@hotmail.com>
लारेन मिन्निट से पत्र व्यवहार हेतु पता <lminnite@gmail.com>

> इस्लामिक स्टेट की अपील

फ्रास्वाँ बुरगट के साथ साक्षात्कार

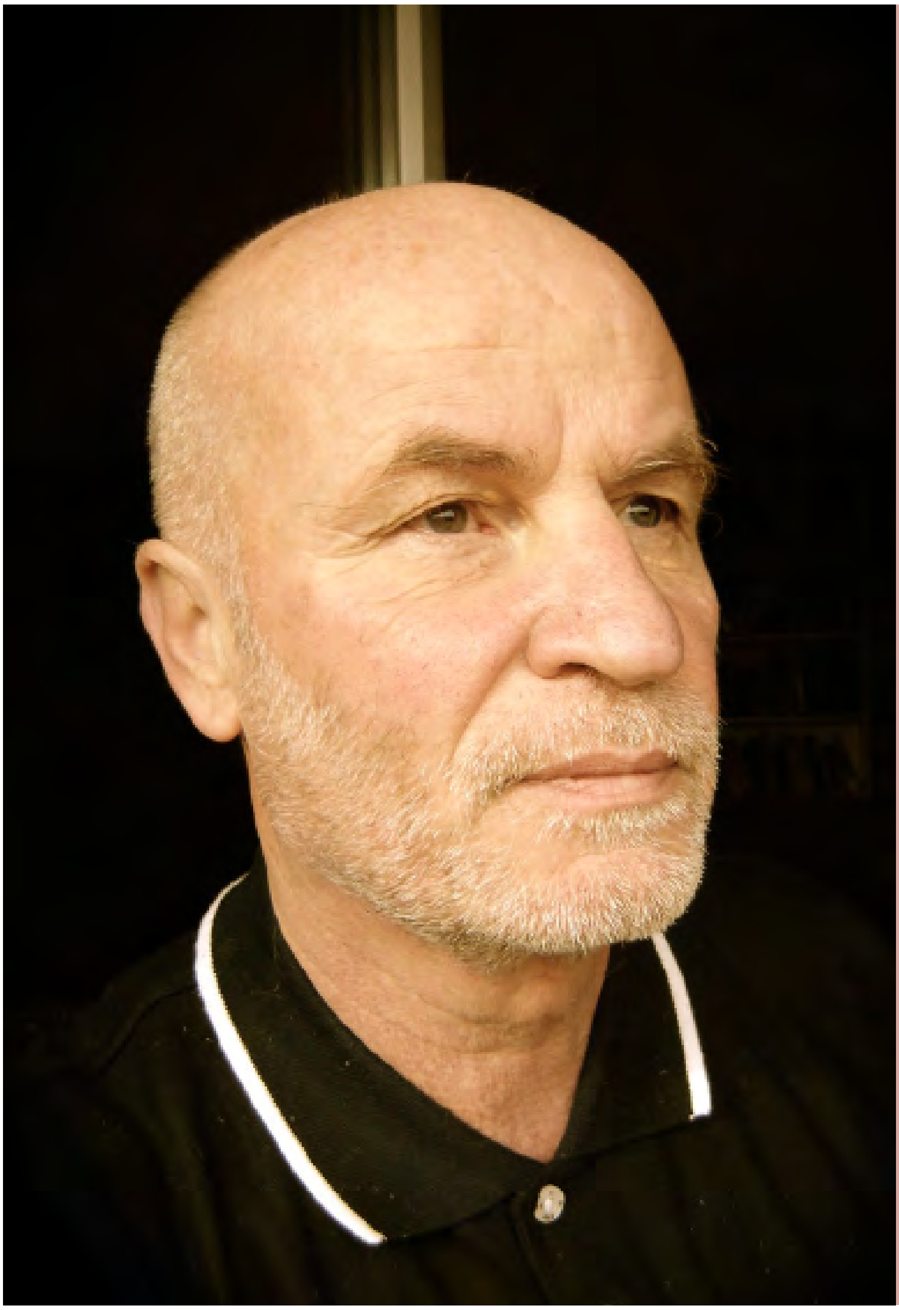

फ्रास्वाँ बुरगट एक राजनैतिक समाजशास्त्री और फ्रेंच Centre national de la recherche scientifique (CNRS) में वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता है। इन्होंने अपना पूरा कैरियर अरब दुनिया की राजनीतिक व्यवस्था और नागरिक समाजों के विश्लेषण को समर्पित किया है। ये उन दुर्लभ विद्वानों में से एक हैं जो इस्लामी आंदोलनों को रूमानियत या तौहीन करे बिना समझने में सक्षम हैं और जो बहादुरी से मुख्यधारा की व्याख्याओं का सामना करते हैं। वर्तमान में वे यूरोपीयन रिसर्च काउंसिल के प्रोजेक्ट ''अरब दुनिया में जब सत्तावाद विफल होता है'' के मुख्य अन्वेषक हैं। उनका नवीनतम कृत्य Pas de printemps pour la Syrie : Les cles pour comprende les acteurs et les defis de la crise, 2011-2013 (सीरिया के लिए कोई बसन्त नहीं: संकट के सक्रियक और चुनौतियों को समझने की कुंजी, 2011–2013) बेरूत के अमरीकी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक और आई. एस. ए. के उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय संघ, सारी हनाफी ने उनका साक्षात्कार लिया।

François Burgat.

> >

सितम्बर 2014 से इस्लामिक स्टेट ;ैप्द्ध का दावा कि वह ''चिरस्थायी और विस्तारशील'' है, दुर्भाग्य से, अंतर्राष्ट्रीय हवाई हमलों के बावजूद, इराक और सीरिया में वास्तविकता को दर्शाता है। इस विस्तार का अर्थ आवश्यक रूप से शक्ति का धनीकरण नहीं है। जिस ''सुन्नीलैंड'' को IS निर्माण करना चाहती हैं वह न सिर्फ इस क्षेत्र में, बल्कि कब्जा की गई आबादी के क्षेत्रों में भी अभी विवादास्पद है। 2014 के उत्तरार्ध में, CIA के आकलन के अनुसार, 20,000 से 31,500 लड़ाके इराक और सीरिया में इस्लामिक स्टेट की सम्पत्ति की रक्षा कर रहे हैं, परन्तु अन्य अनुमान इन आंकड़ों को 200,000 लड़ाकों तक लगाते हैं। इस विस्तार का सम्बन्ध इस क्षेत्र में विफल दमनकारी राज्यों के साथ साथ वैचारिक मतभेद के संदर्भों से होना चाहिए। निस्सन्देह आई एस और इसके फ्रेंचाइजी विभिन्न देशों में कार्य कर, एक वैश्विक प्रघटना का निर्माण करते हैं, इतना अधिक कि 1500 फ्रेंच नागरिकों सहित 6000 से भी अधिक यूरोपीय सीरिया में लड़ने के लिए गये हैं। इन यूरोपीय सैनिकों में से कई मुस्लिम मूल के हैं परन्तु कुछ ने इस्लाम में धर्म परिवर्तन किया है। नीचे दिये गये साक्षात्कार में, फ्रास्वाँ बुरागट, यूरोपीय नागरिकों द्वारा आई एस में सम्मिलित होने की प्रेरणाओं पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।

स.ह. : आई एस ने सीमाओं को खत्म कर, साम्राज्य निर्माण इत्यादि से इस क्षेत्र में नई राजनैतिक कल्पना का संचार किया है। आपके विचार में क्या यह युवाओं को आकर्षित करता है?

फ.ब. : हाँ, निश्चित रूप से। यद्यपि आकर्षण के स्त्रोत विपुल और विविध हैं, तथापि हम सबसे आम को इंगित कर सकते हैं। अभिप्रेरणाओं की विस्तृत श्रेणी को स्पष्ट करने के लिए, मैं दो श्रेणियों का सुझाव देता हूँ : ''नकरात्मक'' अभिप्रेरणा जिसमें अपने मूल स्थान जैसे फ्रॉस, को खारिज करना सम्मिलित हैं और ''सकारात्मक'' जो व्यक्तियों को इस्लामिक स्टेट की दुनिया में आकृष्ट करती है।

इन सकारात्मक और नकारात्मक अभिप्रेरणाओं को आगे अन्वेषित करने के पहले, मुझे आई एस की अपील की वैकल्पिक व्याख्याओं पर गौर करना होगा। ये व्याख्याएँ ''वैचारिक'' या ''धार्मिक'' चरों से निकलती हैं और सारा दोष ''कट्टरपंथी इस्लाम'' पर मढ़ देती है। यह कथित रूप से तब होता है जब सईद कुत्ब के एक पृष्ठ को पढ़कर या किसी उपनगर में दूर कहीं किसी कट्टर इमाम से सामना होने या अक्सर वेब पर रहने से युवा ''दूषित'' हो जाते हैं।

मेरे विचार में, यह (इस्लामी) शब्दावली कट्टरता की प्रक्रिया को तीव्र कर सकती है परन्तु यह व्यक्तिगत रूपांतरण को नहीं समझा सकती है। कट्टरता के विश्व इतिहास ने दर्शाया है कि विद्रोहियों की शब्दावली को उनके विद्रोह की मूल उत्पत्ति के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। धर्म या धार्मिक सिद्धान्तों के बावजूद, विद्रोह करने वाले हमेशा धार्मिक या अपवित्र प्रतीकात्मक संसाधन ढूँढ लेते है जिनके द्वारा वे अपने कर्मो को व्यक्त और उनका औचित्य सिद्ध कर सकते हैं। पश्चिम में जिहादी हिंसा की ''इस्लामवादी'' विवेचनाएँ। लोकप्रिय हैं क्योंकि इस्लामी आस्था में अपराध बोध को स्वीकारना, मानने वालों (जैसे गैर–मुसलमान) को किसी भी उत्तरदायित्व से मुक्त करता है। इन तर्कों के पीछे अक्सर एक ''पद्धतीय भ्रम'' होता है जो यह सुझाता है कि जिहादी ने ''सही सुरा'' को नहीं पढ़ा या फिर उसे अच्छी तरह से नहीं पढ़ा या जो उन्होंने पढ़ा उसे समझा नहीं। इन सब का मतलब है कि इस्लामी दुनिया और अधिक व्यापक स्तर पर विश्व में कट्टरवाद के विनाशकारी प्रभावों को कुछ लाखों मुसलमानों को सही धार्मिक शिक्षा प्रदान कर दूर किया जा सकता है। मुझे इस तरह के दृष्टिकोण की सीमाएँ बताने की आवश्यकता नहीं है।

स. ह. : चलिये हम आपके द्वारा प्रारम्भ में उल्लेखित नकारात्मक अभिप्रेरणाओं की तरफ लौटते हैं।

फ.ब. : नकारात्मक अभिप्रेरणाएँ जिहादियों द्वारा वैश्विक स्तर पर नकारे जाने की भावनाओं जो उनके द्वारा, जिस समाज में वे पले–बढ़े, की वैश्विक स्तर पर खारिज करने की मंशा से भड़कती है, पर ध्यान केन्द्रित करने वाली व्याख्याएँ हैं। इन जिहादियों में, अल्पसंख्यक अक्सर सामाजिक–आर्थिक विफलता, या वयस्क जीवन के साथ अनुकूलन से पीड़ित होते हैं, जो अक्सर उनके उत्तरी अफ्रीकी या यूरोपीय देशों में ''इस्लामी'' मूल के होने की चुनौतियों से सम्बन्धित है।

सरल शब्दों में कई फ्रेंच जिहादी व्यक्तिगत या सामूहिक दोषारोपणः असमान शिक्षा, रोजगार के असमान अवसर, पुलिस या कानून द्वारा भेदभाव इत्यादि के प्रति राजनैतिक प्रतिक्रिया के रूप में सीरिया गये। हालांकि, और इस बारे में हम कम बात करते हैं–ये असमानताएँ दो स्तरों पर राजनैतिक प्रतिनिधित्व की कमी को दर्शाती हैं। जब हम आंकड़ों को देखते हैं तो यह स्पष्ट है कि चुनावी प्रतिनिधित्व की व्यवस्था कमतर है लेकिन इसके साथ अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, विशेष रूप से मुख्यधारा की मीडिया पर, व्यवस्थागत हानिकारक निषेध भी हैं। इसके अतिरिक्त, ये पूर्वाग्रह मीडिया द्वारा ''अधिकारिक'' और अत्यधिक अप्रतिनिधिपूर्ण इस्लामी ''हस्तियों'' को प्रमुखता देने से तीव्र होते हैं।

सांघातिक राजनैतिक वर्चस्व की ये दो परतें औपनिवेशिक काल में प्रारम्भ हुई। पहले वशीभूत आबादी को चुप कराया गया और फिर उन्होंने छद्म प्रतिनिधियों, जिन्होंने औपनिवेशिक प्रभुत्व की शर्तों को स्वीकार किया था, के माध्यम से राष्ट्रीय सम्बद्धता की भ्रामक भावना को हासिल किया। दो दशकों पूर्व, 1995 में अल्जीरिया गृह युद्ध के समय, मैंने युवा फ्रेंच मुसलमानों का साक्षात्कार किया और उन्होंने ऐसे भेदभावपूर्ण माहौल में सह–अस्तित्व की कठिनाइयों को इस प्रकार कहाः जब फ्रेंच टेलीविजन अलजिरिया, फिलीस्तीन या इस्लाम की बात करता है, हमें चैनल बदलने पर विवश होना पड़ता है। और, महोदय, मेरा विश्वास करें, हम इतनी बार चैनल बदलते हैं कि अक्सर हमारी उंगलियों में दर्द होता है। अप्रवासियों और उनके वंशजों के प्रति योजनाबद्ध घृणा कई प्रकार के स्पष्ट आक्रामक स्वरूप ले सकती हैं जैसे थूकना और बुर्का पहनने के कारण बहनों और माताओं के प्रति अन्य प्रकार की आक्रामकता।

स.ह. : क्या आप इस्लामिक स्टेट की सकारात्मक अपील के बारे में और कुछ कह सकते हैं?

फ.ब. : हाँ, अपनी मानवीय आकांक्षाओं से इंकार करने वाली दुनिया से अलग होने की नागरिकों की जरूरत आवश्यक रूप से कई सकारात्मक अभिप्रेरणाओं का साथ देती है। आर्थिक और सामाजिक संदर्भ दोनों में पूर्ण रूप से एकीकृत मुसलमानों के लिये भी, कुछ अभिप्रेरणाएँ हैं जो कभी कभी नकारात्मक अभिप्रेरणाओं में वृद्धि या सिर्फ उन्हें बदल देती हैं, जो पहले सीरियाई संघर्ष में और फिर उसके अंतर्राष्ट्रीय परिणामों में कट्टरपंथी भागीदारी को ट्रिगर करता है। ऐतिहासिक रूप से जिहादी भागीदारी पारदेशीय वैचारिकी या साम्प्रदायिक एकजुटता से प्रारम्भ होती है। सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से कई समर्थक अपने धार्मिक बंधुओं को मदद करने की इच्छा का हवाला देते हैं। उनके विचार से जो कुछ हद तक समझा जा सकता है–ये लोग पश्चिम द्वारा परित्यक्त किये गये हैं और असाद के हेलीकॉप्टरों से गिराये गये विस्फोटकों के बैरल से मौत के घाट उतार दिये गये हैं। यूरोपीय इतिहास के दृष्टिकोण से, ये पारदेशीय और इंफ्रा राज्य एकजुटताएँ अद्वितीय नहीं हैं; 1936 में स्पेनिश रिपब्लिकन के समर्थन में व्यक्त की गई एकजुटता पर विचार करें जिसने ''अंतर्राष्ट्रीय ब्रिगेड़'' के गठन

>>

का समर्थन किया और जिसमें कुछ मशहूर फ्रेंच नागरिक सम्मिलित थे। या फ्रांस निवासी रेगिस डेब्रे (राष्ट्रपति फ्रास्वां मितराँ के पूर्व विशेष सलाहकार), जो बोलिविया के गुरिल्ला आंदोलन में शामिल हो गये पर विचार करें। लेबनान के गृह युद्ध में फलांगिस्ट (Falangists) के साथ साथ लड़ने वाले कई सैकड़ों ईसाई नागरिकों, जिनमें से कई फ्रेंच थे, के बारे में हम बहुत कम सुनते हैं। हम इजराइली सेना में भर्ती होने वाले फ्रेंच नागरिकों पर भी गौर कर सकते हैं जबकि इजराइली सेना कब्जा किये क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय कानून के बाहर कार्य करती है।

तथापि, किसी भी प्रकार की मानवतावादी एकजुटता को व्यक्त करने के आगे, मुझे लगता है कि आई एस अपनी अपील इस तथ्य से प्राप्त करता है कि यह एक स्वप्न, एक तरह के स्वतन्त्र ''सुन्नीलैंड'' का प्रतिनिधित्व करता है जो खुमैनी के इरान द्वारा शियाओं को प्रदत्त एक स्थान (कम से कम आई एस ऐसा सोचती है) जो मुसलमानों को अपने धर्म को अपनी व्याख्याओं के अनुसार जीने का अवसर देता है, जिसमें उनके मूल देश में पाई जाने वाली बाधाएँ न हो, के समान है। इसके अलावा, यह वह दुनिया है जहाँ इस्लामोफोबिया के प्रतीकों की आवश्यकता पड़ने पर हिंसक तरीकों से रक्षा की जाती है और इससे भी अधिक प्रासंगिक, वे सैन्य और सांकेतिक हिंसा, चाहे बम हो या कार्टून, से समान स्तर पर जवाबी कार्यवाही कर सकते हैं।

अधिकारिक वर्णन इस व्यापक संदर्भ को छोड़ देते हैं। 7 जनवरी को पेरिस में होने वाले हमलों की व्याख्या ''आतंकवादियों'' की कलाशनिकोव द्वारा मारे जाने वाले पीड़ितों तक बहुत संकीर्णता से सीमित है। सरकारों और मीडिया ने इजराइली F-16, फ्रेंच रफेल लडाकू जेट विमान या अमरीकी ड्रोन द्वारा मारे गये लोगों को अनदेखा कर दिया। इसलिए हमें ''जूम आउट'' करना चाहिए और इस टकराव के ''व्यापक'' स्थानिक और लौकिक आयामों पर विचारना चाहिए। अतः नकारात्मक भावनाएँ कैसे कट्टरवाद को प्रेरित करती है समझने के लिए हमें इस गतिकी को अंतर्राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्थित करना होगा। तभी हम यह बूझ पायेंगे कि वे कैसे औपनिवेशिक काल तक जाने वाली, गहन राजनैतिक विभंजन का अनुकरण करते हैं। हाल ही में, ये फ्रेंच एकपक्षीय नीतियों, जो प्रत्यक्ष रूप में या इजराइल या संयुक्त अमेरीका जैसे तीसरे पक्ष के साथ गठजोड़ के माध्यम से माली, या इराक, गाजा पट्टी या यमन देशों में पुनः खोल दिये गये हैं।

पूर्व के इन संघर्षों और फतह, जो तथापि समाजशास्त्रीय चरों पर ध्यान केन्द्रित करने वाले अधिकांश ''विश्लेषणों'' में व्यवस्थित रूप से अनुपस्थित है, के बिना पेरिस में कुछ नहीं हो सकता था। मैं यहाँ समाप्त करना चाहूँगा : 9/11 हमले के पन्द्रह वर्षों बाद, समाजशास्त्र ने हमें इन हमलों के बारे में क्या सिखाया? मैं कहूँगा..... लगभग कुछ नहीं। ■

फ्रांस्वा बुरगट से पत्र व्यवहार हेतु पता <francoisburgat73@gmail.com>
सारी हनाफी से पत्र व्यवहार हेतु पता <sh41@aub.edu.lb>

> समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र का विचित्र इतिहास

जेन ब्रेमन, एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय, नीदरलैंड

डच न्यू गिनी में सरकारी मानविज्ञानी डा जे वी दे ब्रुयन। लाईडन, एथनालोजी के राष्ट्रीय संग्रहालय, नीदरलैंड से फोटो

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में, नीदरलैंड में सामाजिक विज्ञानों के संस्थापक ने समाजशास्त्र और नृविज्ञान के मध्य एक रेखा खींच दी। जहाँ नृविज्ञान ''कम उन्नत'' लोगों का अध्ययन करेगा, समाजशास्त्र ''अधिक उन्नत'' समाजों, जो सभी पश्चिम में स्थित थे, के सामाजिक संगठनों पर ध्यान केन्द्रित करेगा। यद्यपि, यह स्पष्ट विभाजन, जल्द ही बहुत सरल साबित हुआ।

सत्रहवीं सदी से ही नीदरलैंड ने एक औपनिवेशिक साम्राज्य खड़ा कर लिया था; विदेशी क्षेत्रों पर राज करने के लिए उनकी आबादी के सामाजिक ढाँचें और संस्कृति का ज्ञान जरूरी था। ईस्ट इंडीज जैसे वृहद–स्तरीय, बहु–स्तृत और साक्षर समाजों में रहने वाले आदिवासी

> >

(एक नाम जो हमारे आदिम पूर्वजों की भांति अपने दूरस्थ और दुर्ग्रह निवास स्थानों में घूमन्तू लघु एवं राज्य विहीन आदिम झुण्डों के लिये आरक्षित था) की बजाय मूल निवासी कहलाए। वह प्रारंभिक विचार कि उपनिवेश मेट्रोपोल के लाभ के लिए हैं, जिसने किसी भी प्रकार के अधिशेष की निकासी को न्यायोचित ठहराया, को पुनः परिभाषित करना पड़ा। उपनिवेशवाद सभ्य बनाने के मिशन के रूप में चित्रित किया जाने लगा।

बीसवीं सदी के प्रारंभ में, विदेशी शासन संरक्षक, उपनिवेशों को प्रगति करने में मदद करने के रूप में, न्यायोचित माना गया। विकास (mise en valeur) की इस थीसिस ने, जहाँ अनुपस्थित है, वहाँ मूल्य संवर्धन का वादा किया। उच्च औपनिवेशिक समाजशास्त्री की भूमिका औपनिवेशिक अफ्रीका में ब्रिटिश सरकारों के मानव विज्ञानी के समान हो गई : अधिकारियों को नीतियों के प्रभावों पर, या फिर इस्लामी आंदोलन के बढ़ते उत्साह पर कैसे अंकुश लगाना पर सलाह की पेशकश करना, सामाजिक विद्रोहों के पीछे कौन है का कैसे पता लगाया जाये या, वह प्रश्न जिसने औपनिवेशी नीति निर्माताओं को परेशान कर रखा था कि जावा किसानों में पूंजीवादकी आत्मा को कैसे अंगीकार करवाया जाए। सभ्य बनाने के मिशन का दावा था कि ''जहाँ मूल निवासी अब हैं, हम भी कभी वहाँ थे; जो हम अब है, वे आगे अवश्य बनेंगे।'' अनुकरणात्मक रूपांतरण की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए, औपिनेविशिक जन समुदाय को अपने अतीत एवं पहचान से नाता तोड़ना होगा और बिना अतीत वाले लोगों के रूप में स्वयं को पुनर्निर्मित करना होगा।

बीसवीं सदी के मध्य में स्वतन्त्रता संग्राम द्वारा औपनिवेशिक शासन की समाप्ति से क्या श्वेत लोगों का बोझ दूर हो गया? दूरस्थ क्षेत्रों की देशी प्रथाओं और ज्ञान के बारे में एकत्रित किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक ज्ञान को व्यर्थ न जाने देने का तर्क देते हुए डच राजनेताओं ने कुछ विश्वविद्यालयों–विशेष रूप से लाइडन और एम्स्टर्डम–को पूर्व उपनिवेशों के जटिल समाजों का अध्ययन करने वाली, जिसे ''गैर–पश्चिमी'' समाजशास्त्र कहा गया, चेयर और पाठ्यक्रमों की स्थापना के लिए अधिकृत किया गया। यह एक विचित्र लेबल था, चूंकि इसने संक्रमणकालीन के रूप में वर्णित एक मार्ग द्वारा, ये समाज जो नहीं हैं परन्तु क्या बन सकते हैं, की घोषणा की। एक पृथक विषय में रूप में देखे जाने के कारण ''गैर–पश्चिमी समाजशास्त्र'' एक तरफ नृविज्ञान (पपुआ न्यूगिनी और सूरीनाम जैसे स्थानों में आदिम समाज को समर्पित) और दूसरी तरफ समाजशास्त्र (पश्चिमी) के मध्य रखा गया। नीदरलैंड के लिए विशिष्ट, यह वेबर, टॉनिज या दुर्खीम जैसे विचारकों द्वारा अग्रेषित ज्ञान के सार्वभौमिक एजेण्डा को नकार, वास्तव में प्रांतीयता की अभिव्यक्ति था।

इस पश्चिम केन्द्रित पूर्वाग्रह ने समाजशास्त्र के पेशेवरों को तीसरे विश्व समझे जाने वाले देशों को नजरअंदार करने की अनुमति दी: वे वैश्विक उत्तर में ''आधुनिक'' समाज का अध्ययन करने के लिए अपने शिल्प को सीमित कर सकते थे। यद्यपि, सभ्य बनाने का मिशन उत्तर औपनिवेशिक युग में भी कायम रहा और वह ''पिछड़ें'' देशों की ''अग्रणी'' राष्ट्रों तक पहुँचने की कोशिशों में मदद करने की औपचारिक प्रतिबद्धता में व्यक्त हुआ। ''गैर–पश्चिमी'' जैसा

1906 में न्यू गिनी के लिए पहले अभियान में एक डच पुरूष पापुआ महिला से हाथ मिलाना चाहता है और महिला भौंचक्की देख रही है। एथनालोजी के राष्ट्रीय संग्रहालय, लाईडन, नीदरलैंड से फोटो

>>

विचित्र पदनाम, जिसने विविध लोगों और संस्कृतियों को एक शीर्षक के अन्तर्गत रखा, को अब अधिक आकर्षक घोषणा–पत्र जिसका उद्देश्य वैश्विक दक्षिण, जहाँ वह उभरने में असफल हुआ था, में विकास को प्रोत्साहित करना था और जिसने विकास के समाजशास्त्र को जन्म दिया। यह समाजशास्त्र, बाकी दुनिया, जहाँ मानवजाति के अधिकांश लोगों का घर है, कैसे कृषि–ग्रामीण से औद्योगिक नगरीय जीवन पद्धति में उद्विकासीय समझे जाने वाले रास्ते में चलेगी, का चित्रण करने में कार्य करेगा।

इस बीच, नृविज्ञान का ज्ञानक्षेत्र भी परिवर्तित हुआ है। ''हमारे जीवित पूर्वज'' अब नहीं थे। प्रगति के मार्च के खुलने से यदि आस्ट्रेलिया, एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के दूरस्थ इलाकों में उनका सफाया नहीं हुआ तो वे बड़े राज्य निर्माण में समा गये और जिस स्वायत्तता को उन्होंने बनाये रखने की कोशिश की थी, उसे खो दिया। लेकिन समाजशास्त्र से भिन्न शोध पद्धति अपना कर, मानवविज्ञानी, जिसे वे क्षेत्र कार्य कहते थे, को काम में लेने के लिए नई साइट्स की खोज कर आगे बढ़ते रहे। इस प्रक्रिया के दौरान वे परीक्षण के अन्तर्गत आने वाले लोगों का साथ माँग कर, उनके निकट आ गये और इस प्रकार वे लोग क्या कर रहे थे, से परिचित हो गये।

लेकिन समाजशास्त्र के मध्य की विभाजन की रेखा को कैसे खींचे? एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय, जहाँ मैंने 1950 के दशक के उत्तरार्ध में ऐशियाई अध्ययन को चुना था, के प्रोफेसर ने प्रस्ताव दिया कि नृविज्ञान को परम्परा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जबकि आधुनिकता समाजशास्त्र का पूर्वाधिकार होगा। विभाजन की यह रेखा प्रारम्भ से ही असफल रही क्योंकि विभाजन के दोनों तरफ के विशिष्ट लक्षणों का स्पष्ट रूप से पता लगाना असंभव था। दोनों विषयों का ध्यान परिवर्तन की प्रक्रियाएँ क्यों, कैसे और किस परिणाम के साथ विकसित होती हैं, पर था। वे दोनों पारंपरिक से आधुनिक के अन्तर को मूर्त रूप देने के बजाय अतीत और वर्तमान के मध्य सम्बन्धों की चर्चा करते हैं।

1987 में अपने अल्मा मेटर में जब मुझे तुलनात्मक समाजशास्त्र का प्रोफेसर नामित किया गया–मैं ''गैर–पश्चिमी'' या ''विकास अध्ययन'' नाम के तहत कोई चेयर नहीं चाहता था–मैंने और एक वरिष्ठ सहयोगी ने मिल कर समाजशास्त्र, नृविज्ञान और सामाजिक इतिहास को एक साथ लाने के उद्देश्य से पी.एच.ड़ी कार्यक्रम के साथ एम्स्टर्डम स्कूल फॉर सोशल साईन्स रिसर्च की स्थापना की। इसका उद्देश्य वैश्वीकरण की गतिशीलता पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से शोध को प्रोत्साहन देना था। यद्यपि हमारे अकादमिक कारनामें काफी सफल थे, हम राष्ट्रीय प्रायोजन एजेन्सी या एम्सर्टम विश्वविद्यालया के बोर्ड को इस प्रोग्राम को पर्याप्त धन उपलब्ध कराने में असमर्थ रहे। इस महत्वपूर्ण समर्थन के अभाव के कारण, ASSR को चरणबद्ध तरीके से बंद कर एम्स्टर्डम इंस्टीट्यूट फॉर सोशनल साईन्स रिसर्च के रूप में पुनर्गठित किया गया। हमारे संकाय के शैक्षणिक सदस्य अपनी स्वयं की शोध प्रोफाईल के साथ दो विभाग, समाजशास्त्र और नृविज्ञान में बाँटे गये।

क्या यह पारम्परिक जोड़ी फिर अलग हो गई है? मोटे तौर पर हाँ, चूंकि उनका क्रमशः ध्यान पश्चिम और अन्य पर है जो पहले के दिनों के ''अधिक'' और ''कम'' विकसित का पर्याय थे। विभाजन पर लौटना कई आधारों पर अप्रिय है परन्तु मुख्य रूप से इसलिए कि अग्रणी और देर से आने वालों के मध्य सामाजिक और भू–राजनैतिक अन्तर आजकल पहले से भी कम समझ में आता है। परिवर्तन का पवित्र प्रक्षेपपथ जो यह स्पष्ट करता है कि कैसे कम विकसित देश विकसित देशों तक पहुँचेंगे, अब धूमिल हो गया है। अन्य पश्चिम का कई तरीकों में अनुकरण नहीं करता है और कौन जानता है, परिवर्तन की दिशा और गति दूसरे दौर की तरह साबित हो सकती है। ■

जॅन ब्रेमन से पत्र व्यवहार हेतु पता <J.C.Breman@uva.nl>

> जनोन्मुखी समाजशास्त्र की आस्ट्रियाई विरासत

रूडोल्फ रिच्तर, वियना विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया एवं तृतीय आई एस ए फोरम समाजशास्त्र, वियना 2016 की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष

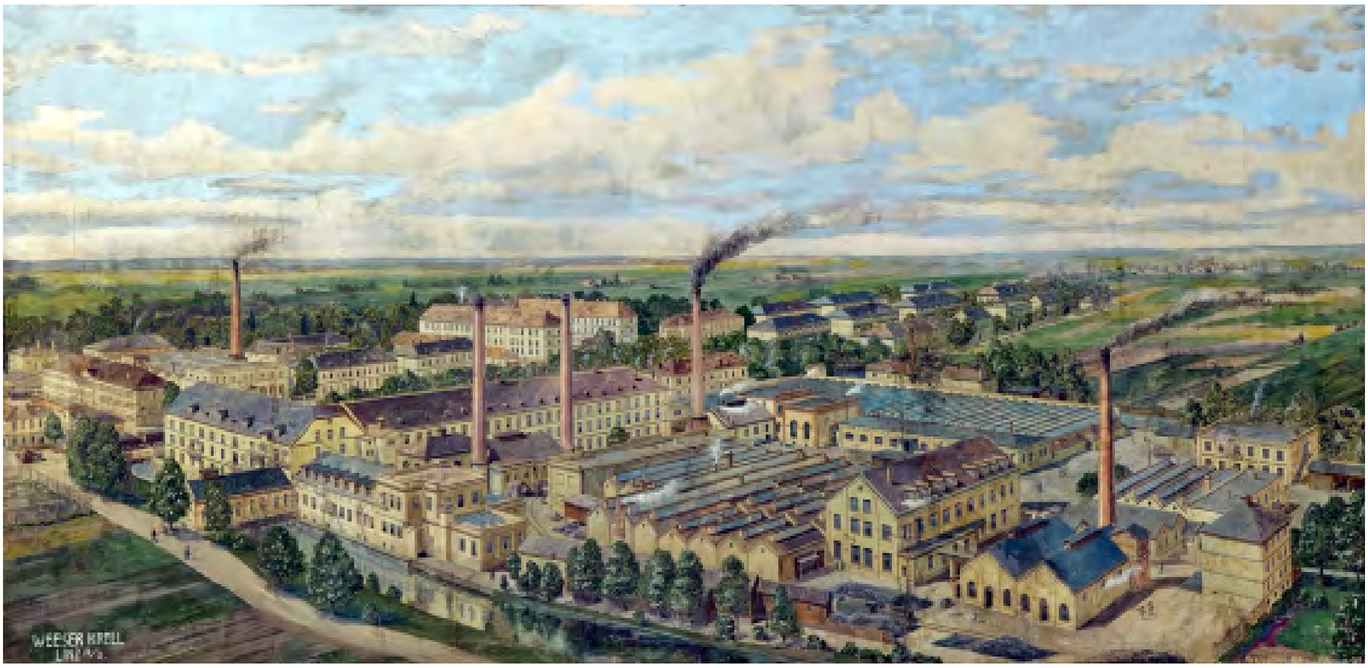

मेरियनथाल में कपड़ा कारखाना, 1914। आस्ट्रिया में समाजशास्त्र के इतिहास के लिए अभिलेखागार ग्राज विश्वविद्यालय

फोरम अध्यक्ष मार्कस शुल्ज द्वारा तैयार की गई तृतीय फोरम की थीम, ''जो भविष्य हम चाहते हैं : वैश्विक समाजशास्त्र और बेहतर दुनिया के लिए संघर्ष'' है। फोरम की लोकेशन इस थीम के लिए उपयुक्त स्थान है : आस्ट्रियाई समाजशास्त्र ने लंबे समय से सामाजिक प्रतिबद्धता को वैज्ञानिक प्रभाव से जोड़ने की कोशिकश की है।

1920 के दशक द्वारा प्रथम विश्व युद्ध के दर्द को कम कर देने के बाद 1930 के दशक में मंदी ने आस्ट्रियाई समाज पर प्रहार किया। मेरी जहोदा और पॉल लजारस्फेल्ड ने सांख्यिकीविद हन्स जेसल के साथ विख्यात ''मेरियनथल अध्ययन'' किया जिसने मेरियनथल गांव में एक फैक्ट्री के बंद होने जाने के परिणामस्वरूप होने वाली व्यापक बेरोजगारी के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के प्रथम जर्मन संस्करण की प्रस्तावना में मेरी जहोदा ने शोधकर्त्ताओं के इरादों को समझाया : पहला, मेरियनथल में बेरोजगारी की समस्या का समाधान ढूंढने में मदद करना और दूसरा, एक सामाजिक परिस्थिति का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण प्रस्तुत करना और यह इसी क्रम में था। यह नीयत अभी भी आस्ट्रियन समाजशास्त्र को मार्ग दिखलाती है : सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रयास।

बाद के संस्करण के प्राक्कथन में पॉल लजारसफेल्ड ने उल्लेख किया कि इसके अतिरिक्त शोधकर्ताओं ने मेरियनथल अध्ययन के नई पद्धति को विकसित करने का भी प्रयास किया था : उन्होंने गांव वालों के चलने की गति को मापा, समय पत्रक वितरित किये, विद्यार्थियों को अपनी इच्छाओं पर निबन्ध लिखने को कहा, पुस्तकालय से जारी की गई पुस्तकों के सांख्यिकीय आंकड़ों को काम में लिया और परिवारों को अपने भोजन का रिकार्ड रखने को कहा।

फोरम की थीम के संदर्भ में, यह उल्लेखनीय है कि मेरियनथल शोधकर्ताओं ने भविष्य के बारे में कोई मूल्यांकन नहीं किया, न ही उन्होंने वैकल्पिक भविष्य गढ़ा। परन्तु अध्ययन ''एक बेहतर दुनिया के लिए कैसे संघर्ष'' किया जाये का एक नमूना पेश करता है : यह जिस सामाजिक समस्या का समाधान करना है की स्पष्ट समझ प्रदान करता है। बेरोजगारी का व्यक्तियों के साथ समुदाय पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शा, अध्ययन ने दैनिक जीवन के प्रतिमानों की तबाही और स्मरपरण के पथ को विस्तृत रूप से बताया। इस सामाजिक मुद्दे के विस्तृत ब्यौरे ने नीति निर्माताओं की जिम्मेदारी को अचूक बताया।

वियना का वैज्ञानिक समुदाय एक अन्य समूह, द वियना सर्कल द्वारा भी तराशा गया। रूडोल्फ कारनाप और तार्किक प्रत्यक्षवाद के अन्य समर्थक, जिसमें सांख्यिकीविद् ऑटो न्यूरथ भी सम्मिलित हैं, जनता में समाजशास्त्रीय ज्ञान के प्रसार में प्रभावी थे। यह आस्ट्रियाई समाजशास्त्र में आम पैटर्न है। कलाकार गर्ट अरन्तज के साथ, न्यूरथ

>>

मेरी जहोदा, हान्स जेयसल, पॉल लजारसफेल्ड और लोटे शेंक डेन्जियर को स्मरण करते हुए। आस्ट्रिया में समाजशास्त्र के इतिहास के लिए अभिलेखागार ग्राज विश्वविद्यालय

ने चित्रमय सांख्यिकी ईजाद की और वियना में जनता में सामाजिक आंकड़ों का प्रसार करने हेतु Gesellschafts-und wirtschafts museum (समाज और अर्थव्यवस्था का संग्रहालय) की स्थापना की। यह संग्रहालय आज भी विद्यमान है।

हालांकि, वियना सर्कल का तार्किक प्रत्यक्षवाद आस्ट्रिया के समाजशास्त्र में विद्यमान सिर्फ एक पथ है। कार्ल पॉपर के विवेचनात्मक तर्कवाद ने इसमें एक नया परिप्रेक्ष्य जोड़ा। उनकी विख्यात पुस्तक, द ओपन सोसाइटी एण्ड इटस एनिमिज (खुला समाज और इसके शत्रु) ''बंद'' साम्यवादी समाजों के विरूद्ध एक उर्जावान विवादास्पद कृति थी। पुस्तक के कुछ धमाकों को छोड़कर, पॉपर का राजनैतिक तर्क बिल्कुल स्पष्ट है : समाजों को भविष्य के लिए खुला रहना होगा लेकिन सबके पास इतिहास है और हमेशा होगा। बाह्य प्रभावों के खिलाफ समाजों को बंद करने और एक आदर्श दुनिया बनाने का कोई भी प्रयास, चाहे इरादा कितना भी मानवीय क्यों न हो, अधिनायकवाद की तरफ ले जायेगा। वह जो ''भविष्य हम चाहते हैं'' नहीं हो सकता है।

बीसवीं सदी के दो विश्व युद्धों ने आस्ट्रिया के विज्ञान और मध्य एवं पूर्व यूरोप के विज्ञान पर भयंकर प्रभाव डाला है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् आस्ट्रियाई समाजशास्त्र शून्य से प्रारम्भ हुआ और 1960 के दशक तक वियना विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना नहीं हुई थी। प्रारंभ में, अधिकांश समाजशास्त्रियों ने नगरीय आवास, युवाओं की परिस्थिति और अन्तः पीढ़ी सम्बन्धों जैसी सामाजिक समस्याओं को अपने मुख्य शोध क्षेत्र के रूप में अन्वेषित किया। आस्ट्रिया के समाजशास्त्रियों ने परिवार और वृद्ध होते समाज में देखभाल की स्थिति पर शोध कर सरकार के लिए रिपोर्ट तैयार की। 1970 के दशक से, कई शोधार्थियों ने प्रवास की समस्याओं का विश्लेषण कर नीति निर्माताओं को नये प्रस्तावों पर परामर्श दिया। असमानता और स्तरीकरण के बारे में सामाजिक संरचनात्मक विश्लेषण शोध के आवश्यक क्षेत्र थे। समाजशास्त्रीय अध्ययन जनता का काफी ध्यान आकर्षित करते हैं और अक्सर अखबारों में चर्चा में रहते हैं। हाल के दशकों में, आस्ट्रियाई समाजशास्त्र की परिभाषित विशेषता वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय पद्धतियों को व्यवस्थित रूप से प्रयोग में ला कर सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करने की व्यापक प्रतिबद्धता रही है। मुझे आस्ट्रियाई समाजशास्त्र के भविष्य में इसी परम्परा में रहने की उम्मीद है जैसा कि आई एस ए फोरम के ब्लागः http://isaforum2016.univie.ac.at/blog/ पर देखा जा सकता है।

सामाजिक प्रभावों के साथ वैज्ञानिक ज्ञान का एकीकरण तीसरे आई एस ए फोरम की थीम से नजदीकी से जुड़े प्रश्न को उठाता है : ''हमें कैसा भविष्य चाहिए?'' और हम उसके लिए कैसे संघर्ष कर सकते हैं?

मैं दूसरे प्रश्न से प्रारंभ करता हूं : हम कैसे संघर्ष करें? यह मेरी व्यक्तिगत राय है कि समाजशास्त्रियों को समाजशास्त्रियों की तरह : जुर्गन हेबरमास द्वारा एक बार दावा किये गये उद्धार विषयक सरोकार के साथ व्यवस्थित, वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक रूप से संघर्ष करना चाहिए। समाजशास्त्रियों के लिए, बेहतर दुनिया के लिए संघर्ष में सामाजिक समस्याओं को समझने हेतु समाजशास्त्रीय पद्धति और सिद्धान्तों में उन्नयन का संघर्ष आवश्यक होगा।

यह मुझे पहले प्रश्न पर ले जाता है : हम कैसा भविष्य चाहते हैं? जहाँ हम अपने वर्तमान समाज की सामाजिक समस्याओं – व्यापक असमानता और संसाधनों में अन्तर या पहुँच में भेदभाव जैसी कोई दो का नाम ले सकते हैं। इन समस्याओं से मुक्त आदर्श भविष्य के बारे में बोलना खतरनाक होगा। आदर्श समाज हमेशा अधिनायकवादी होते हैं विशेष रूप से तब जब लोगों का एक समूह–समाजशास्त्री भी सच जानने का दावा करते हैं।

विशिष्ट भविष्य के लिए पूछने के बजाय, शायद समाजशास्त्रियों को, जैसा कार्ल पॉपर शायद कहते, घोषित करना चाहिए कि हमें परिवर्तन के लिए खुला भविष्य चाहिए, समाज जिनका सतत इतिहास हो। ■

रूडोल्फ रिचतर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<rudolf.richter@univie.ac.at>

> यूएसए एवं क्यूबा करने से कठिन रचना करना है

लुइस ई. रुमबाट, क्यूबन अमेरिकन अलायन्स, वाशिंगटन डी. सी. यू. एस. ए. एवं
रूबेन जी. रुमबाट, कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, इरवाइन, यू. एस. ए.

क्यूबा की क्रांति को क्या हो गया? जोस मारती की प्रतिमा हवाना के Plaza de la Revolucion में चे ग्वेरा के चित्र को निहारते हुए

पिछली दिसम्बर में तेरह मिनट के भाषण में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने क्यूबा की अर्थव्यवस्था से सम्बद्ध लगाये गये अवरोध अर्थात् आर्थिक प्रतिबन्ध सम्बन्धी 55 वर्ष पुरानी नीति की असफलता के विचार को खारिज कर दिया। अमेरिका अथवा कम से कम उसकी कार्यपालिका शाखा अब तैयार थी कि क्यूबा से सम्बन्धित एक नवीन उपागम को लागू करने का प्रयास किया जाय। इस उपागम के अन्तर्गत क्यूबा को एक अच्छा पड़ौसी एवं व्यापारिक साझेदार बनाने हेतु कूटनीतिक सम्बन्धों को पुनर्जीवित किया जाए। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के महान बुद्धिजीवी एवं क्यूबा के राष्ट्रीय नायक जोज मारटी के विचार को यदि प्रयुक्त करें तो कह सकते हैं कि समझौता मौन में किया जाना चाहिए। मजबूत हितों के लिए सामान्यतः शान्ति वार्ता प्रारम्भ होने से पहले असफल हो जाती है।

अचानक ये हित संकीर्ण एवं स्वयं के स्वार्थों की पूर्ति के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रति क्रान्ति का खतरा अमेरिकन कारपोरेशन्स द्वारा प्रस्तुत खतरे के सम्मुख कुछ भी नहीं था, यदि खतरों को तुलनात्मक रूप से देखा जाय। ये कारपोरेशन्स विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से क्यूबा में आकर स्वयं को स्थापित कर रही कम्पनीज को बहुत नजदीकी से देख रहे थे अथवा निगरानी कर रहे थे विशेषतः पर्यटन के क्षेत्र में यह हो रहा था। इस से अधिक भी सम्भव थाः कृषि, पशुपालन, बिजली उद्योग, यन्त्र निर्माण, उपभोक्ता वस्तु, निर्माण, आवास एवं यातायात यहाँ तक कि उच्च प्रौद्योगिकीय जैव मैडीसिन उद्योग में संयुक्त साझेदारी हो रही थीं।

>>

VII
CUMBRE DE LAS
AMÉR
S
Panamá, 2

अप्रेल 2015 में अमरीका के शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति राउल कास्त्रो और बराक ओबामा हाथ मिलाते हुए

आज बड़ा एवं छोटा व्यापार एवं वाणिज्यिक ढाँचा राष्ट्रपति का समर्थक है। नवीन लचीले नियमों के कारण अधिक से अधिक लोग यात्रा करते हैं। अधिक से अधिक क्यूबाई अप्रवासी एवं अतिथि/यात्री मियामी एवं हवाना के मध्य यात्रा करने के लिए स्वतन्त्र माहौल के प्रति सुनिश्चित हैं। मियामी के कट्टरवादी नेता आज फिडेल एवं राउल की तरह वृद्ध हैं। नवीन प्रवेश पाने वाले लोग, जिन्होंने क्रान्ति के प्रारम्भ में धन की हानि का अनुभ्ज्ञव नहीं किया, वृद्ध नेतृत्व को प्रति स्थापित कर रहे हैं। आज नवीन नीतयाँ बिना किसी अवरोध के लहर का रूप ले चुकी हैं। लेकिन जहाँ सम्भावनाएं अपरिमित हैं, वही सामान्य रूप लेकर सम्बन्धों को आगे बढ़ाने का रास्ता भी कठिनाई भरा है। कूटनीतिक सम्बन्धों को पुनर्जीवित करना तो एक चरण है।

> समृद्ध होता क्यूबाई प्रारूप

ओबामा की घोषणा के वर्षों पूर्व क्यूबा में नवीन उपं आवश्यक आर्थिक उपागमों को लेकर बहस प्रारम्भ हो चुकी थी। इस बहस ने उपयोग में न आने वाली भूमि को सहायता एवं इस भूमि को प्रदान करना, लघु उद्यमों का वैधानिकीकरण, राज्य के उद्योगों को नवीन प्रकृति की स्वायत्तताएं एवं कृषक एवं गैर कृषक सहकारी समितियों को समर्थन देने से सम्बन्धित दिशा निर्देशों का निर्माण करने का रास्ता दिखाया।

निर्विवाद रूप से क्यूबा को अधिक खाद्य सामग्री उत्पन्न करने में एवं देश में उत्पादित खाद्य वस्तुओं से विदेशों से क्रय की जाने वाली खाद्य वस्तुओं को प्रतिस्थापित करने में सफलता मिलेगी। सभी महत्वपूर्ण लघु किसानों एवं सहकारी समितियों को देखना होगा कि उनकी आय में वृद्धि हो क्योंकि नवीन नगरीय उद्योगों के कारण माँग में वृद्धि होगी। सेवाओं में सुधार व वृद्धि एवं वेतनों में वृद्धि के कारण लोग विकसित एवं आकर्ष्ज्ञक भौतिक स्थितियों को अपने जीवन में महसूस करेंगे।

लेकिन जहाँ यह एक प्रक्षेपण है वहीं परिणाम अभी उतार चढ़ाव वाले हैं। इसके लिए अनेक कारक उत्तरदायी हैं जिसमें आधारभूतीय कृषि इनपुट की उपलब्धता, गाँवों एवं नगरों के मध्य भरोसे वाली यातायात प्रणाली, उत्पादों के लिए शीतगृह के प्रबन्ध, प्रचुर मात्रा में बड़े डिब्बों एवं टाट के कपड़ों की उपलब्धता, कृषि कार्यों एवं ईंधनों से सम्बन्धित उपकरणों का उन्नयन सम्मिलित है क्योंकि लम्बे समय से अनुपयुक्त आधारभूतीय सुविधाओं का पाया जाना इस व्यवस्था की विशेषता रही है।

क्यूबा के उद्यमी कमोबेश सक्षम नहीं है। बहुत से पक्षों के विषय में, जैसे लघु–व्यवसाय प्रबन्धन, संविदा प्रणाली एवं सामान्य लेखा–जोखा प्रणाली में, उनकी कुशलता कम है यह सब न केवल वित्तीय सुदृढ़ता के लिए अपितु कर संकलन के लिए भी आवश्यक है। यह सापेक्षिक रूप से एक नयी चिन्ता है क्योंकि राज्य की भूमिका सिकुड़ती है और निजी क्षेत्र का विस्तार होता है। राज्य का क्षेत्र अनेक गतिविधियों में प्रभुत्वशाली होना चाहिए विशेषतः चीनी, पर्यटन, खदान, तेल एवं रिफायनरी, स्वास्थ्य, जैव–मेडीसिन, शिक्षा, ट्रेन, हवाई सेवा में यह प्रभुत्व आवश्यक है। इन क्षेत्रों में उत्पादकता की वृद्धि एवं सुधार भी आवश्यक है।

क्यूबा के सम्मुख इस समय दो विशिष्ट चुनौतियाँ भी है वर्तमान मुद्रा (पैसों एवं परिवर्तनशील पैसों) की मजबूती को बनाने की जरूरत तथा जनसंख्या का वृद्धावस्था की तरफ अग्रसर होना वे चुनौतियाँ हैं जिनका सामना आवश्यक है।

पहली उल्लेखित चुनौती एक लोकप्रिय माँग भी है। सरकार धीरे–धीरे उस दिशा में अग्रसर हो रही है। सरकार इस तथ्य को मान्यता दे रही है कि नागरिक जो मूलतः गैर परिवर्तनीय पैसों का प्रयोग करते हैं यह पा सकते हैं कि परिवर्तनीय मुद्रा बहुत मजबूत तरीके से उनकी पकड़ से बाहर होती जा रही है। डॉलर एवं विदेशी वस्तुओं का प्रवेश विशेषतः दक्षिण फ्लोरिडा से–गृहस्थियों को भिन्न भिन्न तरीकों से प्रभावित करता है पर यह प्रभाव इस तथ्य पर निर्भर करता है कि क्या इन गृहस्थियों को विदेश में निवास कर रहे सम्बन्धियों का समर्थन प्राप्त है। क्यूबा की जनसंख्या की वृद्धावस्था की तरफ अग्रसरता एक विशिष्ट चुनौती तो नहीं है पर इसने विशिष्ट चुनौतियों को उत्पन्न किया है। क्यूबा की विकसित चिकित्सकीय सुविधाओं का अर्थ यह है कि यहां के लोग पिछले दशकों की तुलना में अधिक जीवित रहते हैं, लेकिन पूर्ण रूपेण योग्य युवाओं का उत्प्रवासन स्थितियों को जटिल कर देता है। यह नगरीयकरण का परिणाम है। युवा श्रमिकों के प्रतिशत में ह्रास विशेषतः नवीन भू उपयोग योजना में कठिनाई उत्पन्न करता है। कृषि को युवाओं की आवश्यकता है मुख्यतः उनकी जिन्होंने कृषि विज्ञान, मिट्टी प्रबन्धन, बाजार प्रबन्धन एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त की है। सन् 2002 एवं 2012 की जनगणनाओं में क्यूबा की जनसंख्या में 19वीं शताब्दी की क्यूबा के स्वाधीनता संघर्ष के उपरान्त पहली बार कमी आयी है। प्रजनन की कम दर एवं उत्प्रवासन के फलस्वरूप ऐसा हुआ है। इस दशक में 3,30,000 से अधिक क्यूबाई लोगों ने अमेरिका में स्थाई रूप

>>

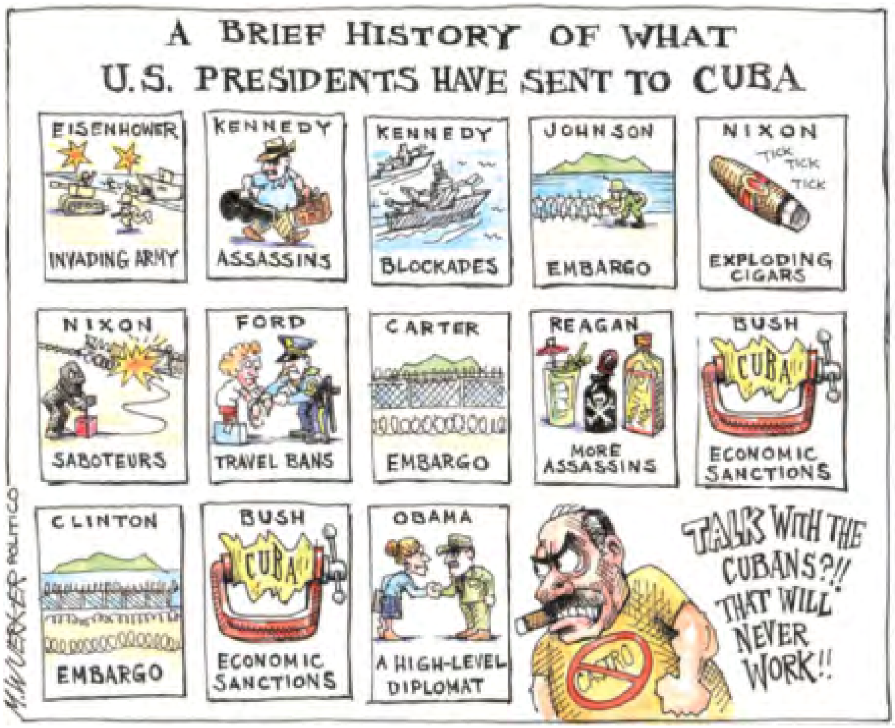
A BRIEF HISTORY OF WHAT
U.S. PRESIDENTS HAVE SENT TO CUBA
EISENHOWER
INVADING ARMY
KENNEDY
ASSASSINS
KENNEDY
BLOCKADES
JOHNSON
EMBARGO
NIXON
TICK TICK TICK
EXPLODING CIGARS
NIXON
SABOTEURS
FORD
TRAVEL BANS
CARTER
EMBARGO
REAGAN
MORE ASSASSINS
BUSH
CUBA
ECONOMIC SANCTIONS
CLINTON
EMBARGO
BUSH
CUBA
ECONOMIC SANCTIONS
OBAMA
A HIGH-LEVEL DIPLOMAT
CASTRO
TALKS WITH THE CUBANS?!! THAT WILL NEVER WORK!!
M.WUERKER POLITICO

एम व्यूरकर POLITICO से क्यूबाई कार्टून

से निवास की वैध स्वीकृति प्राप्त कर ली। हालांकि क्यूबा की नवीन आर्थिक योजनाओं में कृषि उत्पादकता की वृद्धि के प्रयास सम्मिलित है। पर नवीन लघु व्यवसाय एवं वाणिज्यिक गतिविधियाँ, राज्य के उद्यमों में सकारात्मक उभार लेता प्रबन्धन, मैरली में नवीन बन्दरगाह, अमेरिका से पर्यटन का खुलापन (जो सम्भावना है कि बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकृष्ट करेगा) तथा सभी देशों से व्यापार वे पक्ष हैं जो समृद्धि के क्षेत्र में नवीन योगदान करेंगे।

>अमेरिका के हितों की निरन्तरता

अमेरिका की नीतियों में बदलाव किसी दयालुता से नहीं है उसके व्यापक निहितार्थ है। क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हो चुके हैं जिसमें विभिन्न संगठनों जैसे ए. एल. बी. ए.–टी. सी. पी. युनासुर एवं सीले (ALBA-TCP, Unasur & Celac) की सफलतायें सम्मिलित हैं, इनमें से किसी संगठन में अमेरिका सम्मिलित नहीं है। अतीत की तुलना में यह परिवर्तन अत्यन्त तेज व अप्रत्याशित है। अतीत में कोई अन्तः अमेरिकन संगठन अमेरिका को सम्मानित पद न दे ऐसी अपेक्षा ही नहीं की जा सकती थी। इसके साथ ही रूस एवं विशेषतः चीन ने लातिन अमेरिका एवं कैरीबियन क्षेत्रों में प्रवेश कर लिया था।

परम्परागत सहयोगियों ने क्यूबा के विषय में अमेरिकन नीति को लेकर अमेरिका के सम्मुख अपनी नाराजगी दिखाई है क्योंकि अमेरिका का मत है कि उन्हें क्यूबा के विषय में अमेरिकन नीति को आगे बढ़ाना चाहिए। पिछले वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ में क्यूबा पर प्रतिबन्ध के अमेकिन मत का केवल इजरायल ने समर्थन किया। इसके विपरीत क्यूबा को समूचे विश्व के देशों की कृतज्ञता एवं सम्मान मिला। क्यूबा ने वह लड़ाई तो जीत ली हालांकि शान्ति अभी सुनिश्चित नहीं है।

अमेरिका की पूरी कोशिश होगी कि वह क्यूबा को एक आश्रित नव्य उदारवादी द्वीप में रूपान्तरित कर अपने उद्देश्य की पूरी करे। इसे प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी कोशिश कर सकता है। यह भविष्यवाणी वह स्थापित करना चाहता है चाहे वहाँ किसी भी दल का शासन हो एवं कोई राष्ट्रपति हो यहाँ तक कि अमेरिकन निगमों को वहाँ लाभकारी व्यापारिक अवसर मिलें।

>सन् 2016 एवं 2018 के चुनाव

अब आगे क्या होता है? ओबामा का राष्ट्रपति का कार्यकाल सन् 2016 में समाप्त होता है। यह सम्भव है कि रिपब्लिकन व्हाइट हाउस एवं कांग्रेस के दोनों सदनों में अपना अधिकार स्थापित कर लें। रिपब्लिकन यदि व्हाइट हाउस पर अधिकार करते हैं तो उनके वर्तमान में राष्ट्रपति पद के प्रत्याशियों के लिये क्यूबा में सत्ता परिवर्तन एक ऐसा मुद्दा है जो उस वायदे से जुड़ा है जिसे पूरा नहीं किया गया है उसे काटना है। डेमोक्रेट्स में भी कठोर दृष्टिकोण रखने वाले कांग्रेस सदस्य है जो उनके राष्ट्रपति पद के महत्व पूर्ण प्रत्याशी है। ये महत्वपूर्ण प्रत्याशी एक प्रतिबद्ध नव्य उदारवादी है तथा "साफ्ट पॉवर" को व्यवहार में लाने वाले हैं। उनका मत है कि यदि वह सत्ता में वापस लौटती हैं तो वे लातिन अमेरिका एवं कैरीबियन को उस रास्ते पर ले जायेगी जैसे उन्होंने अपने पति के राष्ट्रपति पद के कार्यकाल में सोचा था। यह रास्ता वैनेजुअला में हयूगो शावेज के चुनाव के पूर्व का है। संघीय विधान यह निर्देश देता है कि प्रतिबन्धों को हाउस एवं सीनेट में बहुमत के पक्षकारों मतदान से ही हटाया जा सकता है।

सन् 2018 में क्यूबा में एक नवीन राष्ट्रपति होगा। बहुत सम्भावना यह है कि वर्तमान में कार्यरत प्रथम उपराष्ट्रपति मिगुअल डायजकेनल सत्ता में शीर्ष पर आयें। वे नवीन आर्थिक प्रणाली एवं नवीन समाज की स्थितियों को सभालेंगे। उन्होंने घोषित किया है कि क्यूबा समाजवादी बना रहेगा चाहे बाजार की शक्तियों को कार्य करने के अवसर मिलें और नवीन उद्यमी वर्ग अपनी स्थिति को मजबूत करले।

अनेक देश यह आशा कर रहे हैं कि बड़ी शक्तियाँ (सुपर पावर) एवं उभार लेता अर्थात् अपरिपक्व द्वीप आपस में सहयोगमूलक समझौते करेंगे। नवीन नीतियाँ–अमेरिका में राजनीतिक एवं क्यूबा में आर्थिक–एक ऐसे युग के पक्ष में सक्रिय होंगी जो पारस्परिक लाभ एवं सद्भावना मूलक सम्बन्धों को महत्व देगा लेकिन 55 वर्षों की असहमति को जल्दी भूला नहीं जा सकता।

अब से हम केवल एक तथ्य जानते हैं। अमेरिका एवं क्यूबा एक दूसरे से 90 मील की दूरी पर ही स्थित रहेंगे। ■

लुईस ई. रुम्बाउट से पत्र व्यवहार हेतु पता <lucho10@earthlink.net>
रूबिन जी. रुमबाउट से पत्र व्यवहार हेतु पता <rrumbaut@uci.edu>

> नस्लवाद एवं आंदोलन

क्यूबा के सक्रिय व्यक्तित्व नारबर्टो मेसा कार्बोनेल के साथ साक्षात्कार

सन् 1959 के बाद से क्यूबा की क्रान्ति प्रजातीय असमानता के प्रति समर्पित रही है। एक ऐसे देश में जहाँ दासता की समाप्ति 1886 में हुई हो, क्रान्ति ने अनेक अश्वेत क्यूबाइ नागरिकों को पहली बार यह अवसर दिया कि वे भूमि एवं शिक्षा की उपलब्धता प्राप्त करें। यह प्राप्ति नवीन समानतामूलक नीतियों एवं प्रजातीय भेदभाव की समाप्ति के प्रति सार्वजनिक प्रतिबद्धता के माध्यम से हो सकी। अनेक आलोचनात्मक विचारकों का तर्क है कि अभी प्रजातीय लोकतन्त्र को अपेक्षित रूप से प्राप्त नहीं किया जा सका है पर क्यूबा ने अन्य समाजों की तुलना में प्रजातीय असमानता की समाप्ति की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है।

हालांकि क्यूबा के लिये ''विशेष दौर'' 1990 के दशक के प्रारम्भ से शुरू होता है, संसाधन अत्यन्त सीमित है, असमानता की वृद्धि की कीमत पर बाजार–अभिमुखित सुधार लागू हो रहे हैं जो कि साफ देखे जा सकते हैं। इसके कारण प्रजातीय तनाव बड़ी संख्या में उभरे हैं। इस प्रवृत्ति का सामना करने के लिए अनेक अश्वेत कलाकारों एवं सार्वजनिक बुद्धिजीवियों ने एक सजग एवं सक्रिय प्रजाति विरोधी कार्यक्रम शुरू किया है जो कि अंशतः सरकार द्वारा प्रायोजित 'रीजनल अफ्रोडिसेन्डेन्ट आर्टिकुलेशन ऑफ लेटिन अमेरिका एण्ड द कैरिबियन, क्यूबन चैप्टर' कार्यक्रम से जुड़ा है (स्पेनिश भाषा में संक्षेप में इसे ए आर ए ए सी कहा जाता है)

ए आर ए ए सी के द्वारा संचालित कार्यक्रमों में से एक में साक्षात्कर्ता लुइसा स्टूयर की पहली बार भेंट नारबर्टो मेसा कार्बोनल से हुई। कार्बोनल साठा वर्ष के एक अश्वेत व्यक्ति हैं जो अपनी कुर्सी पर राजनीतिक प्रतिबद्धता की आंखों में चमक लिए हुए बैठे थे सन् 2014 के अन्त में तथा सन् 2015 के प्रारम्भ में उनसे एक लम्बा साक्षात्कार आयोजित किया गया जिसका एक अंश यहां प्रस्तुत है। लुइसा स्टूयर कापन हेगन विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं और क्यूबा में उन्होंने अपना शोध कार्य किया है। इस साक्षात्कार का एक लम्बा भाग http://isa-global-dialogue.net/?p=4222 पर उपलब्ध है।

नारबर्टो मेसा कार्बोनेल

एल एस: नारबर्टो क्या आप हमें अपने बारे में कुछ बता सकते हैं?

एन एम सी : राजनीतिक दृष्टि से मैं जटिल हूं। क्रान्ति का पहला महान कार्यक्रम क्यूबा का साक्षरता कार्यक्रम (1961) था। मैं उस समय केवल दस वर्ष का रहा हूँगा जब मैंने दूसरों को पढ़ाना एवं लिखाना प्रारम्भ किया। 1963 में जब फ्लोरा नामक तूफान (Hurricane Flora) ने द्वीप को चपेट में लिया, मैं तेरह वर्ष का था और आरियण्ट में कॉफी चुनने वाले समूह (ब्रिगेड) का हिस्सा था। मई 1966 में, मैं सोलह वर्ष का भी नहीं था जब यहाँ बड़े पैमाने पर सैना की आवाजाही हुई, हमें वहाँ पर लाठियों के पीछे खड़ा रखा गया। यहाँ हम अमेरिकन नौकाओं का इन्तजार कर रहे थे। मेरा कहना यह है कि क्रान्ति की कार्यवाही के दौर में मैं बढ़ा हुआ यानि मेरा पालन पोषण हुआ। दूसरी ओर, मैंने बहुत अध्ययन किया। मैं अपने श्रमिक समूह का नेता और दल की इकाई का संगठनकर्ता था। मेरे जीवन में क्रान्ति का एक व्यापक अर्थ था।

>>

लेकिन सन् 1980 में ऐसा कुछ हुआ कि मुझे दल (पार्टी) को छोड़ना पड़ा। ''मैरिल बोट्लिफ्ट'' के दौरान अनेक गरीब लोग एवं अश्वेत लोग निर्धनता के कारण क्यूबा छोड़ रहे थे।

हम से चाहा गया था कि हम ऐसे लोगों को धोखेबाज समझें और उनसें इस दृष्टि के साथ व्यवहार करें और उन पर अण्डे फैंके। मैंने एक ऐसी सभा में उपस्थिति दी थी जहाँ एक युवा कामरेड की आलोचना की गयी क्योंकि उसने धोखेबाजों पर अण्डा फैंकने वाली क्रिया में सहभागिता नहीं की थी। उन्होंने इस युवा कामरेड को पार्टी (दल) से निकाल दिया। उस सभा से बाहर आते हुए मैं सोच रहा था कि यदि मेरे भाई को नाव पर छोड़ दिया जाता और लोग उसके साथ गिरे हुए आदमी के रूप में अशोभनीय व्यवहार करने के इच्छुक होते तो उन्हें ऐसा करने से पहले मुझसे लड़ना पड़ता। अतः इस सोच के प्रत्युत्तर में मैंने त्यागपत्र का अनुरोध करने वाला पत्र लिखने का निर्णय लिया। यह चेतना का प्रश्न था।

क्रान्ति ने अनेक सकारात्मक परिणामों को उत्पन्न किया जो कि अश्वेतों के लिए भी थे। अतः मैंने सरकारी संस्थाओं से आग्रह करना एवं उन्हें सार्वजनिक पत्र भेजना जारी रखा। मैंने राजनीतिक विरोधी अथवा विद्रोही वाला काम नहीं किया मैंने भिन्न मतावलम्बी वाली भूमिका नहीं निभायी। मैं अब भी इन संस्थाओं के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण रखता हूं और फीडल की परिभाषा के अनुसार मेरे अन्दर क्रान्तिकारिता विद्यमान है। अश्वेतों का बहुमत क्रान्ति के साथ है–यह तार्किक है क्रान्ति के सभी पहलुओं ने अश्वेतों को प्रोत्साहित किया है लेकिन इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि हम सदैव इसके ''आभारी'' रहेंगे।

अतः जब 1990 का दशक आया और इस दशक में प्रजातीय असमानताओं सहित असमानताओं की वृद्धि हुई तो हमने 'कोफ्राडिया ड ला नैग्रीटयूड' (Cofra de la Negritude) (नीग्रोज का भाईचारा) का गठन किया ताकि प्रजातीय भेदभाव के विरूद्ध संघर्ष किया जा सके। 'कोफ्राडिया' के लिए चुनौती यह है कि हमें राजनीतिक भिन्न मतावलम्बी के आरोपों के घेरे में नहीं लिया जा सकता है। हम समाजवादी विमर्श के अन्तर्गत कार्य करते हैं। हालांकि हम आलोचक भी हैं। हम प्रजातीय भेदभाव के साथ समाजवाद नहीं चाहते। हमारा संघर्ष कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) का आह्वान करता है कि वह क्यूबा में प्रजातिवाद की समस्या से संघर्ष करे व उसका मुकाबला करे। जब तक पार्टी स्पष्ट रूप से इस समस्या के मुकाबले के लिए सामने नहीं आती, अन्य संस्थाएं इस कृत्य के विरूद्ध सक्रिय होने में संकोच का भाव रखेंगी।

एल एस : आज क्यूबा में प्रजातिवाद से सम्बद्ध मुख्य समस्याएं क्या हैं? और क्या आपने इन समस्याओं में से किसी का भी स्वयं अनुभव किया है?

एन एम सी : अश्वेत लोगों के संगठनों का सामान्यतः दमन किया जाता है और उन्हें 'रंगभेदी' कह कर आरोपित किया जाता है। अश्वेतों के पास अपनी सकारात्मक अस्मिता को निर्मित करने के बहुत कम अवसर होते हैं। आप इसे 'एडेलाण्टर' (आगे बढ़ना यानि मूविंग फार्वड) के विचार में देख सकते हैं कि जिसका अर्थ है कालेपन (अश्वेतवाद) से मुक्ति हेतु श्वेत से विवाह करो। श्वेतपन की यह वैचारिकी उस स्तर को स्थापित करती है जिसमें लोग स्वयं को प्रजातीय स्थितियों के साथ सम्बद्ध कर लेते हैं। यह स्थिति आज की सर्वाधिक गम्भीर प्रजातीय समस्याओं के साथ मुकाबला करने के प्रयासों को कठिन बना देती है। इन स्थितियों ने क्यूबाई अर्थव्यवस्था में उच्च वेतन प्राप्ति के पदों की प्राप्ति से अश्वेतों को पृथक कर दिया है।

मुझे इस स्थिति के कुछ प्रत्यक्ष अनुभव हैं। कुछ वर्षों तक मैंने मैरीना हैमिंगवे के लिए कार्य किया। सन् 1997 में मैंने यहाँ कार्य प्रारम्भ किया जब मेरा एक पड़ौसी यहाँ दुकानों का सर्वेसर्वा बन गया। मैंने उस पड़ौसी से पूछा कि क्या मेरे लिए कोई रोजगार है, आखिर हम लोग एक ही गाँव के हैं और इसके पूर्व हमने साथ साथ कार्य किया है और तब तक मेरे पास अन्तर्राष्ट्रीय होटल्स में स्वागतकर्ता के कार्य का अनुभव था साथ ही मैं अंग्रेजी बोल लेता था। अतः उसने कहा कि ''नारबेरेटो, मैं तुम्हारी सहायता करने जा रहा हूं पर सुनो स्वागतकर्ता के रूप में या दुकानों में कार्य करने के विषय में तुम क्या कह रहे हो? यह सम्भव नहीं है। मैं तुम्हें गोदाम में नौकरी पर रखूँगा क्योंकि यहाँ मैरिना हैमिंगवे में अश्वेतों को जनता के साथ सम्पर्क रखने वाले कामों के लिए नियुक्त नहीं किया जाता'' और वह उन व्यक्तियों में से था जो पार्टी के नेता हुआ करते थे। मुझे नौकरी की आवश्यकता थी अतः मैंने कहा ''ओ हो, हाँ, गोदाम में, क्यों नहीं''।

कुछ समय उपरान्त, मैंने सुना कि वे कुलियों के पद पर लोगों को नियुक्त कर रहे हैं और मैंने उस पद पर नौकरी पाने का प्रबन्ध किया। हम ऐसे पाँच लोग थे। पाँच में से दो लोग ऐसे थे जिन्हें उच्च पदस्थ लोगों का समर्थन था और वे सुरक्षित महसूस करते थे जबकि मैं एवं अन्य दो लोग अश्वेत थे पर वास्तव में अंग्रेजी में अध्ययनरत थे। पर पहले वे लोग कौन होंगे जिन्हें पुनः प्रशिक्षण पर भेजा जायेगा जब होटल को इतने कुलियों की आवश्यकता नहीं होगी? स्वाभाविक है कि वे हम तीन अश्वेत होंगे जो वास्तव में अंग्रेजी बोलते थे। मुझे सुरक्षा गार्ड के रूप में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाना था, मुझे वह स्थान याद है जहाँ हमें भेजा गया था। पर्यटन क्षेत्र में कुछ ही अश्वेत थे लेकिन वहाँ पुनः प्रशिक्षण हेतु अधिक कर्मचारी भेजे गये और इनमें कम से कम 60 प्रतिशत अश्वेत थे।

लेकिन स्थितियाँ बिगड़ती चली गयी उन्होंने मुझे नौकरी से निकाल दिया जो पूरी तरह अवैधानिक था। मैंने श्रमिक संगठन (यूनियन) को शिकायत की पर कुछ नहीं हुआ। मैंने कानूनी संहिता में स्थापित समानता का अधिकार के उल्लंघन के आधार पर शिकायत करने का निर्णय लिया। मैं पहले विधिवेत्ताओं के ब्यूरो के पास गया वहाँ से मुझे म्यूनिसिपल अभियोक्ता कार्यालय भेजा गया जिन्होंने संयोग से मुझे पुलिस स्टेशन भेज दिया। मुझे याद है मैंने अधिकारी से कहा कि मैं समानता के अधिकार से सम्बन्धित शिकायत प्रस्तुत करना चाहता हूँ। उन्होंने मुझे पूर्णरूपेण न समझ पाने की दृष्टि से देखा और कहा ''समानता के अधिकार का उल्लंघन''? हाँ अधिकारी (कम्पनेरा), मैं होटल प्रबन्धक को प्रजातीय भेदभाव का आरोपित बनाना चाहता हूं।'' वह भौंचक्की हो गयी। इकाई के अध्यक्ष ने मेरी शिकायत ले ली और उसके बाद जाँच प्रारम्भ कर दी होटल में पूरा हंगामा था। पुलिस ने जाँच को गम्भीरता से लिया एवं होटल प्रबन्धक का दूसरे होटल में स्थानान्तरण कर दिया गया। लेकिन अन्ततः मुझे अभियोक्ता से एक पत्र प्राप्त हुआ कि मेरी शिकायत का विषय एक आपराधिक कृत्य की श्रेणी में नहीं आता, इस पर कोई अपील सम्भव नहीं थी और वह प्रकरण समाप्त हो गया।

क्यूबेटर पर्यटन गाइड को किराये पर लेने के लिए प्रयासरत थे। मैं अपने होटल अनुभव एवं अंग्रेजी ज्ञान के साथ शीघ्रता के साथ उनके पास गया। मैं पूर्णरूपेण योग्य था। मुझे कहा गया कि प्रबंधक उपस्थित नहीं हैं आप कल आयें। तीसरे दिन जब मैं प्रबन्धक का इन्तजार कर रहा था, वहाँ दो युवा श्वेत आये, वे उस रोजगार के विषय में बातचीत कर रहे थे जिसके लिए मैं वहाँ इन्तजार कर रहा था। अचानक प्रबन्धक अन्दर से बाहर आया, जब मैं उन दो युवाओं के साथ स्वयं को सम्मिलित करने का अनुरोध करना चाहता था, मुझे कहाँ गया कि यहाँ कोई रोजगार उपलब्ध नहीं है।

ऐसी समस्याएं समूचे क्यूबा में उच्च पदों वाली नौकरियों को लेकर हैं। अपने जीवन के अधिकांश हिस्से में मैंने क्यूबा के

>>

AGUA BLANCA
AGUA NEGRA

क्यूबा में नस्लवाद की आज की स्थिति पर एक अस्पष्ट टिप्पणी। अफ्रीकी–क्यूबाई संस्कृति की पहचान बनाने के लिए सामुदायिक स्तर पर कलात्मक पहल के रूप में केन्द्रीय हवाना में Callejon de Hamel के ऊपर पानी की टंकी पर 'aqua blanca, aqua negra' (सफेद पानी, काला पानी) लिखा हुआ। लुईसा स्टूयर द्वारा फोटो

सर्वाधिक विकसित डेयरी उद्योग में होलिस्टिन गायों के उन्नयन हेतु एक आनुवंशिकी विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया है। प्रारम्भ में, मैं जब उच्च पदाधिकारियों की बैठक में सम्मिलित हुआ तो पाया कि कमोबेश अन्य सभी सहभागी श्वेत थे। मैंने इस विषय में अधिक नहीं सोचा। आजकल मैं इन सब विषयों पर अधिक ध्यान देता हूँ। कई अवसरों पर मैंने देखा है कि विभिन्न नौकरियों के लिए अच्छे खासे योग्य अश्वेतों को हटा कर श्वेतों को नियुक्त कर लिया जाता है। क्यूबा की प्रतिष्ठित बायो–फार्मास्युटिकल कम्पनी में अपनी पिछली नौकरी में मैंने पाया कि किस प्रकार वे अश्वेत पेशेवरों से छुटकारा पाना चाहते थे और साथ ही मुझसे भी मेरी सक्रियता के कारण छुटकारा पाने के लिए प्रयासरत होते थे। मेरे अनेक अश्वेत सहयोगी उत्पीड़न के कारण नौकरी छोड़ चुके थे। अन्त में मैंने भी समय पूर्व सेवानिवृत्ति लेने का निर्णय ले लिया।

पिछले वर्ष हमारे संगठन ने सी टी सी (द वर्करस सैण्ट्रल यूनियन ऑफ क्यूबा अर्थात् क्यूबा के श्रमिकों की केन्द्रीय यूनियन) को एक खुला पत्र लिखा और उनसे पूछा कि क्या वे इस प्रजातिवाद की भर्त्सना करेंगे पर क्यों उन्होंने कुछ किया? कुछ नहीं किया। हम चाहते हैं कि पार्टी इस विषय में नेतृत्व करे और स्वीकारे की प्रजातिवाद की समस्या विद्यमान है। जब तक ऐसा नहीं होता है, कोई नागरिकीय सामाजिक संगठन इस विषय पर बात नहीं करेगा। ''एक समृद्ध एवं संपोषणीय समाजवाद'' आज के समय की महती आवश्यकता है। बहुत अच्छा है कि ''समृद्ध एवं संपोषणीय'' पक्ष हों पर प्रजातिवाद का क्या होगा? सभी नवीन आर्थिक सुधार विदेशी निवेश को आकर्षित कर रहे हैं, क्यून्टा प्रोपिज्मो (लघु उद्योग) की वृद्धि हो रही है। ये सभी स्थितियाँ प्रजातीय असमानता को इस देश में और घातक करने के लिए कार्य करेंगी।

एल एस : क्या प्रजातिवाद की आर्थिक समस्या ज्यादा कुशल एवं ज्यादा शिक्षित अश्वेत श्रमिकों के साथ ज्यादा सम्बद्ध है?

एन एम सी : क्यूबा में प्रजातिवाद की मुख्य समस्या निर्धनता है। अनेक अश्वेत युवा विश्वविद्यालय नहीं जा सकते। अध्ययन के स्थान पर वे छोटी–मोटी नौकरियाँ करते हैं ताकि परिवार की जरूरतें पूरी की जा सकें। यह कैसे सम्भव है कि हम लगभग एक हजार पाकिस्तानी युवाओं को यहाँ लाकर उन्हें डॉक्टर बनने हेतु अध्ययन कराते हैं और उनकी शिक्षा पर व्यय करते हैं लेकिन हम पाँच हजार गरीब क्यूबाई युवाओं की अध्ययन हेतु आर्थिक सहायता नहीं कर सकते। उन्हें अध्ययन हेतु धन की आवश्यकता है। यह क्रान्ति ''विनम्र लोगों के द्वारा विनम्र लोगों के लिए'' के रूप में अपेक्षित थी–और अब केवल उन धनी परिवारों के लिए हैं जो अपने बच्चों की शिक्षा पर व्यय कर सकते हैं।

आपको पता है कि क्यूबा में हजारों एकड़ जमीन ऐसी है जिस पर खर पतवार उगे हुए हैं यह भूमि उपयोग में नहीं आ रही क्योंकि लोग खेतों में काम नहीं करना चाहते। इसके साथ ही हमारे यहाँ ऐसे लोग हैं जो नगरों में प्रवसन द्वारा आ गये लेकिन उन्हें रहने के लिए उपयुक्त जगह नहीं मिली। मेरा सुझाव है कि ऐसे अश्वेत परिवारों की पहचान की जाय जो गाँव जाना चाहते हैं ऐसे परिवारों से एक कृषक समुदाय का गठन किया जाय। इतना अवश्य है कि ऐसे समुदायों को समर्थन, सहायता, इनपुट, ट्रैक्टर इत्यादि की कुछ गैर सरकारी संगठनों को कहा जाय कि वे ऐसे समुदायों को आर्थिक सहायता दें। क्यूबा राज्य को ऐसे समुदायों को भूमि का स्वामित्व प्रदान करना चाहिए। इन दिनों सभी जगहों पर भूमि बेची जा रही है, तो फिर ऐसा भी किया जा सकता है।

यहाँ क्यूबा में उन्नीसवीं शताब्दी में, कुछ खेत वास्तव में स्वतन्त्र अश्वेतों के स्वामित्व में थे विशेषतः आरियण्ट प्रान्त में ऐसा था। अनेक स्वतन्त्र अश्वेतों ने स्वाधीनता संघर्ष (स्पेन के विरूद्ध) में सहभागिता की। उन्होंने अपने खेत त्याग दिये और मुक्ति सैना का हिस्सा बन गये। लेकिन अमेरिकन कम्पनीज ने उनकी जमीनों को ले लिया क्योंकि इन जमीनों के स्वामित्व वाले दस्तावेज उपयुक्त रूप से पंजीकृत नहीं थे। उन अश्वेतों का क्या हुआ? हालांकि वे विरोध करने के लिये तैयार थे। अपनी जमीन पर पुनः दावा करने के लिए ऐसे अनेक अश्वेतों ने पूर्वी प्रान्त में सन् 1912 में हुए विद्रोह में भाग लिया। इस विद्रोह का नेतृत्व पार्टिडो इन्डेपेन्डेन्टी डि कलर ने किया। इस विद्रोह में हुए दमन में ऐसे अनेक लोग मारे गये।

आज इस पुनर्वास कार्यक्रम के साथ ऐतिहासिक न्याय का प्रश्न जुड़ा है–इस सरकार को ऐसे अश्वेत लोगों को जमीन देनी चाहिए, यह एक उपयुक्त किस्म का सम्मान का भाव उनके प्रति होगा। यह उनके लिए भी होगा जो अश्वेत परिवारों के लिए ऐतिहासिक न्याय चाहते हैं यदि कुछ श्वेत भी इस कार्यक्रम का भाग बनना चाहें तो उन्हें भी अनुमति दी जावे। लेकिन अश्वेतों के लिए यह कार्यक्रम ऐसे कुछ अवसरों में एक होगा जिससे उनकी आर्थिक स्थितियों में सुधार हो सके।

एल एस : इन दिनों आप स्वयं को कैसे पाते हैं, काफ्रेडिया की गतिविधियों को संगठित करने के लिए आप संसाधनों की प्राप्ति कैसे करते हैं?

एन एम सी : पैसास में दी जाने वाली पैंशन, जो कि कुछ डालर में है, से मैं अपना जीवन यापन करता हूँ और यह करना आसान नहीं है। 30 डालर प्रति माह की प्राप्ति के लिए मैं कुछ समृद्ध लोगों के लिए रात्रि में चौकीदार का कार्य करता हूँ। इतनी कम मुद्रा में स्वयं के लिए संगठित करना अत्यन्त कठिन है। लोग दूर दराज से आते हैं और इस अपेक्षा से आते हैं कि उन्हें खाने के लिए कुछ मिल सके। कभी कभी हमें अपनी बैठक स्थगित करनी पड़ती है और महज इस कारण से कि हमारे पास साधन नहीं हैं और प्रत्येक बहुत व्यस्त है इसे ''लुचेण्डो'' (उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास) कह सकते हैं। लेकिन कम से कम लोग यह जानते हैं कि हम गम्भीरता से इन प्रयासों को कर रहे हैं और इनके पीछे हमारे छिपे हुए उद्देश्य नहीं हैं और हम निश्चय ही इन प्रयासों को जारी रखेंगे। मैं यह नहीं सोच सकता कि मेरे पौत्र एवं पौत्रियाँ भी उन समस्याओं का सामना करें जिनका मैंने किया है या फिर उससे भी खराब स्थिति हो और हम उन स्थितियों में वापस पहुँच जायें जो कि हमारे लिए क्रान्ति के पूर्व थीं।

लुईसा सैट्यूर से पत्र व्यवहार हेतु पता <luisasteur@yahoo.co.uk>
नारबेरेटो मैसा कार्बोनल से पत्र व्यवहार हेतु पता <nmesacarbonell@gmail.com>

> हवाना[1] से सनसनी खबर

लुइसा स्टूयर, कोपनहेगन विश्वविद्यालय, डेनमार्क

केन्द्रीय हवान में कचरे का ट्रक।
लुइसा स्टूयर द्वारा फोटो

17 दिसम्बर, 2014 को, ओबामा कि यह घोषणा कि अमेरिका एवं क्यूबा अपने मध्य के पूर्ण सम्बन्धों को पुनःस्थापित करेंगे, हवाना के लिए एक स्मरणीय दिन कहा जाता है। जुआन, जो कि पूर्व में मुक्केबाज था और अब सड़क से सम्बद्ध सफाई कर्मचारी था साथ ही जो फिडल के प्रति बहुत वफादार था (माय फिडलिस्टा), ने यह समाचार उस आधे टूटे टेलीविजन पर सुना जो उसे एक दिन रद्दी सामान में मिला था और जिसे जुआन से सैण्ट्रो हवाना के पड़ौस की स्वच्छता सेवाओं से जुड़े छोटे कार्यालय में लगा लिया था। राउल कास्ट्रों के भाषण के कुछ अंशों के द्वारा जुआन को जब यह पता चला कि क्यूबा के पाँचों हीरो (महत्व पूर्ण व्यक्ति अथवा नायक) अब अन्ततः स्वतन्त्र हैं तो वह भावुकता के साथ बहुत खुश हुआ। मार्चेज एवं म्यूरल्स के द्वारा समर्थित माँगें जो अनेक वर्षों से समूचे क्यूबा में उठाई गयी थीं अन्ततः स्वीकार कर ली गयी थी। परन्तु शाम तक जब मैंने जुआन को प्रतिदिन के संघर्ष (ल्यूचा) में लिप्त पाया, वह कूड़े के ढेर में से डिब्बों को छाँट रहा था ताकि वह उन्हें राशि लेकर बेच सके, और फिर देखा कि वह अपने सहयोगी श्रमिकों के साथ यह बहस कर रहा था कि क्या यह सच हो सकेगा कि वे नायक जो कि अनेक वर्षों से कारागार में बन्द हैं, क्यूबा वापस आने के बाद उन समस्त वर्षों का (जो कारागार में बीते) वेतन वापस पा सकेंगे? क्या उन्हें कार एवं मकान मिल सकेगा। जुआन का एक अहसान मूलक मत यह था कि कोई भी राशि उनके उन दुःखों को कम करने में असमर्थ है जो उसके सहयोगी साथियों ने यांकी जेल में भुगते हैं। इस मत के उपरान्त वहाँ एक रहस्यमयी शान्ति छा गयी। जुआन के पड़ौसी, मारी, ने इस समाचार को अपने नियोक्ता के फ्लैट–स्क्रीन टेलीविजन पर एक अवैध मियामी चैनल पर देखा। यह प्रसारण एक अमेरिकन पायलट की परेशान पुत्री पर केन्द्रित था। इस पायलट को पाँच में एक के द्वारा क्यूबा प्रशासन को सूचना देने के उपरान्त गोली मार दी गयी थी। पायलट की पुत्री

> >

इसे ‘मानवीय हस्तक्षेप’ कह रही थी पर क्यूबा इसे ‘आतंकी आक्रमण’ मानता था। मारी का नियोक्ता एक पर्यटन आवास का स्वामी है, मारी वहाँ सफाई का कार्य करती है। नियोक्ता ने मारी को काम पर वापस जाने के लिए कहा। ‘‘यह चिका’’ नियोक्ता ने बड़बड़ाते हुए कहा, ‘‘जो कुछ भी करती है यह सोच कर करती है मानो यह मैक्सिको में कर रही हो, यह सपने देखती है, उसे यह पता ही नहीं है कि पूंजीवाद में वास्तविक श्रम का क्या अर्थ है।’’ जैसे ही मारी की नियोक्ता जाती है, मारी विरोध करते हुए प्रतिवाद करती है ‘‘इस दुष्ट को पता चलेगा जब यह मेरे बिना कार्य करके देखे।’’ पर्यटक इस आवास में केवल मेरे कारण आते हैं। आशावादिता के साथ वह इस विचार को जोड़ती है कि इस समाचार को सुनने के बाद अब मैक्सिको जाने की आवश्यकता नहीं है। निश्चय ही फिर से क्यूबा की अर्थव्यवस्था समृद्ध होगी, अधिक संख्या में पर्यटक आयेंगे और जीवन चमकीला हो जायेगा।

लेकिन क्या जुआन एवं मारी जैसे लोगों का जीवन चमकीला हो जायेगा अनेक क्यूबाई नागरिकों की तरह ये भी अनुमान लगाते हैं कि परिवर्तन सकारात्मक होंगे। अर्थव्यवस्था के खुले स्वरूप का अर्थ होगा कि डालर्स का आना प्रारम्भ होगा जिससे जीवन स्तर 1989 के पूर्व के स्तर पर वापसी ले लेगा 1989 के पूर्व राशन कार्ड्स पर उपयुक्त खाद्य सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित थी तथा क्यूबाई नागरिक उत्तम स्वास्थ्य सेवाओं तथा शैक्षणिक अवसरों का लाभ उठाने लगेंगे। कुछ लोग यह सम्भावना बताते हैं कि 17 दिसम्बर 2014 के उपरान्त क्यूबा में उत्तर–समाजवादी मार्ग प्रारम्भ होगा जिसमें निजीकरण, बाजारीकरण, राज्य का रूपान्तरण अथवा असमानता की विशेषतायें उभर कर आयेंगी।

जुआन की हम बात करें। वह राज्य के कर्मचारी के रूप में सड़क सफाई कर्मचारी है तथा लगभग 800 पीसाज (अनुमानतः 32 डालर) आय के रूप में अर्जित करता है। उसका यह वेतन उस उद्यम में कार्यरत उसके वरिष्ठ अधिकारियों से अधिक है। लेकिन जुआन के अनेक वरिष्ठ अधिकारी सम्पत्ति के संग्रहण मे व्यस्त हैं जिसे वे पर्यटकों को किराये पर दे देते हैं (औसतन वे प्रति रात्रि 30 डॉलर के बराबर पीसाज की आय कर लेते हैं) उनके पास अन्तर्राष्ट्रीय नैटवर्क की उपलब्धता है एवं सामान्यतः वे अपने संगठनात्मक विशेषाधिकार को बाजार के अन्तर्गत आकर्षक अतिरिक्त आय में बदल देते है। जुआन की अतिरिक्त आय की एक मात्र आशा उस डांवाडोल कचरे की गाड़ी से एवं पड़ौसियों से है जो उसे किसी कार्यक्रम के उपरान्त की गयी सफाई के परिणामस्वरूप राशि प्रदान करेंगे। उसका राशन कार्ड उसे आधारभूत वस्तुओं की प्राप्ति ही सुनिश्चित करता है उसे सब्जियाँ अथवा गोश्त अथवा दूध की उपलब्धता नहीं होती जिसकी उसे गम्भीर अल्सर बीमारी के उपचार हेतु जरूरत है। हवाना में दस साल गुजारने के बावजूद उसके पास कोई पंजीकृत पता नहीं है। डाक्टर के नुस्खे के बिना उसे काला बाजार से आमनीप्राजल दवा खरीदनी पड़ती है। उस की चिन्ता और बढ़ गयी है क्योंकि यह अफवाह है कि राज्य द्वारा संचालित म्युनिसिपल सेवायें भविष्य में ‘‘कापरेटिव्स’’ के रूप में बदल जायेंगी। यह एक ऐसी प्रक्रिया होगी जिसमें शायद वेतन वृद्धि होगी पर इसमें शायद जुआन सहित अनेक कर्मचारी निकाले जा सकते हैं।

मारी के पास कम से कम अपना पंजीकृत पता है और परिवार के पक्ष में विभिन्न समाजवादी सुविधाएं करने के लिए उनके पास प्रचुर मात्रा में नकदी उपलब्ध है। लेकिन एक स्व–रोजगार श्रमिक (क्यून्टा प्रोपिस्टा)—स्व रोजगार श्रमिकों की श्रेणी क्यूबा में तीव्र गति से बढ़ रही है—के रूप में उसकी आय केवल 40 डालर्स प्रतिमाह है पर किसी प्रकार की सुरक्षा, लाभ एवं पैंशन की उपलब्धता नहीं है। क्योंकि नियोक्ता ने मारी को पंजीकृत करने से इन्कार कर दिया। अधिकारियों (इन्स्पैक्टर्स) ने रिश्वत की माँग की। मारी के नियोक्ता ने मारी से उस कीमत को वसूल किया, और उसे पारिश्रमिक के रूप में कुछ भी नहीं दिया। परिणामस्वरूप मारी पूर्णरूपेण पर्यटकों से मिलने वाली टिप्स पर आश्रित हो गयी। मारी एवं उसकी नियोक्ता तर्क देते रहते हैं कि आवास/घर में पर्यटकों को क्या आकर्षित करता है लेकिन स्पष्ट है कि होने वाला समझौता असमान प्रकृति का होता है यहाँ तक कि टिप्स में भी असमानता विद्यमान है। मारी अधिक से अधिक 25 डालर्स प्रति सप्ताह कमाती है जबकि उसकी नियोक्ता 50 डालर्स प्रति रात्रि की कमाई करती है। मारी निर्धनता के कगार पर जीवन यापन करती है तथा बिना किसी सुरक्षित उपयुक्त पैंशन तथा बचत के वृद्धावस्था की तरफ अग्रसर हो रही है।

ये कहानियाँ दुर्भाग्यवश पूर्वी यूरोपीय देशों के उन अनुभवों के समकक्ष है जहाँ समाजवाद समाप्त हो चुका है। इन देशों में अस्तित्व में आये नवीन ‘‘कापरेटिव्स्’’ ने अनेक श्रमिकों को स्वामित्व विहीन अर्थात् बेदखल कर दिया है जबकि पूर्व के राज्य से सम्बन्ध प्रबन्धकों ने अपनी सांगठनिक विशेषाधिकार वाली स्थितियों को (अर्द्ध) सम्पत्ति अधिकार में बदल लिया है और वे बड़े उत्साह से हो रहे निजीकरण का समर्थन करते हैं। क्यूबा में नगरीय कुलकों के रूप में उभार लेते वर्ग ने पर्यटन एवं जमीन के कारोबार से लाभ उठा कर सम्पत्ति पर स्वामित्व स्थापित किया है। यह वर्ग नियमों की समाप्ति को आगे बढ़ा सकता है, सम्पत्ति के स्वामित्व सम्बन्धी टायटल्स को और सुरक्षित कर सकता है तथा विभिन्न कर प्रणालियों को घटाने की कोशिश कर सकता है। उसके ये प्रयास अधिकांश साधारण श्रमिकों की कीमत पर होंगे जिसके कारण समाजवादी सुरक्षा जाल और अधिक सिमटता जायेगा।

हम यह मानते हैं कि क्यूबा पूर्वी यूरोप नहीं है। क्यूबा का समाजवाद एक वास्तविक, अनेक वर्षों से प्रतिक्षित, सावधानीपूर्वक तैयार किये गये एवं जन सामान्य के लोकप्रिय समर्थन से हुई क्रान्ति का परिणाम है। यह सोवियत अधिकार का परिणाम नहीं है। समाजवाद एवं क्रान्ति क्यूबा में मूलरूप से अन्तः सम्बद्ध है। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसे श्रमिक गर्व की दृष्टि से देखते हैं साथ ही यह लोकप्रिय जीवन्त समाजवादी जीवन शैली है जिसकी अभिव्यक्ति सैन्ट्रो हवाना के माध्यम से होती है। एक परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में क्यूबा सम्भवतः एक नवीन समाजवादी प्रणाली का प्रतिनिधित्व करेगा। यह उत्तर समाजवादी दिशा की तरफ अग्रसर नहीं होगा हालांकि ऐसी सम्भावना भी हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि उत्तर समाजवादी सम्भावनाओं से उत्पन्न होने वाली जोखिमों को स्वीकारा जावे एवं उन पर सार्वजनिक बहस की जावे। ■

लुइसा सेटुयर से पत्र व्यवहार हेतु पता <luisasteur@yahoo.co.uk>

[1] मैंने सितम्बर 2014 से जनवरी 2015 तक हवाना में क्षेत्रीय अध्ययन किया। यह अध्ययन जुआन मैरिनालो सेन्टर फार कल्चरल रिसर्च की शोध सम्बद्धता से जुड़ा है में ‘‘सामाजिक–सांस्कृतिक मानवशास्त्र की अन्तर्राष्ट्रीय सैमीनार’’ में भाग लेने वाले सहभागियों का धन्यवाद ज्ञापन करती हूं। मैं वहाँ सह–संयोजक थी (9–12 जनवरी’ 2015) साथ ही मैं आइ. यू. ए. ई. एस. (इन्टरनेशनल यूनिट ऑफ एन्थ्रोपालिजकल एण्ड एथनोलाजिकल साइंसेज) से सम्बद्ध अतिथियों की आभारी हूं। वैश्विक रूपान्तरण से सम्बद्ध कमीशन एवं मार्क्सवादी मानवशास्त्र की अर्न्तदृष्टियों को इस लेख में प्रयुक्त किया गया है। इस लेख में उल्लेखित श्रमिकों के नाम मिथ्या है तथा आंशिक रूप से इस प्रस्तुति में नाटकीयता भी है।

> सनफ्लावर आंदोलन एवं ताईवान का संकटग्रस्त समाजशास्त्र

मिंग–शो हो, नेशनल ताईवान विश्वविद्यालय, ताईवान

ताईवान का सनफ्लावर आंदोलन जिसने समाजशास्त्र के जनोन्मुखी भूमिका को चुनौती दी।

चीन के साथ विस्तृत व्यापारिक उदारीकरण समझौते के विरोध में 18 मार्च सन् 2014 की शाम को ताईवान के विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय विधायिका के सम्मुख तीव्र प्रदर्शन किया जो कि अप्रत्याशित रूप से 24 दिन तक संसद पर कब्जे के रूप में उभर कर आया और जिसने एक राजनीतिक संकट को उत्पन्न किया। तथा कथित सनफ्लावर आंदोलन आंशिक रूप से किसी न किसी स्त्रोत से प्रेरित था और अक्सर 6 महीने के उपरांत हांग कांग की अम्ब्रेला क्रांति से सम्बंधित किया जाता था। यह तर्क दिया जाता है कि ताईवान में सामूहिक प्रतिरोध का यह सबसे विशाल एवं सर्वाधिक लंबा आंदोलन था। सन् 2008 में पुरातनपंथी कुओमिन्तांग के राष्ट्रीय शक्ति के रूप में उभरने के बाद यह सक्रियता अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकरण बनी। विवादित स्वतंत्र व्यापार समझौते को विधायिका की प्रक्रिया को स्थगन करने के पश्चात अंततः सनफ्लावर आंदोलन की शांतिपूर्ण समाप्ति हुई।

ताईवान में नागरिक अवज्ञा (सविनय अवज्ञा) की परम्परा लगभग अनुपस्थित रही है और यहां किसी भी प्रकार के रेडीकल विरोध के लिए आमतौर पर पुरातनपंथी राजनीतिक संस्कृति में कोई जगह नहीं है। लेकिन इसके बावजूद तीन अन्तः सम्बंधित कारणों के फलस्वरूप सनफ्लावर आंदोलन को व्यापक लोकप्रिय समर्थन प्राप्त हुआ। पहला, यह लोकतांत्रिक प्रणालियों के संरक्षण हेतु था जिसमें अधिक पारदर्शिता की मांग थी एवं अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का उपेक्षित करने का भाव था। दूसरा, यह स्वतंत्र व्यापार के खिलाफ था और तीसरा, यह चीन के विरूद्ध राष्ट्रीय सक्रियकरण की अभिव्यक्ति थी। इस अनोखे शासन विरोधी प्रतिरोध में पोलानियन (पोलयानी द्वारा प्रस्तुत) सामाजिक संरक्षण के तत्वों की उपस्थिति देखी जा सकती है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि जनवादी चीन गणराज्य की भौगोलिक सीमा संबंधी आकांक्षाएं ताईवान के संदर्भ में एक ऐसी स्थिति तक पहुंच गई है जिसे ''उत्साहवर्धक जलडमरूमध्य के पार आर्थिक विनिमय' (एनकरेजिंग क्रास स्ट्रेट इकनॉमिक एक्सचेंज) की संज्ञा दी जाती है, यह एक ऐसा विनिमय है जिसे सामान्यतः श्रमिकों एवं लोकतंत्र की कीमत पर बड़े निगमों के पक्ष में किया जाता है।

ताईवान का समाजशास्त्रीय समुदाय, जिसमें प्रोफेसर एवं विद्यार्थी दोनों ही सम्मिलित थे, इस अप्रत्याशित विरोध में गहराई से जुड़ा था। सनफ्लावर से सम्बंधित नेताओं के आहवान पर इन लोगों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया और कक्षाओं का राष्ट्रीय बहिष्कार किया गया। सिंगुआ (Tsinghua), ताइपे (Taipei) एवं सन यट–सेन (Sun Yat-Sen) विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र विभागों में शैक्षणिक गति विधियों को स्थगित कर दिया गया, साथ ही शिक्षा मंत्रालय एवं उच्च स्तरीय प्रशासकों के निर्देशों की उपेक्षा की गई। ऐसे अनेक पेशेवर समाजशास्त्री जो कि शैक्षणिक कार्यों में संलग्न थे, ने न केवल

>>

परिसरों में विरोध किया अपितु संसद को घेरने की प्रक्रिया का भी हिस्सा बने। विरोध करने वाले सहभागियों के मध्य वैचारिक लोकतंत्र के प्रयोगात्मक प्रयास के रूप में अनेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने स्वतंत्र व्यापार, युवा बेकारी एवं अन्य मुद्दों पर संयुक्त बहसों के आयोजन किये। चेन वीटिंग (Chen Weiting) (सिंगुआ विश्वविद्यालय के करिश्माई सनफ्लावर नेता) से लेकर अनेक अपरिचित स्वयंसेवकों एवं सहभागियों ने जिनमें महत्वपूर्ण समाजशास्त्री सम्मिलित थे, ने संसद के घेराव में सहभागिता की। ताईवानी समाजशास्त्र परिषद (TSA) ने ऑन लाइन मतों (वोट) की एकमत्यता के आधार पर 25 मार्च को सनफ्लावर आंदोलन के पक्ष में एक वक्तव्य का प्रकाशन किया। विद्यार्थियों की सक्रियता की स्वीकृति के प्रतीक के रूप में एवं उसे प्रोत्साहित करने के लिए नवम्बर में टी एस ए ने वी यांग (Wei Yang) जोकि एक मुख्य सक्रिय विद्यार्थी नेता थे, को अपनी वार्षिक बैठक में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया।

यह निश्चित था कि ताईवान के समाजशास्त्रियों के मध्य में एक छोटा–सा समूह ऐसा भी था जो पेशे से सम्बंधित भूमिकाओं को महत्व देते हुए इस प्रकार की सक्रियता का विरोध कर रहा था। जब टी एस ए के न्यूजलैटर में मूल्य तटस्थता को आधार बनाकर राजनीतिक सहभागिता के विरोध में एक लेख प्रकाशित हुआ तो इसके साथ असहमति रखते हुए सहभागिता के पक्ष में विमर्श प्रारम्भ हुआ जिसमें वेबर की अवधारणा की समकालीन उपादेयता को आधार बनाया गया। यह एक महत्वपूर्ण पक्ष है कि समाजशास्त्र के उद्देश्य एवं उसकी सार्वजनिक भूमिका के विषय में होने वाली यह बहस विषय की उपयोगिता एवं उसके विकास की दृष्टि से अत्यंत अर्थपूर्ण कही जा सकती है।

ताईवान के समाजशास्त्रीय समुदाय के महत्वपूर्ण लोगों की इस आंदोलन में सकारात्मक भूमिका ने पुरातनपंथियों के एक हिस्से के विरोध को स्वाभाविक रूप से उभारा। वुओमिन्तांग के शासन से सम्बंधित विधि विशेषज्ञों ने बाद में समाजशास्त्रियों की इस भूमिका की सार्वजनिक रूप से आलोचना की। उनका मत था कि यह समाजवैज्ञानिक कुछ नहीं कर रहे हैं सिवाय इसके कि वे विद्यार्थियों को सड़क पर आने के लिए उत्तेजित कर रहे हैं। इन विधि वेत्ताओं ने शिक्षामंत्री से यह अनुरोध किया कि वे सरकारी विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र विभागों पर ध्यान दें। इस प्रकार की निंदा ने अनेक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को तत्काल प्रतिक्रिया के लिए प्रेरित किया और उन्होंने समाजशास्त्र की आलोचनात्मक प्रवृत्ति के पक्ष में विभिन्न संपादकीय पृष्ठों पर लेख लिखे। यह एक ऐसा अवसर था जिसने सार्वजनिक परिवेश में विषय के महत्व को प्रभावी तरीके से स्थापित किया। समाजशास्त्र के विभागों में असहमति रखने वाले फोन कॉल्स भी उभार लेते चले गये। असहमति की यह लहर अपरिचिततामूलक थी क्योंकि फोन करने वालों में अधिकांश लोगों ने अपनी पहचान बताने से इन्कार कर दिया। साथ ही ऐसी अशोभनीय भाषा प्रयुक्त की जो कि विभाग के कार्यालय कर्मियों के लिए अपमानित करने वाली थी। सन–यात–सेन विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग को अपनी पहचान बताते हुए एक अभिभावक कॉलर ने शिक्षकों के नियमित शिक्षण को स्थगित करने के निर्णय की भर्त्सना की और यह दावा किया कि उनके इस निर्णय ने उनकी बेटी के भविष्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है जोकि तीन महीने में स्नातक होने वाली थी, जबकि वास्तविका यह है कि यह विभाग हाल ही में अस्तित्व में आया था और विरोधी आंदोलन के समय कोई भी ऐसा नहीं था जो कि चौथे वर्ष का विद्यार्थी हो।

अगर संतुलित रूप से कहा जाये तो ताईवानी समाजशास्त्र के लिए सनफ्लावर आंदोलन का तत्काल प्रभाव निश्चत ही लाभकारी रहा। हमारे शिक्षक, विदेशों में कार्यरत शिक्षक, वैचारिक लोकतंत्र, संपादकीय पृष्ठों पर लेखन इत्यादि के माध्यम से हमारे विषय की सार्वजनिक दृश्यता बढ़ी। आंदोलन में सहभागिता कर रहे अनेक विद्यार्थी समाजशास्त्र विषय में अब इसलिए रूचि लेते हैं क्योंकि समाजशास्त्र के अवधारणात्मक उपकरणों के द्वारा वे इन तथ्यों को भली भांति समझने लगे हैं कि समकालीन समाज में शक्ति को कैसे बनाये रखा जाता है, उसका क्रियान्वयन कैसे होता है और उसे चुनौती केसे दी जाती है। सन् 2015 में नेशनल ताईवान विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में स्नातक कार्यक्रम के लिए आवेदकों की संख्या दोगुनी हो गई और साथ ही अनेक आवेदकों ने इस उच्च स्तरीय अध्ययन को करने के पीछे सनफ्लावर आंदोलन के निजी अनुभवों को प्रेरक कारक के रूप में उदधृत अथवा प्रस्तुत किया।

सनफ्लावर आंदोलन के दीर्घकालिक प्रभावों को हम पता नहीं लगा सकते हैं। लेकिन अतीत के अनुभव एक स्तर तक दिशा देने का काम करते हैं। 1990 का वाइल्ड लिली आंदोलन, जो कि लोकतंत्र समर्थक विद्यार्थियों के द्वारा संचालित एक सफल विरोध था, के कारण हमारे विषय में युवाओं का प्रवेश गति पकड़ सका। हमारे पूर्व के अनेक विद्यार्थी, जो कि इस आंदोलन में सक्रिय थे, आज 40 वर्ष अथवा 50 वर्ष के प्रारम्भिक आयु–समूह का हिस्सा हैं और सफल पेशेवर समाजशास्त्री हैं। उनके शिक्षण एवं अनुसंधानों ने ताईवानी समाजशास्त्र में संघर्षमूलक वैचारिकी को विशेषता के रूप में स्थापित किया है। ठीक इसी तरह सनफ्लावर से सम्बंधित पीढ़ी निश्चय ही आने वाले समय में हमारे विषय के मूलाधारों को एक नयी दृष्टि देगी। ■

मिंग–शो हो से पत्र व्यवहार हेतु पता <mingshoho@gmail.com>

> कौन पहले आया?

श्रमिक या पर्यावरणीय आंदोलन

हवा–जेन लियु, नेशनल ताईवान विश्वविद्यालय, ताईवान एवं श्रमिक आंदोलन आई. एस. ए. की शोध समिति (RC 44) के कोषाध्यक्ष

核四保平安
我愛孩子
不要核子
宜蘭縣環境保護聯盟
廢核四救台灣
廢核四求平安

फुकुशिमा आपदा के बाद ताईवान की परमाणु विरोधी रैली, 30 अप्रैल 2011
हवा जेन लियू द्वारा फोटो

13 नवंबर 1970 को कोरिया के कपड़ा श्रमिक चुन ताए–इल ने विषमकारी कार्य स्थितियों के विरूद्ध दस लोगों के साथ प्रदर्शन किया जो कि '9 घंटे के कार्य दिवस एवं एक माह में 4 अवकाश' की माँगों के सम्बन्ध में था। यह टकराव जब समाप्त होने को था तभी चुन ने स्वयं को आग लगा ली और चिल्लाया कि 'हम मशीन नहीं है, श्रम कानूनों को लागू करो'। चुन के इस आत्मदाह एवं संघर्ष ने लोकतांत्रिक श्रमिक संघ आंदोलन को प्रोत्साहित किया एवं इसे गति दी और पूंजी एवं श्रम के संघर्ष की सघटनता को सबके सामने प्रस्तुत किया जो कि मिलिट्री शासक की कार्य शैली से संचालित विकास प्रक्रिया का भाग था।

चार माह पहले, ताईवान में, 95 ताईवानी किसानों ने वित्तीय क्षतिपूर्ति एवं निकट के क्षेत्रों में खाद्य–प्रसंस्करण सुविधाओं को किसी दूसरी जगह स्थापित करने, क्योंकि वह स्थानीय सिंचाई प्रणाली में विषाक्त रसायनों का सीधा प्रवाह कर रहा था जिसके कारण लगातार 2 वर्षों से फसल पर घातक असर पड़ रहा था, की माँग की। इस प्रकरण के साथ लगभग समान प्रकृति के 64 प्रकरण और उभर कर आये, जहाँ घेराव एवं प्रतिरोधात्मक क्रियाएं प्रयोग में लायी गयी। यह सब एक ही वर्ष में हुआ जिसे हम ताईवान में प्रदूषण के विरूद्ध तीव्र सक्रियकरण की संज्ञा दी जा सकती है। इस सक्रियकरण का उद्देश्य विकासात्मक राज्य द्वारा औद्योगिक विकास, जो कि सीमा विहीन हो गया था, को नियंत्रित करना था।

चुन का विद्रोह एवं ताईवानी किसानों की माँगें दोनों अलग–अलग घटनाएं नहीं थी और इसलिए उन्होंने निम्नलिखित मुद्दों को उठाया। औपनिवेशिक विरासत, सन्तावादी शासन और तीव्र औद्योगीकरण ने दोनों देशों में समानता होने के कारण वहाँ कार्यदशाओं

>>

김주익열사 정신계승
노조파괴 자행하는 악질적
전국금속노

राष्ट्रीय श्रम विरोध के भाग के रूप आत्महत्या
करने वाले दो श्रमिकों का अंतिम संस्कार,
13 नवम्बर 2003।
हवा जेन लियू द्वारा फोटो

को कठोर बनाया और प्रतिकूल वातावरण को उत्पन्न किया। तथापि आंदोलन बहुत भिन्न–भिन्न दिशाओं में आगे बढ़ें। यद्यपि कोरिया का श्रमिक आंदोलन एवं ताईवान का पर्यावरण आंदोलन दोनों एक ही समय पर आकार ग्रहण कर रहे थे, कोरिया का पर्यावरण क्षय तथा ताईवान के श्रमिक आंदोलन के प्रति सार्वजनिक जनून को समान स्तर पर उत्पन्न करने के लिए एक और दशक लग जायेगा। ताईवान और कोरिया के मध्य संरचनात्मक समानताओं को देखते हुए, उनके श्रम एवं पर्यावरण आंदोलन क्यों विपरीत क्रम में प्रस्तुत हुए?

इसके क्रियान्वन में रहस्य एवं परिसीमाएं दोनों का समावेश हैं, जिसे आंदोलनात्मक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है। ये दोनों प्रकार के आंदोलन इसका उदाहरण है। प्रत्येक आंदोलन में एक विशेषता यह है कि उसमें विकासात्मक राज्य एवं कार्पोरेटीय अर्थवाद के संदर्भ में विश्व को प्रभावित किया। उत्पादन की व्यवस्था एवं सेवाओं की आवाजाही में श्रमिकों की एक अपरिहार्य भूमिका होती है जो कि संगठित श्रम के कार्यतंत्र पर आधारित होती है। श्रमिक शक्ति को स्थगित कर श्रमिक पूंजीपति को लाभ प्राप्ति से वंचित कर सकता है। इसके विपरीत पर्यावरणीय आंदोलन का अपना कोई संगठित पक्ष नहीं होता। यह जनता को एक नवीन विचारधारा की तरफ आकर्षित करने की तर्कमूलक क्षमता पर आधारित था और इस दावे को स्वीकारता था कि सार्वभौमिक एवं सामूहिक वस्तुओं की कार्य–प्रणाली की तरफ इसका अपना झुकाव है।

1980 के दशक में यद्यपि कोरिया एवं ताईवानी राज्य दोनों सत्तात्मक प्रकृति के थे परंतु उन्होंने सामाजिक आंदोलनों का मुकाबला करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की रणनीतियों को अपनाया, जहाँ कोरियाई राज्य ने आंदोलन के लिए व्यापक दमन की नीति को प्रयुक्त किया, वहीं ताईवानी राज्य ने बड़े चालाक पूर्ण तरीके से विभिन्न मुद्दों को सम्मिलित कर लिया। यह विभिन्न प्रकार की रणनीतियाँ कोरिया में पर्यावरण आंदोलन को तथा ताईवान में श्रमिक आंदोलन दमन को नियंत्रित करने में सफल रही थीं। लेकिन कोरिया के श्रमिक आंदोलनों ने दमन से मुकाबला करने का मार्ग देख लिया। ठीक इसी तरह से ताईवानी किसान सह–वरण की प्रक्रिया का भिन्न रूप में सामना कर रहे थे।

जब कोरिया के श्रमिकों का दमन तीव्र हुआ और उनकी समस्याओं का उपयुक्त समाधान नहीं हुआ तब श्रमिक संघ के नेताओं ने यह पाया कि संगठनात्मक आधार संरचना में व्याप्त कमियों को दूर कर उसे मजबूती दी जाए एवं श्रमिकों के मध्य एकजुटता को व्यापक किया जाये। यदि ऐसा करते हैं तो कोई भी दमन उन्हें शक्तिशाली बनने की प्रक्रिया की तरफ जाने से नहीं रोक सकता। जब ताईवान की सर्वशक्तिमान सरकार पर्यावरण प्रदूषण की तीव्रता की समस्या को रोकने में असफल रही तो प्रदूषण से प्रभावित लोगों ने एवं पर्यावरण के पैरोकारों ने उच्च प्रशासनिक स्तर पर याचिका दायर करना सीख लिया। और परस्पर अन्तः विरोधी क्रियाएं कर टकराहट की स्थिति को उत्पन्न किया। उन सबके सामने अपनी समस्याओं तथा उनके कारणों पर बहस करनी प्रारम्भ की जोकि इन समस्याओं को सुनने की इच्छा रखते थे। इसमें संचार माध्यम भी शामिल थे, इसका परिणाम यह हुआ कि पर्यावरण संबंधी विचारों पर एक व्यापक बहस प्रारम्भ हो गई और विचारधारायी शक्तियाँ धीरे–धीरे इसके साथ संगठित हो गई। यह दुर्भाग्य ही था कि सफल आंदोलनों के परिणाम को राजनीतिक संदर्भ अब भी रोकने का प्रयास कर रहे थे, विशेषतः प्रारम्भ में उन्होंने ऐसा किया। हालांकि संदर्भों ने विशेष प्रकार की रणनीतियों का समर्थन भी किया। ये वो तरीके थे जिनके कारण कोरियाई श्रमिक आंदोलन ने जहाँ अपनी संगठनात्मक शक्ति को मजबूती दी, वहीं ताईवानी पर्यावरणीय आंदोलन ने विचार धारायी क्षमताओं को विकसित किया और जिसके कारण विभिन्न आंदोलनों की जल्दी–जल्दी उपस्थिति देखी जाने लगी।

एक बार जब इन दो प्रारम्भिक रूप में उठे आंदोलनों ने स्वयं को एक विरोधी शक्ति के रूप में स्थापित कर लिया तो वे तीव्र गति प्राप्त करते चले गये ताकि आंदोलन की शक्ति को संगठित करने के लिए राष्ट्रीय स्वरूप को उभारा जा सके। कोरिया के श्रमिक आंदोलन ने एक ऐसी आक्रामकता उत्पन्न की जिस पर समझौता करने की विरासत सम्मिलित नहीं थी। इसके साथ ही स्व संगठन भी विकसित होता है जबकि ताईवानी पर्यावरणीय आंदोलन में आशावादिता, राजनीतिक समझौता एवं अन्य विभिन्न समझौतों की रणनीतियों की निरंतरता बनी। इन आंदोलनों के असर ये हुए कि पर्यावरणीय आंदोलन ने कोरिया में श्रमिक आंदोलन का अनुकरण किया। जबकि ताईवान में श्रमिक आंदोलन ने पर्यावरणीय आंदोलन को आगे बढ़ाया। इसके कारण इन संगठनात्मक एवं सांस्कृतिक रणनीतियों को अनुकरण करना एवं इनकी प्रवृत्तियों

>>

दक्षिण कोरिया का राष्ट्रीय श्रमिक संघर्ष, 13 नवम्बर 2003। हवा जेन लियू द्वारा फोटो

पर प्रतिक्रिया करने को 'प्रारम्भिक उभरे हुए संकेत' (early riser templates) की संज्ञा दी जाती है।

यह तुलना दर्शाती है कि दो भिन्न–भिन्न प्रकार के आंदोलन, आंदोलन की शक्ति के इर्द–गिर्द संकलित हो जाते हैं। दोनों ही देशों में श्रमिक आंदोलन की तीव्रता संगठित सामरिक उद्योगों, जैसे आटो, पेट्रो–रासायनिक, डाक सेवाओं एवं जलयान निर्माण के आस–पास उभरी। दोनों पर्यावरणीय आंदोलन की विचारधारायी शक्तियों ने जन संपर्क अभियान की कला को तीव्र किया और मीडिया में सुर्खियों का रूप लिया।

यद्यपि शक्ति के इस अत्यधिकीकरण की कीमत भी चुकानी पड़ी। संगठित श्रम पर यह आरोप लगने लगा कि वह 'श्रम कुलीनतंत्र' का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके परिणामस्वरूप इन्हें मिलने वाला जन समर्थन कम हुआ। तत्पश्चात् पूँजी के पुर्नः आबंटन से निर्मित उद्योगों, जीवन पर्यन्त रोजगार गांरटी की समाप्ति एवं असंगठित अप्रवासी एवं बाहय श्रमिकों की नियुक्ति ने इनके समर्थन को और भी कम कर दिया।

इस बीच में, दोनों देशों में जैसे–जैसे पर्यावरण संरक्षण सार्वजनिक विमर्श का भाग बना, नवीन एवं शक्तिशाली प्रतिद्वंदी उभर कर आये। पर्यावरण विमर्श पर इन आंदोलनां के एकाधिकार को सरकारी स्तर पर पर्यावरण संरक्षण अभिकरण, पर्यावरण संबंधी सलाहकार संगठनों एवं निजी विचारकों ने तोड़ा और आंदोलन से उभरे विमर्श को कहीं न कहीं चुनौती भी दी। अब ताईवान एवं कोरिया के पर्यावरण आंदोलन कार्पोरेट शक्तियों के सम्मुख हारी हुई लड़ाई लड़ रहे है। आंशिक रूप में यह इसलिए हुआ क्योंकि उनका पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण उन पक्षों को सम्मिलित नहीं कर सका जो गरीब एवं लाभ से वंचित लोगों के आर्थिक अस्तित्व से संबंधित था।

संकट के दौर में दोनों श्रमिक एवं पर्यावरणीय आंदोलनों ने शक्ति के दूसरे स्रोत के रूप में उभरने के लिए काम किया। और इसलिए उनकी प्रारम्भिक सफलताओं की परिसीमाओं की क्षतिपूर्ति भी हुयी। अतः श्रमिक आंदोलन ने व्यापक सार्वजनिक हित से जुड़े अनेक मुद्दों को तत्परता से उठाया जबकि पर्यावरणीय आंदोलन ने कार्पोरेट की सर्वोच्चता के सम्मुख एक व्यापक शक्ति संस्था को उनके विरूद्ध खड़ा किया।

संकट के इस दौर में यह संभव हुआ कि एक उपयुक्त स्तर पर श्रमिक एवं पर्यावरणविदों के मध्य समझौते की संभावनाएं उभर कर आयी। दोनों ने एक दूसरे को समझा, एक–दूसरे की समस्याओं को अनेक प्रयासों को और उनके कौशल्य को सराहा। जमीनी स्तर पर श्रमिकों ने अपने आपको सांगठनिक रूप से मजबूत किया परंतु उसके परिणाम अनेक स्तरों पर कमजोर साबित हुए जबकि दूसरी ओर श्रमिक आंदोलन परिणाम की दृष्टि से मजबूती पा सका। परंतु जमीनी स्तर पर उसकी सांगठनिक स्थिति कमजोर रही। प्रत्येक आंदोलन की अपनी एक विशिष्ट प्रकार की कुशलता एवं स्वाभाविक प्रकृति की मेधा (टेलेंट) थी जिसके कारण वे उभरे, हालांकि अन्य कारणों से अनेक स्तरों पर उनकी कमजोरियां भी थी। इनके विरोधी भी इन्हीं स्थितियों का हिस्सा थे।

इन दोनों आंदोलनों की तुलना यह बताती है कि श्रमिक एवं पर्यावरण आंदोलन में पारस्परिक सम्बद्धता थी। 'आंदोलन शक्ति' एक निर्देशात्मक अवधारणा बनी जिसने आंदोलन की उत्पत्ति उसके क्रम और उसके विकास को निर्मित व विकसित किया। ताईवान एवं कोरिया में श्रमिक एवं पर्यावरणविदो के मध्य गठबंधन का यह आधार अभिव्यक्त होता है। इस तुलना ने शिक्षाविदों एवं कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित किया कि वे श्रमिक एवं पर्यावरण आंदोलनों के अतीत एवं भविष्य का पुनः परीक्षण करें। ये दो ताकतें सामाजिक जीवन के पक्षों का महत्वपूर्ण तरीके से निर्माण करती है और आधुनिक समय[1] में भविष्य संबंधी हमारी कल्पना को एक स्वरूप देती है।[1] ■

ह्वा–जेन लियू से पत्र व्यवहार हेतु पता
<hjliu@ntu.edu.tw>

[1] इस तर्क के विस्तार के लिए देखें Leverage of the Week : Labor and Environmental Movements in Taiwan and South Korea, 2015, Minneapolis : University of Minnesota Press.

> ताईवान में सिकुड़ती अभिभावकता

पी–चिया लेन, नेशनल ताईवान विश्वविद्यालय, ताईवान एवं आई. एस. ए. की परिवार (RE 06) तथा श्रमिक आंदोलन (RC 44) की शोध समितियों के सदस्य

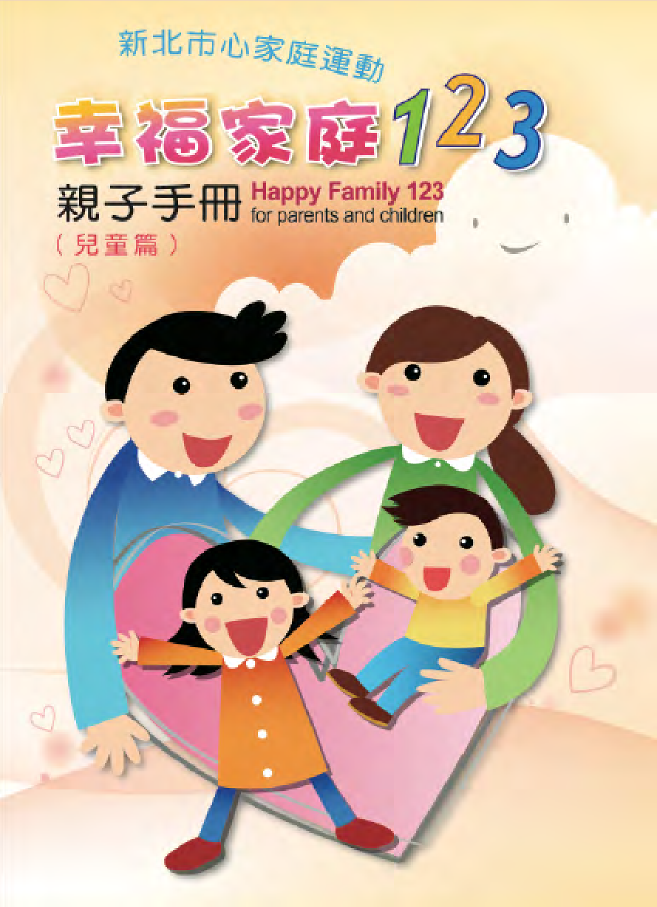
新北市心家庭運動
幸福家庭123
親子手冊
Happy Family 123
for parents and children
（兒童篇）

ताईवान में अभिभावकगण परामर्श की बढ़ती संख्या मध्यमवर्गीय एकाकी परिवार को आदर्श प्रतिमान मानती है। यहाँ न्यू ताईपाई सिटी सरकार द्वारा प्रकाशित Happy Family 123 पुस्तिका का मुखपृष्ठ है।

ताईवान की प्रजनन दर विश्व में सबसे कम है। इस कारण सदैव अमूल्य माने जाने वाले एवं असुरक्षित बच्चों के लिए ताईवानी अभिभावकों को विशेषज्ञों द्वारा अनवरत सलाह दी जाती है। ये सलाह सामान्यतः पश्चिमी सलाहों से निर्देशित होती है और इन सलाहों द्वारा बच्चों की आवश्यकताओं एवं भावनाओं पर ध्यान दिया जाता है। आजकल अभिभावक क्यों ज्यादा गहन दबाव, चिंता एवं अनिश्चितता का सामना करते हैं जबकि सांस्कृतिक संसाधनों एवं बाजार सेवाओं का व्यापक विस्तार हुआ है। मेरा शोध इन समस्त पक्षों की व्यापक विवेचना विद्यालय अवलोकन, विमर्श (डिस्कोर्स) विश्लेषण एवं गहन साक्षात्कार पर आधारित है। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध 50 से अधिक परिवारों के अभिभावकों पर इन प्रविधियों को प्रयुक्त कर तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

पितृत्व एवं मातृत्व (या अभिभावकत्व/Parenting) एवं वर्गीय असमानता के मध्य सांठगांठ एक लम्बे समय से समाजशास्त्र में विवेचना का विषय रहा है। हालांकि इससे सम्बंधित साहित्य, जिसे एंड्रियाज विमर एवं नीना गिलिक शिलर (Andreas Wimmer & Nina Glick Schiller) ने 'पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद' कहा, से ग्रस्त है। सामान्यतः विचारक किसी एक समाज में विश्लेषण की बंद इकाई के रूप में वर्ग विशिष्टता का विश्लेषण करते हैं और इस तथ्य की उपेक्षा करते हैं कि किस प्रकार समाज विनिमयमूलक सम्बंधों से और इनके पारस्परिक प्रभावों से निर्मित हुए हैं।

ताईवान ने इस संदर्भ में वैश्विक समाजशास्त्र के लिए एक रणनीतिक अनुसंधान स्थिति को प्रस्तुत किया है। यह एक ऐसा उपागम है जिसमें सिद्धांतों का क्षेत्रीयकरण व यूरोप केन्द्रित समाजशास्त्र की अवधारणाओं को सम्मिलित कर एक ऐसे ज्ञान की रचना की गई है जिसके केन्द्र में भौगोलिक क्षेत्र है। मैं पितृत्व–मातृत्व को एक ऐसी आनुभविक दृष्टि से देखता हूं जिसके तरीकों में वेश्वीकरण पारिवारिक जीवन एवं वर्गीय असमानता के सूक्ष्म क्षेत्र को आकार देता है। उत्तर–यौगिक ताईवान में बच्चों के जन्म के विषय में एवं इनके पालन–पोषण के संदर्भ में सार्वजनिक विमर्श के क्षेत्र में अनेक नाटकीय बदलाव हुए हैं। प्रारम्भ में बच्चे को एक ऐसी श्रम इकाई के रूप में देखा जाता था जो कि सैन्य राष्ट्रवाद की सेवा हेतु तत्पर हो। अब बच्चों की स्थिति को एक ऐसी स्वस्थ इकाई के रूप में देखा जाता है जो कि जैव–राजनीतिक (biopolitical) शासन से जुड़ी है। ठीक इसी तरह अभिभावकों की भी भूमिका में बदलाव आए हैं। प्रारम्भ में जहाँ अभिभावक बच्चों में अनुशासन को दबावमूलक तरीके से स्थापित करते थे वहीं अब वे माता–पिता की सलाह को स्वीकारने एवं उनका परीक्षण करने की प्रवृत्ति की तरफ अग्रसर हो रहे हैं।

अनेक विश्लेषकों का विश्वास है कि बचपन एवं पितृत्व–मातृत्व की आधुनिक अवधारणाओं को औद्योगीकरण, नगरीयकरण एवं प्रजनन दर में कमी जैसे कारकों ने उत्पन्न किया है। इस दृष्टिकोण में आधुनिकीकरण अन्तर्निहित है जिसके अनुसार पश्चिमी आधुनिकता के अनुभव उन सार्वभौमिक प्रारूपों की तरह है जो विश्व के अंदर चारों तरफ व्याप्त शक्ति असमानताओं एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं की उपेक्षा करते हैं।

>>

अन्य सामान्य दृष्टिकोण पितृत्व–मातृत्व एवं बचपन को एक ऐसे वैश्विक रूपांतरण के रूप में देखते हैं जो वैश्विक पूंजीवाद की तीव्र शक्ति से उभरे मैक्डोनाल्डीकरण का परिणाम है या फिर यह विश्व के पैमाने पर बच्चों के विकास एवं प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बंधित वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार का परिणाम है। ये दोनों ही दृष्टियाँ वैश्वीकरण को एक ऐसा बाहय कारक बना देती हैं जिसके प्रभाव क्षेत्र के फलस्वरूप वैश्विक अवयवों के औचित्य उनके देशज रूप अथवा उनके मिश्रित रूप के उभार के लिए स्थानीय समाजों के प्रयास उपेक्षित हो जाते हैं।

दक्षिण कोरिया के विचारक चाँग–क्यूंग सप (Chang Kyung-Sup) ने सिकुड़ती आधुनिकता (Compressed modernity) की अवधारणा को प्रयुक्त किया। यह एक ऐसी सभ्यतामूलक स्थिति है जिसमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन तीव्र गति से उभरते हैं और समय एवं स्थान दोनों को वे संक्षिप्त बना देते हैं। बहुस्तरीय सभ्यताओं के विविधतामूलक पक्ष–परंपरागत, आधुनिक एवं उत्तर–आधुनिक तथा देशज, विदेशी एवं वैश्विक तत्व–एक साथ विद्यमान होते है, परस्पर प्रतिस्वर्धा करते हैं एवं इन समाजों में एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। मैं इस आधार पर 'सिकुड़ते पितृत्व–मातृत्व' (Compressed Parenthood) की अवधारणा का प्रस्ताव रखता हूं जिसका अभिप्राय यह है कि सिकुड़ती आधुनिकता के संदर्भ में पितृत्व–मातृत्व की क्रियाओं में बदलाव आए हैं, वे जटिल हुई हैं और साथ ही इसमें कभी–कभी अंतर्विरोधी व्यवहारों की उपस्थिति भी रही है। यह एक ऐसा स्वरूप है जो कि ताईवान में लागू होता है एवं ग्लोबल/वैश्विक दक्षिण के विभिन्न क्षेत्रों में भी इसे देखा जा सकता है।

इस अवधारणा में तीन पक्ष सम्मिलित है : पहला, ताईवान में आर्थिक एवं राजनीतिक विकास सघन एवं व्यापक हुआ है जिसके अंतर्गत औद्योगीकरण एवं लोकतांत्रीकरण के अवयव सम्मिलित हैं। इस स्थिति ने अन्तः पीढ़ी गतिशीलता एवं एक चेतनशील नागरिक समाज को उत्पन्न किया है। मध्य वर्गीय अभिभावक एक अधिक निर्धन और सत्तावादी ताईवान में अपने 'बीत चुके बचपन' (Lost childhood) का विलाप करते हैं; वे बच्चों के लालन–पालन की परम्पराओं को तोड़ने एवं अपने बच्चों को अधिक खुशी और स्वायत्ता की पेशकश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अमेरिकी संस्कृति के प्रभाव में बच्चों के पालन–पोषण का परिवर्तित स्वरूप एक अस्मिता का द्योतक हो गया है जिसके माध्यम से अनेक अभिभावक अपने परिवारों को ऊर्ध्वगामी गतिशीलता एवं महानगरीय संवादों के संदर्भों के साथ रेखांकित करते हैं।

मध्यवर्गीय ताईवानी अभिभावकों ने स्वयं को एक वैश्विक भविष्य के विशिष्ट अभिमुखन के प्रति विकसित किया है और इस अभिमुखन में वे अपने बच्चों के भविष्य की कल्पना करते हैं। अनेक अभिभावक रणनीतिक तरीके से अपनी बच्चों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए उपयुक्त बनाने की दृष्टि से अंग्रेजी भाषा के बाल–विद्यालयों, अभिजन शैक्षणिक संस्थानों एवं अमेरिकी समर कैंप में भेजते हैं ताकि वे बच्चे वैश्विक सांस्कृतिक पूंजी की विशेषताओं को अपने व्यक्तित्व में समाहित करने के प्रति आशावान हो सके।

वहीं दूसरी ओर ऐसे अभिभावकों की संख्या में भी वृद्धि हुयी है जो इसके विपरीत रणीनति अपना रहे हैं, उनका मत है कि बच्चों की स्वाभाविक वृद्धि में कोई अवरोध नहीं होने चाहिए। उनका मत है कि अभिभावक एवं विभिन्न संस्थाएं बच्चों की 'स्वाभाविक विकास' में हानिकारक हस्तक्षेप कर रही है। अनेक अभिभावक वैकल्पिक शैक्षणिक कार्यक्रमों का चुनाव करते हैं और पश्चिमी शिक्षाशास्त्र निर्धारित प्रकृति की पाठ्यपुस्तक एवं परीक्षा प्रणाली को स्वीकारते हैं जिनका लक्ष्य बच्चे के स्वाभाविक विकास के लिए प्राथमिकताएं सुनिश्चित करना है।

अब हम सिकुड़ते पितृत्व–मातृत्व के दूसरे पक्ष की चर्चा करेंगे। पितृत्व–मातृत्व के सांस्कृतिक निर्देशों के कारण एक नया वैश्विक प्रभाव दिखाई देते है, जिसका ताईवानी यथार्थ से सीधा संघर्ष है। उदाहरण के लिए, माता–पिता को यह लगातार सलाह दी जाती है कि वे अपने समय का एक बड़ा हिस्सा बच्चों के साथ संवाद एवं अन्तःक्रिया करते हुए बिताएं लेकिन ताईवान के अधिकांश कार्य स्थल परिवार के प्रति सकारात्मक नहीं है। इन कार्यस्थलों की संस्कृति एवं संगठन परिवार के पक्षधर नजर नहीं आते। दोनों कार्यशील माता–पिता बच्चों की देखभाल के लिए या तो ऑफ्टर स्कूल कार्यक्रमों (स्कूल के बाद के कार्यक्रमों) या फिर नातेदारी के जाल पर आश्रित है। 'पीढ़ियों के बिखराव' के विवेचन के बावजूद अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों की देखभाल के लिए अपने माता–पिता, जो उनके साथ रहते हैं या उनके नजदीक रहते हैं, के ऊपर आश्रित हैं।

इसके अलावा अभिभावक सामान्यतः अभिभावकीय मूल्यों एवं बड़े संस्थागत परिवेश के मध्य एक तीव्र स्तर की असम्बद्धता पाते हैं। एक सुखी बचपन की अवधारणा को गले लगाने के बावजूद, वे अस्तित्व बनाये रखने की बच्चे की योग्यता के प्रति आशंकित है क्योंकि प्रसिद्ध हाई स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए गहन एवं व्यापक प्रतिस्पर्धा है। अभिभावकों को यह भी चिंता है कि उनके बच्चे जो कि अपने विचारों को स्वतंत्रता के साथ प्रस्तुत करते हैं और बर्हिमुखी हैं, क्या भविष्य के साथ उपयुक्त स्तर का समायोजन कर पायेंगे क्योंकि ताईवान के अधिकांश नियम आज भी सामूहिकता की संस्कृत एवं संस्तरण–मूलक सत्ता की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंत में, मैं यह एक बात और कहना चाहता हूं कि सिकुड़ता पितृत्व–मातृत्व विभिन्न वर्ग विशिष्ट संदर्भों में देखा जाना चाहिए। विभिन्न वर्गों से जुड़े अभिभावक वैश्वीकरण एवं सिकुड़ती आधुनिकता का असमान तरीके से अनुभव करते हैं जिनके पास उपयुक्त अथवा प्रचुर मात्रा में आर्थिक एवं सांस्कृतिक पूंजी है ऐसे परिवारों को वैश्वीकरण अधिक अवसर एवं संसाधन प्रदान करता है जिनके पास यह नहीं है वे सीमांतीकरण एवं वचन के साथ जुड़ जाते हैं।

ताईवान में पूंजी का बर्हिगमन एवं श्रम का आगमन पिछले कुछ दशकों में कुछ ऐसी प्रकृति का हुआ है जो श्रमिक वर्ग में रोजगार की सुरक्षा को प्रभावित करती है। ऐसे अनेक लोग जिन्हें स्थानीय महिलाएं नहीं चाहती हैं, ने दक्षिण पूर्व एशिया एवं चीन की विदेशी महिलाओं को अपनी पत्नी बनाया है जिसके कारण वैश्विक परिवार का एक नया स्वरूप उभरकर आया है। इसके अतिरिक्त नवीन अभिभावकीय नियमों जैसे शारीरिक हिंसा से सम्बंधित दंड का घर में निषेध एवं विद्यालयों में अभिभावकों की सहभागिता की अपेक्षा में वृद्धि ने ऐसी स्थितियों को उत्पन्न किया है जो अभिभावकों के समय सम्बंधी लचीलेपन एवं बच्चों के साथ संवाद की दक्षता को प्रभावित करते हैं। वस्तुतः वे इन स्थितियों को कहीं न कहीं रोकते हैं। श्रमिक वर्ग के अभिभावक, अप्रवासी माताओं एवं सामाजिक दृष्टि से वंचित अभिभावक धीरे–धीरे सामाजिक आलोचनाओं का शिकार हो रहे हैं और उनके परिवार को 'उच्च जोखिम वाले परिवार' (High Risk Families) कहा जाता है।

समय व स्थान सम्बंधी सिकुड़न हमें यह समझने में सहायक है कि समकालीन ताईवान में पितृत्व–मातृत्व क्यों प्रशंसनीय एवं अत्यधिक मांग वाला लेकिन एक मुश्किल प्रोजेक्ट है। वैश्विक समाजशास्त्र में परिप्रेक्ष्य से अगर विश्लेषित किया जाये और पश्चिमी लेखन को तलाशा जाये तो यह कहा जा सकता है कि देशज प्रक्रिया के अंतर्गत पितृत्व–मातृत्व के विमर्श में हुआ बदलाव इसलिए सीमित हुआ है क्योंकि यह संस्कृति केन्द्रित ऐतिहासिक रचना के रूप में परिवार को समझने में असमर्थ हैं। हमें यह जानने व खोजने की जरूरत है कि वैश्वीकरण के आलोचनात्मक संदर्भ किस प्रकार पितृत्व मातृत्व की उन रणनीतियों को निर्मित करते हैं जिनसे पूंजी का संकेन्द्रण होता है और साथ ही वे किस प्रकार विभिन्न वर्गीय एवं राष्ट्रीय विभाजन में असमान बचपन को आकार देते हैं। ■

पी–चिया लैन से पत्र व्यवहार हेतु पता <pclan@ntu.edu.tw>

> पतन का निर्माण

21वीं शताब्दी में ताईवान

थुंग–हाँग लिन, एकेडिमिआ सिनिका, ताईवान और सामाजिक स्तरीकरण (RC 28) और आपदा का समाजशास्त्र (RC 39) आई एस ए शोध समिति के सदस्य

ताईवान ने पिछले तीन दशकों के दौरान महत्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन का अनुभव किया है। हालाँकि, ताईवान का अधिकांशतः समाजशास्त्रीय लेखन अभी भी सफल विकास की कहानी पर केन्द्रित रहता है। परम्परावादी ज्ञान अधिकांशतः निम्न को सम्मिलित करता है :

- एक प्रबल और तार्किक ''विकासात्मक राज्य'' जिस पर क्योमिंगतांग प्राधिकारी प्रौद्योगिकी (के. एम. टी.) का आधिपत्य रहता है, जो औद्योगिक प्रगति को सफल व्यक्तियों को चुनने की नीति से प्राप्त किया हैं।
- एक कर्मठ निर्यात अभिमुखित (वैश्वीकृत) अर्थ–व्यवस्था, जिसका आधार सफल भूमि सुधार और ऐसी औद्योगिक संरचना है जिसमें लघु से मध्यम उद्यमों को प्रभुत्व हैं (एस. एम. ई.)
- छोटे व्यवसाय उद्यमों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली उधोमुखी गतिशीलता की उच्च दर, पूर्ण रोजगार और विस्तार होता मध्यम वर्ग।

कम चमकीली तरफ, मानक कहानी स्वीकार करती है, कि ताईवान एक पितृसत्तात्मक समाज है, जहाँ लैंगिक असमानता, जो परम्परावादी कॉनफ्यूसियन संस्कृति से प्रभावित है, परिवारों में, शिक्षा में और श्रम बाजार में विद्यमान है। कहानी ज्यादातर, शांति पूर्ण प्रजातांत्रिक परिवर्तन जो औसत मध्यम वर्ग पर आधारित है, पर अंत होती है (तालिका–1)

तालिका 1 : ताईवान के विकास का परिवर्तित प्रारूप

	'चमत्कारी' प्रारूप	'ढहता हुआ' प्रारूप
राज्य	प्राधिकारी, स्वायत्त और विकासात्मक	हिंसक और भ्रष्ट, लोकतांत्रीकरण तक जवाबदेह नहीं
अर्थ–व्यवस्था	स्वदेशी, निजी आधिपत्य वाले एस एम ई का निर्यात केन्द्रित अर्थव्यवस्था पर आधिपत्य	एस. एम. ई लुप्त हो रहे हैं; एकाधिकार वाली पूँजी की उड़ान चीन को जहाँ वो प्रवासी श्रमिकों का शोषण करते हैं
सामाजिक स्तरीकरण और गतिकी	एस एम ई उद्यमशीलता, उभरता हुआ मध्यम वर्ग, मजबूत सामाजिक गतिकी और कम बेरोजगारी दर	अनौद्योगिकरण और बढ़ती वर्ग असमानता; वर्ग गतिकी के बजाय वर्ग प्रजनन; उच्च युवा बेरोजगारी दर
लिंग, परिवार और जनसंख्या अध्ययन	कनफयूशियन पितृसत्तात्मक परिवार, लैंगिक भेद भाव–शिक्षा और श्रमिक बाजार में, कम उम्र में विवाह, कम तलाक दर, परंतु सफल जन्म नियंत्रण	लैंगिक असमानता का शमन, परिवार विघटन, यू. एस. के समकक्ष उच्च तलाक दर; बहुत निम्न प्रजनन दर, तेजी से वृद्ध होता समाज
राजनीति प्रगतिशीलता और विभाजन	के एम टी प्राधिकारी पार्टी राज्य बनाम् देशज नागरिक समाज; प्रजातिवाद और राष्ट्रीय पहचान के बीच मुख्य विभाजन	प्रजातांत्रिक मूल्यों में वृद्धि, वर्ग जागरूकता, युवा में अंतरपीढ़ी अन्याय का चैतन्य : चीन के प्रभाव के विरूद्ध सनफ्लावर आन्दोलन

> >

2007 से, हालाँकि, “ताईवान चमत्कार” के इस वृत्तान्त को एशिया की वित्तीय विषम स्थिति और विशाल मंदी के द्वारा कटघरे में खड़ा किया गया। जब पूर्व–सत्तावादी के. एम. टी. कुलीन वर्ग 2008 में सत्ता में लौटा, प्रौद्योगिकी वालों ने प्रजातंत्र पर और प्रजातांत्रिक समर्थक डेमोक्रेटिक प्रोगरेसिव पार्टी सरकार की नीतियों पर राजनीतिक उपद्रव का लांछन लगाया। के. एम. टी. प्रशासन ने अधिक नवउदारवादी विकासात्मक नीति एजेंडा का अनुसरण किया, चीन के साथ विस्तारात्मक व्यवसाय पर जोर दिया। मार्च 2014 से जब जन चिन्तन बढ़ते हुये “चीन असर” पर सार्वजनिक चिंता, ताईवान के सबसे बड़े छात्र आन्दोलन 1990 से के रूप में उभरी, लोकप्रिय बहस जिसमें ताईवान सरकार के चीन से संबंधों की आलोचना, के. एम. टी. की वृहद व्यवसाय से संबंध जोड़ने की प्रवृत्ति, स्थानीय एस. एम. ई. और युवा रोजगार को नजरअंदाज करते हुये–ने “चमत्कार प्रारूप” को चुनौती दी है।

हाल के अध्ययनों ने ताईवान के “विकासात्मक राज्य” की आलोचना की, यह तर्क देते हुये आलोचना की कि रूढ़िवादी और भ्रष्ट राजनीतिक गठबंधन ने सक्रिय एस. एम. ईस और ताईवान के राजनीतिक भागिता को बाहर करते हुये के. एम. टी. अधिनायकवाद को सेवा दी है। इन अध्ययनों ने चीन के तेज आर्थिक विकास और कम्यूनिस्ट पार्टी–स्टेट के “सत्तावादी प्रवृत्ति” पर समान आलोचना की तरफ ध्यान खींचा। आर्थिक मंदी के संदर्भ में चीन के केन्द्र और स्थानीय राज्य विकासात्मक से ज्यादा लुटेरे लगे। अगर ताईवान के अनुभव की समीक्षा करें तो आर्थिक विकास और सत्तावादी ताकतवर राज्य के मध्य सहयोग की बेहतर व्याख्या सुझाव देता है कि पहले ने दूसरे का पोषण किया है, न कि इसका उल्टा, जबकि ताईवान का कल्याण राज्य और नागरिकता व्यवस्था लोकतांत्रिकरण के बाद ही राजनीतिक चिंतन का विषय बने।

1990 के शुरूआत से ताईवान के बड़े व्यापारिक समूहों द्वारा चीन में भारी निवेश की वजह से ताईवान की औद्योगिक संरचना नाटकीय तरीके से बदल गयी। निर्यात मूल्य से एस. एम. ई. की भागीदारी 76% से 18% गिर गयी। आज, ताईवान का 82% निर्यात बड़ी कंपनियों से आता है; एस. एम. ई. के प्रभुत्व की जगह बहुराष्ट्रीय पूँजी और एकाधिकार ने ले ली है। उदाहरण के लिये, ताईवान के सबसे बड़े उद्यम, दी हॉन–हाई (फॉक्सकोन) समूह को कुल राजस्व 2013 में ताईवान के जी डी पी के 21% तक पहुँच गया; और जैसा कि फॉक्सकोन श्रमिक संघर्ष सुझाते हैं, ताईवान की पूँजी का केन्द्रीकरण, चीन के मुख्यभूमि के प्रवासी श्रमिकों के शोषण और चीन के पार्टी–राज्य अधिनायकवाद के तहत भूमि अधिकरण से लाभान्वित हुआ है।

ताईवान के बदलते हुए औद्योगिक संरचना ने भी सामाजिक स्तरीकरण को नई आकृति दी है। 1990 के दशक में, नगरीय मध्यम वर्ग, एस एम ई के कामगार और कुशल श्रमिकों से बना था, जो वर्ग गतिकी को उच्च दर की तरफ ले जाती है। हालांकि जब अर्थव्यवस्था धीमी हुयी, धन और आय असमानता में वृद्धि हुयी, और वर्ग गतिकी में कमी आई। जैसा कि दूसरे उत्तर–औद्योगिक समाजों में हुआ, नौकरी सुरक्षा कमजोर हुई और अनिश्चित नौकरियों और गरीब कामगारों, दोनों की संख्या में वृद्धि हुई।

सिर्फ एक अच्छी खबर यह हो सकती है कि लैंगिक असमानता में कमी आयी। शिक्षा और आय में लैंगिक अन्तर में कमी आयी और वर्तमान में वे ताईवान के पूर्व–एशियाई पड़ोसियों से भी संकीर्ण है। हालाँकि, श्रम बाजार और परिवार–आधारित भेद भाव में ज्यादा सुधार नहीं आया। विचित्र बात है, कुछ शोध बताते हैं कि विवाह महिला को कम खुशी दे पाता है। वास्तव में, ताईवान की महिला कर्मियाँ अपनी नौकरी, आय और स्वतंत्रता को बनाये रखने के कारण विवाह और गर्भधारण से बचती है, इस वजह से विवाह दर में कमी आयी है, तलाक दर यू. एस. के बराबर बढ़ गयी है और दुनिया की सबसे कम प्रजनन दर यहाँ है।

इन आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों ने ताईवान के राजनीतिक परिदृश्य को पुनः आकार दिया है। राजनीति विज्ञान साहित्य ने ज्यादातर के एम टी प्राधिकारी पार्टी–राज्य और देशज नागरिक समाज के बीच संघर्ष पर ध्यान केन्द्रित किया हैं, परंतु 1990 के लोकतांत्रिक संक्रमण से, बढ़ती हुयी आर्थिक असमानता और पीढ़ियों के मध्य अन्याय ने नवीन राजनीतिक विभाजन को उत्तेजित किया है। कुछ चुनावी अध्ययनों ने बताया है, कि डी. पी. सी. समर्थन मुख्यतया अंत्यावसायी कामगारों और कृषक वर्ग (मुख्यतः पुरूष) और युवा अधिक उदारवादी मूल्यों वाले ताईवानी से आया है।

2008 से, के एम टी सरकार ने, चीन के पार्टी–राज्य के साथ सहयोग कर और ताईवान और चीन के वृहद व्यापार के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर प्रोत्साहित कर अर्थव्यवस्था को किया है। जिह–मिन वू ने जिसे “प्राधिकारी पूँजीवाद का संकर–संकीर्ण राज्य–व्यापार संगठन” का नाम दिया, उस पर ताईवान और चीन के बीच आर्थिक और राजनीतिक एकीकरण को मुक्त व्यापार एजेंडा के द्वारा जारी रखने का संदेह है। सरकार ने इस एजेंडा को नवउदारवादी “ट्रिकल डाउन” वाली विचारधारा से बढ़ाया, जो के एम टी अधिनायकवाद की पुरानी यादों द्वारा पोषित–एक एजेंडा जिसने ताईवान के लम्बे समय से खड़े हुये राष्ट्रीयता, वर्ग और पीढ़ी विभाजन के तनाव को गहरा किया, था।

ताईवान के रूपांतरण ने विकास के मॉडल के रूप में अपनी छवि को झुठला दिया। लम्बे समय से जिसे देश के विकास के इंजन के रूप में देखा जा रहा था, ताईवान के एस एम ई लुप्त हो रहे हैं। बड़े व्यवसायी और के एम टी प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ, जिनकी ताकत देश के मजबूत स्थिति पर निर्भर है, अब मुक्त व्यापार और चीन के प्रति खुलेपन की वकालत करते हैं। युवा ताईवानी बेरोजगार, नीचे की तरफ गतिकी, नौकरी असुरक्षा और स्थिर मजदूरी के साथ ही उच्च कर और उच्च सामाजिक बीमा दर का सामना करते है। एक किताब में जो आश्चर्यजनक रूप से समाजशास्त्र की बेस्टसैलर बन गयी और सनफ्लावर आन्दोलन के लिये विचारों का स्त्रोत भी, मैं तर्क देता हूँ कि इन सामाजिक परिवर्तन ने गहन पीढ़ीगत संघर्ष का उत्पादन किया है जिसने बढ़ते हुये वर्ग विभाजन का अनुसरण किया।’ बहुत पुराने आर्थिक चमत्कार के विपरीत, कुछ युवा विद्वान समाज के विनाश पर केन्द्र करते हुये जो हमारे भविष्य में हो सकता है अब ताईवान के समाजशास्त्र में प्रारूप बदलाव की मांग कर रहे हैं। ■

थुंग–हॉंग लिन से पत्र व्यवहार हेतु पता <zoo42@gate.sinia.edu.tw>

[1] थुंग–हॉंग लिन इट एल (2011) ए जेनरेशन ऑफ कोलेप्स : क्राइसिस ऑफ केपिटेलिस्म, यूथ पॉवरटी एंड दी लोएस्ट फर्टीलिटी रेट इन ताईवान, ताइपई : ताईवान लेबर फ्रंट।

> ताईवानी समाजशास्त्र के विकास में व्यापकता और विशिष्टता

माऊ–कुई चेंग, एकेडमिया सिनीसा, ताईवान, प्रजातिवाद, राष्ट्रवाद और नृजातीय संबंधों की शोध समिति (RC 05)

ताईवान में समाजशास्त्र की वर्तमान स्थिति का पूर्ण लेखा–जोखा देना असंभव है; इसके बजाय मैं कुछ उदाहरणों के द्वारा ताईवान में समाजशास्त्री किस प्रकार ''समाजशास्त्र करते हैं'' को प्रदर्शित करूँगा। मैं शुरूआत करूँगा अभी हाल ही में ताईवान समाजशास्त्रीय एसोसिएशन (टी. एस. ए.) के नवम्बर, 2014 में हुयी वार्षिक अधिवेशन से। विगत पचास वर्षों से, एसोसिएशन का वार्षिक अधिवेशन उसके सदस्यों जिनकी संख्या अब पाँच सौ तक पहुँच गयी है, के लिये एक महत्वपूर्ण सामुदायिक घटना रहा है। इस वर्ष, अधिवेशन जिसका आयोजन राष्ट्रीय तसिंग–हुआ विश्वविद्यालय ने किया था, में 64 सत्र और विभिन्न विषयों पर 180 पत्र समाहित थे। ये पत्र राजनीतिक अर्थव्यवस्था से लेकर उत्तर–आधुनिक व्यक्तिवादिता, साथ ही पूर्व एशिया क्षेत्र के फोरम और चीन में संतरण के जैसे विषयों पर थे। विशेष अतिथि जो जापान की समाजशास्त्रीय एसोसिएशन और कोरिया की समाजशास्त्रीय एसोसिएशन का प्रति–निधित्व कर रहे थे, साथ ही चीन के विद्वान जो हाँग–काँग के विभिन्न विश्वविद्यालय से सम्बन्धित थे, को इसमें आमंत्रित किया गया था।

इस वर्ष के कार्यक्रम की सबसे उल्लेखनीय घटना शुरूआती भाषण था। परम्परा से हटकर, एक युवा ग्रेजुएट विद्यार्थी, याँग वाई, को अपने आन्दोलन के विषय में वार्ता करने को कहा गया और उस अभियान पर जिसने संसद सदन पर कब्जा कर लिया और बाद में ''सूरजमुखी आन्दोलन'' कहलाया पर चिंतन करने को कहा (इस संस्करण में मिंग–शो हो का लेख देखिये)। इस अपरम्परावादी भाषण ने ताईवान के समाजशास्त्रियों के सामान्य दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। उन में से काफी ने परम्परावादी प्रारूप को, असमानता, प्रजातंत्र, न्याय और नागरिकता जैसे विषयों पर गंभीर वाद–विवाद के द्वारा चुनौती थी।

परंतु, जैसा कि काफी जगहों पर हुआ, टी. एस. ए. सदस्य विविध सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण लिये हुये थे और अपनी समाजशास्त्रीय कल्पना और रीति में विभिन्नता रखते थे। वार्षिक अधिवेशन में, सदस्यों ने खुले रूप से व्यवसाय आन्दोलन के औपचारिक समर्थक के विषय में अपने विरोधी विचारों को अभिव्यक्त किया। कुछ सदस्य सामाजिक आन्दोलन के द्वारा एसोसिएशन के राजनीतिकरण के खतरे को लेकर चिंतित थे, उनकी चिंता है कि यह संगठन के पेशेवर स्तर को पीछे खींच सकता है और टी. एस. ए. की बौद्धिक संगठन के रूप में पहचान को हानि पहुँचा सकता है। ताईवान में इस प्रकार के वाद विवाद काफी रहे हैं, हमारे संकाय के संस्थापकों से यह हमें विरासत में मिला है।

परंतु टी. एस. ए. दूसरी गतिविधियों के लिये भी आवश्यक है। जैसे, यह एक प्रतिष्ठित सह–समालोचित द्वि–वार्षिक पत्रिका, 'ताईवानीस जरनल ऑफ सोशियलॉजी' के साथ, तीन खबर पत्रिकायें, और एक बहुत ही प्रसिद्ध ब्लाग साइट जिसे ''स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी'' कहा गया (इस अंक में हाँग–जेन वाँग का लेख देखिये), जिसने आनुभाविक खोज और समसामयिक विषयों के लिये एक स्थान प्रदान किया है, का प्रकाशन करता है।

टी. एस. ए. की सदस्यता अन्य बुद्धिजीवी एसोसिएशन के साथ आच्छादित है, जिसमें 'द ताईवानीस फ्रेमिनिस्ट स्कोलरस एसोसिएशन, द कल्चरल स्टडीज एसोसिएशन, द सोशल वेल्फेयर एसोसिएशन ऑफ ताईवान, ताईवान की एस. टी. एस. (विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज) एसोसिएशन। आस–पास के क्षेत्र और संबंधित विषय वस्तुओं के साथ ये घूमते हुए एवं व्युत्पन्न संबंध, समाजशास्त्र और समाज विज्ञान के वृहद् समुदाय दोनों को बौद्धिक ऊर्जा देते हैं।

निम्न में, मैं तीन संपादकीय संस्करण जो गत दस वर्ष में प्रकाशित हुये है, का वर्णन करूँगा, जिससे ताईवान के समाजशास्त्रियों की मौलिक रूचि प्रदर्शित होगी। हर संस्करण एक विशिष्ट शैली को चित्रित करता है : (1) परम्परावादी या ''मुख्यधारा'' (2) ''पारराष्ट्रीय'' या वैश्विक (3) ''सार्वजनिक''। चुनाव बेहद सीमित है, परंतु सबको अच्छी तरह से ग्रहण किया गया है और इस प्रकार के प्रकाशन के प्रतिनिधि के रूप में लिया जा सकता है।

'सोशल चेंज इन ताईवान, 1985–2005 : मास कम्यूनीकेश्न एंड पॉलीटिकल बिहेवियर' (संपादक–एम. चांग, वि. लो और एच. शियू, 2013) ताईवान के समाजशास्त्र की मुख्यधारा को प्रदर्शित करती है। इसमें जो लेख समाहित है वे प्रजातांत्रिक काल के दौरान ताईवान में बदलते राजनीतिक भागिता और मीडिया संप्रेषण का परीक्षण करते हैं। ये अध्ययन राष्ट्रीय नमूना आंकड़े जिन्हें ताईवान सोशल चेंज सर्वे प्रोजेक्ट (टी. एस. सी. एस.) ने 1989 से संग्रहित किया था पर आधारित हैं। ये सर्वेक्षण एक प्रकार का ''स्नेप शॉट'' प्रदान करते हैं जो नागरिकता, राष्ट्रीय पहचान, धर्म, लिंग, परिवार, रोजगार, वैश्वीकरण और मुख्यधारा समाजशास्त्र के कुछ अन्य मुख्य अव–

> >

> **“आज, समाजशास्त्र समाज में जैविक रूप से सन्निहित हो गया है”**

धारणाओं की वक्त के अनुसार बदलती प्रवृत्ति के निर्माण में सहायक है। 2002 से प्रोजेक्ट ने इंटरनेशनल सोशल सर्वे प्रोग्राम (आई. एस. एस. पी.) और ईस्ट एशियन सोशल सर्वे (ई. ए. एस. एस.) के मौड्यूल को भी समाहित कर लिया है। आंकड़ों का सैट विश्व भर के मनीषी के लिये खुला हुआ है और तुलनात्मक अध्ययन के लिये उपयोगी है।

‘टू क्रांस और नॉट टू क्रॉस : ट्रासनेश्नल ताईवान, ताईवानस् ट्रांसनेश्नेलिटी’ (सम्पादक–एच. वांग और पी. गूओ, 2009) ताईवान के समाजशास्त्र की ‘‘अंतराष्ट्रीय’’ प्रकृति का उदाहरण है। इसमें समाजशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों और इतिहासकारों ने सुझाव दिया है कि उच्च गतिकी और तीव्र वैश्वीकरण के समसामयिक संदर्भ के कारण, ‘‘राष्ट्र–राज्य’’ के परे देखने की हमारी आवश्यकता है। यह अंक जन के बहाव पर, संस्कृति और पूँजी पर उभरते ज्ञानपूर्ण कार्य को जो ताईवान के दृष्टिकोण से सामाजिक और भौगोलिक सीमाओं को पार करते हैं, को प्रस्तुत करता है। संस्करण के सभी लेख साथ मिलकर समाज के बारे में मौजूद प्रादेशिक धारणाओं को चुनौती देते हैं। इस संस्करण में, दक्षिण पूर्वी एशिया के घरेलू महिला कामगारों पर अध्ययन, ताईवान के बुद्ध संगठनों का वैश्विक विस्तार, आप्रवास विवाहों में पहचान और लैंगिक मुद्दे, और ताईवान के व्यवसायी और महिला जिन्हें चीन और ताईवान के बीच में पकड़ा गया से सम्बन्धित विषय हैं।

ताईवान के समाजशास्त्र के सार्वजनिक तार सबसे हाल के प्रकाशन, *स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी* (संपादक एच वांग, 2015) द्वारा प्रदर्शित किया गया है। किताब में 37 योगदाताओं के 34 लेख है, जिन्हें साधारण भाषा में लघु निबंध या टिप्पणी में लिखने को कहा गया, जिसमें सामान्य पाठकों के लिये समाजशास्त्रीय निष्कर्ष और तर्क समझाये गये हैं। निबंधों को पांच विषय में व्यवस्थित किया गया है : राजनीतिक जीवन, कठिन और विषम जीवन, लैंगिक मुद्दे, हाशिये पर जीवन और वैकल्पिक रास्ता। सभी लेख ब्लॉग साइट स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी पर प्रथमतया पोस्ट की तरह से उभरे (इस अंक में हाँग–जेन वाँग को लेख देखें)। फेसबुक साइट फरवरी, 2014 में बनायी गयी थी और एक महीने के अन्दर, उसने 3,000 दर्शकों को प्रति दिन आकर्षित किया। 2014 में, हर लेख को औसतन 6,700 हिट मिले, जो समान काल के दूसरे फोरम से काफी ज्यादा थे। इस तथ्य के बावजूद कि उसकी सारी पोस्ट सार्वजनिक क्षेत्र में है, प्रकाशित अंक की बिक्री ने ताईवान में समाजविज्ञान के प्रकाशन के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये।

पूर्व में, आलोचकों ने यह सुझाव दिया था कि ताईवान के समाजशास्त्र में स्वयं की विशेषताओं का अभाव है और उसकी पश्चिम समाजशास्त्र पर निर्भरता की आलोचना की है। बीस वर्ष पूर्व का सोचते हुये मैं सहमत हूँ। हालाँकी, समाजशास्त्रियों की आगे आने वाली पीढ़ीयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिसमें साधिकार राज्य का बंदीकरण के लिये दबाव, सांस्कृतिक रूढ़िवादियों द्वारा स्थापित किया गया संशय, पश्चिमी प्रभाव में समाजविज्ञान के भारतीयकरण पर वाद–विवाद, चीन–केन्द्रित और ताईवान–केन्द्रित प्रारूप में संघर्ष समाहित है। आज, समाजशास्त्र समाज में जैविक रूप से अंतः स्थापित हो गया है। उसने जन की ओर जन के लिये ज्ञान की प्रगति को गले लगाया है। वर्ग, वर्ग प्रजनन, राज्य, प्रभुत्व, सत्ता, सामाजिक आन्दोलन, लैंगिकता, सिविल सोसाइटी, नागरिकता और वैश्वीकरण जैसे वृहद अव–धारणाओं को हाई स्कूल की पढ़ाई और मास मीडिया की भाषा के साथ जोड़ा गया।

इन सफलताओं के होते हुये भी, नयी चुनौतीयाँ वृहद तरीके से आ रही है। एक चुनौती है वृद्ध होती आबादी और कॉलेज योग्य छात्रों की घटती हुई संख्या की। दूसरी चुनौती है, बाजारी कट्टरवादिता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की व्यापक शक्ति समाजशास्त्री और सामाजिक संस्थाएँ शोध मूल्यांकन का मानकीकरण करने के लिए प्रशासनिक दबाव में हैं। यह उन्हें मानविकी और सामाजिक विज्ञानों, जिन्हें सीमित उपयोगिता वाला माना जाता है, से संसाधनों को वापस लेने का तर्क प्रदान करता है। इसके अलावा ये सारी चुनौतियाँ, ऐसे काल में आयी जब असमानतायें गहरा रही थी। पर इन चुनौतियों ने ताईवान के समाजशास्त्र को अन्य जगह के समाजशास्त्र से अलग चिन्हित नहीं किया। इसलिये विश्व के समाजशास्त्री भविष्य में साथ साथ प्रवेश कर रहे हैं। ■

माऊ–किउई चेंग से पत्र व्यवहार हेतु पता <etpower@gmail.com>

> स्ट्रीटकार्नर समाजशास्त्र

होंग–जेन–वेंग, राष्ट्रीय सन यात–सेन विश्वविद्यालय, काऊशुंग ताईवान और आई. एस. ए. प्रवास पर शोध समिति (RC 31) के सदस्य

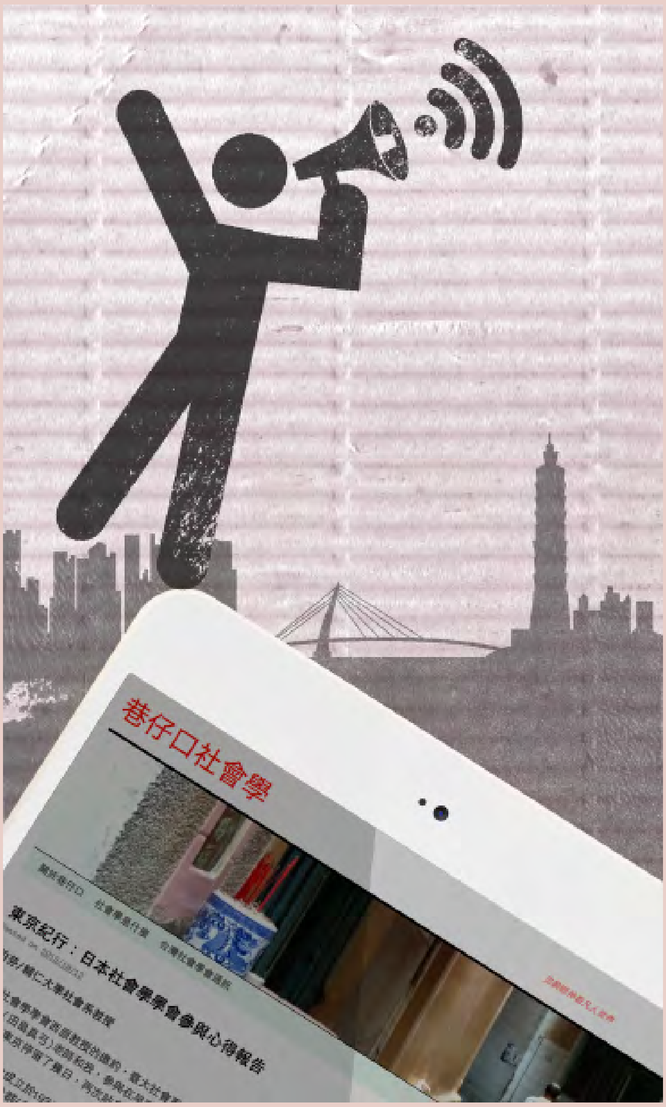
巷仔口社會學
東京紀行：日本社會學會參與心得報告

चित्रण अरबू द्वारा

ताईवान के वर्तमान शैक्षणिक वातावरण में पेशेवर ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना आसान कार्य नहीं है : विश्वविद्यालय प्रशासन इस प्रकार के ''अनुत्पादक'' कार्य को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। कोई भी समाज–वैज्ञानिक जो अपने आप को जन/सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त रखना चाहता है, ''अशैक्षणिक'' कहलाने के कलंक के संकट में रहता है। कुछ विद्वान अपने स्वयं का ब्लॉग लिखते हैं, परन्तु अधिकांशतः यह अपना अस्तित्व नहीं रख पाते क्योंकि इन्हें काफी समय की आवश्यकता होती है।

2009 में, कुछ ताईवानी मानविज्ञानियों ने एक सामूहिक ब्लाग चलाने का प्रयोग किया, जिसे 'ग्यावएन्थ्रोपोलॉजी' का नाम दिया गया, जो हर सप्ताह मानवशास्त्रीय शोध के प्रसार के लिये एक लघु कमेन्टरी प्रदान करता था। अपने प्रारंभिक वर्षों में इस ब्लाग ने ज्यादा ध्यान आकर्षित नहीं किया, परन्तु इसने समाजशास्त्रीय समुदाय एक लिये एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

ताईवान के समाजशास्त्रीयों के समर्थन से, फरवरी 2013 में 'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी' की शुरूआत हुई। दो वर्षों में इसने 130 से अधिक लेख प्रकाशित किये, जो कि 100 से अधिक ताईवानी समाजशास्त्रीयों द्वारा लिखित है। इसको 2.2 करोड़ लोगों द्वारा देखा गया और उसकी काफी पोस्ट को विभिन्न जन संचार माध्यमों द्वारा पुनः पोस्ट किया गया।

'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी' की रचना से पहले, टाइवान ने अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ब्लाग जैसे Pansci या Mapstalk की शेखी बघारी, जिन्होंने कुछ वर्षों में लाखों हिट जुटाए वर्तमान में जो लोग अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हैं, ने इंटरनेट सर्फ करना सीख लिया। इस प्रकार अगर समाजशास्त्रियों को जनमत और सामाजिक नीतियों को प्रभावित करना है, तो उन्हें इंटरनेट पर बहस में संलग्न होना होगा। इसके अलावा, कई लोगों ने लम्बे लेखों को पढ़ने का धैर्य खो दिया है। एक प्रकाशक के अनुसार, एक लघु पत्र जिसे तीन से पाँच मिनट में खत्म किया जा सके, इंटरनेट पर पाठकों के लिये पर्याप्त है। इसलिये, प्रारंभ से ही, 'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी' में योगदान देने वालों को सलाह दी गयी, कि उन्हें 5,000 से कम चीनी शब्द और लगभग 1,500 अंग्रेजी शब्द में लिखना चाहिये–यह समाचारपत्र के जनमत स्तम्भ के लिये काफी बड़ा है, परंतु सार्वजनिक बहस में संलग्न होने के लिये ब्लाग पोस्ट काफी है।

'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी' को ताईवान समाजशास्त्रीय समुदाय के समर्थन का मिलना, उसकी सफलता में अहम बिन्दु रहा है।

>>

जापानी समाजशास्त्र सोसाइटी में 3,000 से ज्यादा सदस्य है, जबकि कोरियाई समाजशास्त्र एसोसिएशन में 1,000 से अधिक सदस्य हैं; इसके विपरीत, ताईवान में 300 से कम सक्रिय समाजशास्त्री हैं। कोरियाई समाजशास्त्र एसोसिएशन की विभिन्न उप–समितियाँ समाजशास्त्रीय ज्ञान का प्रचार–प्रसार करने के लिये विभिन्न विषयों पर पाठ्य पुस्तकें लिखती हैं–जैसे, प्रवास या सामाजिक सिद्धान्त। इसी प्रकार, जापान में भी, महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए समाजशास्त्र की पुस्तकों की श्रृंखला है। स्पष्ट है, कि इस प्रकार के प्रयास ताईवान की लघु समाजशास्त्रीय समुदाय की क्षमता से परे है। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों के समाजशास्त्रियों के द्वारा, सामुदायिक रूप से लिखी गयी, लघु कमेन्टरी, समाजशास्त्रीय योगदान के प्रचार–प्रसार के लिये अधिक प्रभावपूर्ण माध्यम प्रदान करती है। लघु समुदाय के रूप में, जहाँ अधिकतर समाजशास्त्री एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, अधिकतर ताईवानी समाजशास्त्रीयों ने हर दो साल में एक लघु कमेंटरी में योगदान देने की तत्परता को प्रमाणित किया है।

गत कुछ वर्षों में, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दों पर बढ़ती हुयी जन–रूचि ने भी ब्लाग की लोकप्रियता में योगदान दिया। आर्थिक वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं से असंतोष, चीन का विस्तार और वर्तमान रूढ़िवादी दक्षिणपंथी सरकार ने मार्च 2014 में बड़े छात्र आन्दोलन को उकसाया; उन 50 दिनों के कब्जे और विरोध प्रदर्शन के दौरान, 'स्ट्रीटकार्नर समाजशास्त्र' ने आन्दोलन का समर्थन करते हुये 17 से अधिक लेख प्रकाशित किये और लगभग 10,000 दर्शकों ने हर दिन साइट को देखा, जो पिछले महीने के 1,700 से काफी अधिक था। ब्लाग एक महत्वपूर्ण साइट बना, जहाँ आन्दोलन के समर्थक सार्वजनिक नीति पर वाद–विवाद कर सकते थे। यहाँ तक कि सरकारी अफसर भी अपनी नीतियों के बचाव में ब्लाग पर आ गये।

जो लोग टाइवान के समाजशास्त्र में रूचि रखते है, या फिर प्रदेश के सामाजिक और राजनीतिक विकास में रूचि रखते हैं उन लोगों के लिए 'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी', एक खिड़की बन गया है। जैसे–जैसे 'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी' ज्यादा जाना जाने लगा है, ज्यादा से ज्यादा हाई स्कूल के विद्यार्थी विषय को समझने के लिये ब्लाग पढ़ने लगे हैं। यह विशेष रूप से इसलिये भी महत्व पूर्ण है, क्योंकि पूर्व में समाजशास्त्र को समाज–कार्य से काफी बार भ्रमित किया है। इसके साथ ही, ताईवान के दूसरे समाचार माध्यम, ने उन लेखों पर रिपोर्ट लिखी जो ब्लाग पर प्रकाशित हुये, जिसने शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य को अधिक दृष्टिगोचर करने की स्थिति प्रदान की। चीन और हाँग–काँग की वेबसाइट पर, इस ब्लाग पर आये हुये लेखों को पुनः ब्लाग किया गया। शायद, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि चीनी वेबसाइट ने मुख्यतः उन लेखों को पुनः पोस्ट किया जो कम संवेदनशील राजनीतिक विषयों पर चर्चा करते है, जैसे कला, पर्यटन या सामुदायिक विकास का समाजशास्त्र। इसके विपरीत हाँग–काँग के ब्लाग राजनैतिक मुद्दों, जो राज्य और बचपन से संबंधित प्रश्नों पर चर्चा करते है, या फिर हाँग–काँग, टाइवान और चीन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करते हैं, में अधिक रूचि रखते हैं।

अधिकांश शैक्षणिक पत्र दस लोगों से भी कम के द्वारा पढ़े जाते है, और करीब एक–तिहाई समाज विज्ञान के पत्र कभी उद्धरण नहीं हुये। अगर हमारी समय–खपतपूर्ण शोध पाठकों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाती है–हमारे शैक्षणिक साथी को भी नहीं–यह काफी निराशाजनक होगा। इसके विपरीत, सह–लेखित 'स्ट्रीटकार्नर सोशियोलॉजी' ने दर्शा दिया कि सामुहिक कार्य प्रबल सामाजिक प्रभाव डाल सकते हैं, और यह भी प्रदर्शित किया कि समाजशास्त्री अपने शैक्षणिक शोध का त्याग किये बिना, सामाजिक मामलों में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। ■

हाँग–जेन वाँग से पत्र व्यवहार हेतु पता <hongren63@gmail.com>

>जुर्गन होर्टमेन

एक समर्पित अन्तर्राष्ट्रीयवादी

ल्यूडमिला नर्स, आक्सफोर्ड XXI थिंक टैंक, ब्रिटेन की सह–संस्थापक और निदेशक, और ISA के युवाओं पर शोध समिति (RC 34) के बोर्ड की पूर्व सदस्य और **सिल्विया ट्रन्का**, RC34 के बोर्ड की पूर्व सदस्य, आस्ट्रिया

जुर्गन होर्टमेन, आईएसए की युवाओं का समाजशास्त्र की शोध समिति के अध्यक्ष (1986–1990), उपाध्यक्ष, वित्त, आईएसए (1994–1998) का निधन 2 मार्च 2015 को हो गया।

हमेशा खुश और मैत्रीपूर्ण, दयालु, खुले दिमाग के, स्वागतातुर, सकारात्मक, सहयोगी, मददगार, गर्मजोश, समझदार, एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य वैज्ञानिक, एक कुशल आयोजक, एक प्रेरक व्यक्तित्व–यह है जिस प्रकार से जुरगेन हार्टमैन को उनके मित्र और सहकर्मी याद करते हैं जो कि मार्च 2, 2015 को गुजर गये।

जुरगेन का जन्म 18 मार्च 1944 को Remscheid-Lennep (जर्मनी) में हुआ। चूंकि उनके पिता युद्ध में मारे गये थे, जुरगेन को उनकी माता ने बड़ा किया। एक बालक के रूप में, जुरगेन ने अनेक दोपहर एक स्थानीय किताब की दुकान में बितायी थी। एक पेटू पाठक, वे जल्दी ही मालिक के मित्र बन गये, जो उन्हें दुकान के पीछे के कमरे में मुफ्त में किताबें पढ़ने देता था। जुरगेन ने कृतज्ञतापूर्वक जो भी मिला उसे आत्मसात किया : उन्होंने अन्य देशों और संस्कृतियों के बारे में पढ़ा, उन्होंने नक्शों और यहां तक कि रेलों की समयसारणियों को भी पढ़ा। इसने उनकी शैक्षणिक आकांक्षाओं को जागृत किया और उनको दुनिया की यात्रा करने की इच्छा को प्रेरित किया। इसने उन्हें द्रुत गति से पढ़ने में मदद की और वो हमेशा अपना रास्ता ढूंढ सकते थे चाहे वो कहीं भी हों, जैसे कि वो कोई मानव कम्पास हों। एक कामकाजी

>>

माता के बेटे के रूप में, जुरगेन ने जल्दी ही स्वादिष्ट भोजन तैयार करना भी सीख लिया, एक कौशल जिसमें उन्होंने अपने जीवन के दौरान निपुणता हासिल की।

1969 में जुरगेन ने University of Cologne से अर्थशास्त्र में परास्नातक की डिग्री प्राप्त की। एक विद्यार्थी के रूप में, उन्होंने स्टाकहोम में गर्मीयों में नौकरी करी और अपसला विश्वविद्यालय से एक छात्रवृत्ति जीती, जहां वो अपनी स्वीडिश पत्नी Solveig से मिले। 1973 में, स्वीडन में छात्र विद्रोह पर एक डॉक्टरेट थीसिस के लिये पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उपाधि प्राप्त करने के बाद, पूरे स्वीडन में व्याख्यान देते हुये, 1993 तक उन्होंने अपसला विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में कार्य किया। 1980 से 1982 तक, उन्होंने वियना में संयुक्त राष्ट्र से सम्बद्ध एक संगठन European Centre for Social Welfare, Training and Research, में रिसर्च हेड के रूप में कार्य किया (1983 से 1986 तक उन्होंने अपना अंतर्राष्ट्रीय कैरियर शुरू करते हुये एक अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट Integration of Youth into Society को निदेशित किया।

ISA से जुरगेन का पहला संपर्क जुलाई 1978 में अपसला में आयोजित हुई समाजशास्त्र की नवीं आई. एस. ए. विश्व कांग्रेस में हुआ था। ISA की कार्यकारी सचिव इजाबेला बारलिंस्का तब कांग्रेस सचिवालय में मदद कर रही एक युवा विद्यार्थी, जुरगेन से जानकारी डेस्क पर मुलाकात होना याद करती हैं। तब अपसला विश्वविद्यालय के एक युवा प्रोफेसर, जुरगेन ने महसूस किया कि स्थानीय शैक्षिक समुदाय के एकप्रतिनिधि के रूप में उनकी मदद की जरूरत हो सकती है। और यह निश्चित ही था! दोनों अनुभवहीन थे और आई. एस. ए. की संरचना में नये थे, परंतु दोनों दूसरों की मदद को उत्सुक थे। वे हमेशा के लिये दोस्त बन गये।

एक अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में दुनिया के विभिन्न हिस्सों के सहकर्मियों के साथ काम करना जुरगेन के लिये महत्वपूर्ण था। वे ISA के युवाओं के समाजशास्त्र की शोध समिति (RC 34) में शामिल हो गये, इसके कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया (1982–1986) और 1986 में इसके अध्यक्ष चुने गये। उनके पूर्ववर्ती, Petar-Emil Mitev, ने कहा कि ''शीत युद्ध के दौरान, जुरगेन ने RC34 को पश्चिमी और पूर्वी यूरोप के युवा शोध कर्ताओं के बीच सहयोग के एक मॉडल में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। पूर्वी यूरोपीय देशों के युवा शोधकर्ता हमेशा उनके अच्छे इरादों वाले सहयोग और आम शैक्षिक उद्देश्यों केप्रति सच्ची निष्ठा पर भरोसा कर सकते थे।''

John Bynner कहते हैं कि ''एक महत्वपूर्ण समय पर RC34 के नेतृत्व ने जुरगेन को सोवियत यूनियन में Glasnost and Perestroika के द्वारा युवा लोगों की परिस्थितियों में बड़े पैमाने पर आये परिवर्तनों को देखने और समझने की उत्तम स्थिति में ला दिया था'', उन्होंने जुरगेन की दूरगामी विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य और अंतदृष्टि से परिपूर्ण टिप्पणियों की प्रशंसा की जब वे उनके साथ वियना में European Coordination Centre for Research and Documentation in the Social Sciences द्वारा चलाये जा रहे एक तुलनात्मक प्रोजेक्ट यूरोपीय युवा और नई प्रौद्योगिकी (1987-1990), पर काम करते थे। RC34 द्वारा प्रायोजित, बर्लिन की दीवार के गिरने और सोवियत यूनियन के पतन को समेटती हुई इस परियोजना का मूल्य अद्वितीय था। Bynner जुरगेन का एक सच्चे अंतर्राष्ट्रवादी के रूप में वर्णन करते हैं जिसने उनके जैसे अनभ्यस्त को संकुचित राष्ट्रीय दृष्टिकोण से दूर रहने और सांस्कृतिक मान्यताओं और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में अपेक्षाकृत अंतर, विशेष रूप से पूर्वी यूरों में जहाँ आई. टी. में असैन्य और उपभोक्ता रूचि अभी भी सीमित है, की समझ विकसित करने में मदद की है। युवा लोग, IT क्षमता और राष्ट्रपार मीडिया पहुंच के लिये उनकी बढती मांग के द्वारा, और अगली पीढ़ी के रूप में, इस प्रकार परिवर्तन के प्रमुख अग्रदूत में से एक बन रहे थे। यह अब समझना मुश्किल है कि जुरगेन का कंप्यूटर योग्यता के लिये प्रमाणपत्र का विचार, एक ड्राइविंग लाइसेंस की हैसियत लिये, को उस समय, पूर्वी देशों में एक यूटोपिया के रूप में देखा गया था। उन्होंने नयी तकनीक के द्वारा व्यस्कता में आने वाले बदलाव की महत्ता और एक तेजी से भूमंडलीकृत होती दुनिया में व्यक्तिकरण, ध्रुवीकरण और बढ़ती असमानता के परिणामों को जल्दी ही पहचान लिया था जो कि इसके दुष्परिणाम थे। हम आज युवा राजनीति और नीति के केन्द्र के रूप में इन चीजों से मुकाबला करते हैं, बहुत हद तक जुरगेन के प्रभाव के कारण है जिसे हम इस दिन याद कर सकते हैं।'' एक सच्चे अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक के रूप में, जुरगेन RC34 के अंतर्गत चीनी युवा शोधकर्ताओं के साथ सहयोग को प्रारम्भ करने में कामयाब रहे। यह कोई संयोग नहीं है कि उनकी अध्यक्षता के बाद दो अवधियों में RC34 में एशिया उपाध्यक्ष चीन से थे। जुरगेन ने कूटनीतिक रूप से चीन में आयोजित RC34 के पहले सम्मेलन एशियाई आधुनिकीकरण और युवा (शंघाई 1993) के लिये रास्ता साफ करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी।

जुरगेन एक उत्कृष्ट नेटवर्कर भी थे। हेलेना हेल्व, नोर्डिक यूथ रिसर्च कोर्डिनेटर (1998–2004) और RC34 की अध्यक्ष (2002–2006) जुरगेन को नोर्डिक युवा अनुसंधान का अग्रणी मानती है। हेलेना ''1960 और 1970 के दशक में यूरोप में युवा आंदोलनों के बारे में आकर्षक मुख्य भाषण जो जुरगेन ने नोर्डिक यूथ रिसर्च सम्मेलन में दिया था, से प्रभावित थी। जुरगेन ने सक्रिय रूप से नोर्डिक यूथ शोधकर्ताओं के सहयोग को बढ़ावा दिया। वह नोर्डिक यूथ रिसर्च सिम्पोसियम NYRIS और नोर्डिक यूथ रिसर्च कोर्डिनेशन के संस्थापकों में से एक थे। एक जाने–माने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक बन जाने के बाद भी वो अपने आप को हमेशा एक नोर्डिक युवा शोधार्थी ही मानते थे। उनका काम अंतर्राष्ट्रीयकृत हुआ और इसने नोर्डिक युवा शोध को पूरी दुनिया में प्रसिद्ध बना दिया।'' जुरगेन 1990 में उनके उत्तराधिकारी Sibylle Hubner-Funk द्वारा स्थापित किये गये CYRCE (Circle for Youth Research Coopearation in Europe) के भी सदस्य थे, जिसने यूरोपीय युवा अनुसंधान को बनाने और मजबूत करने में योगदान दिया।

जुरगेन के व्यापक ज्ञान, शिक्षण अनुभव और जटिल मुद्दों को स्पष्टता से समझाने की क्षमता ने उन्हें लोकप्रिय वक्ता बना दिया। उनकी प्रस्तुति शैली में कुछ खास थाः जब वो बहुत सारे श्रोतागणों को संबोधित करते थे, तब भी सुनने वालों को लगता था कि वो उनसे व्यक्तिगत रूप से बात कर रहे हैं।

RC34 की अध्यक्षता के बाद, जुरगेन ISA की कार्यकारी समिति के लिये निर्वाचित हुए : 1990 से 1994 तक वित्त समिति और 1994 से 1998 तक वित्त के उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने कार्य किया। इस भूमिका में, उन्होंने ISA World Congresses में समाजशास्त्रियों को बेलेफील्ड (1994), मॉन्ट्रियल (1998) और ब्रिस्बेन (2002) लाने में मदद की।

युवा शोध के अलावा, जुरगेन खुलासे और अनुभव के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समझ

>>

को बढ़ाने को लेकर जोशीले थे; उन्होंने युवा यात्रा को, विनिमय से पर्यटन तक, केन्द्र के रूप में देखा। ल्यूडमिला नर्स अक्टूबर 1992 की एक घटना को सुस्पष्ट रूप से याद करती हैं, मॉस्को में, जहां उन्होंने Youth and Social Changes in Europe : Integration or Polarization पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया था। सम्मेलन के पहले दिन, युवा संस्था के निदेशक को तत्कालीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय जो कि रूस में नयी युवा नीतियों के विकास से जुडा हुआ था, से टेलीफोन आया। वे सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले कुछ पश्चिमी विद्वानों से मिलना चाहते थे। जुरगेन इस तथ्य से बहुत उत्साहित थे कि सम्मेलन ने रूसी सरकार का ध्यान आकर्षित किया था। हम क्रेमलिन में आमंत्रित किये जाने पर रोमांचित थे जहां हमारे छोटे से समूह का Gennady Burbulis तत्कालीन रूसी संघ के राज्य सचिव, जो राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन के बाद रूस में दूसरे सबसे प्रभावशाली राजनीतिज्ञ थे द्वारा स्वागत किया गया। बैठक में, मुख्य ध्यान रूस के युवा लोगों को किस तरह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल किया जाये, पर था। जुरगेन ने सबसे पहले सुझाव के साथ जवाब दिया जो कि बहुत सरल और सीधा थाः रूस के युवा लोगों को विदेश यात्रा करने की और दुनिया देखने की अनुमति दे देनी चाहिये। पहले, सब ने सोचा कि यह बहुत ही सरल कार्य है; उसके बाद, जुरगेन ने समझाया कि देश को भी बदलना चाहिये और युवा लोगों को वापसी के लिये आकर्षक होना चाहिये। वहां एक गहन चर्चा हुयी और जुरगेन के लिये एक बड़े संतोष की बात थी कि उनके युवा गतिशीलता के संदेश को बहुत अच्छे से लिया गया।

युवा गतिशीलता और यात्रा पर जुरगेन के कार्य ने इस क्षेत्र में युवा अनुंसधान को आकार देने में महतवपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से यात्रा के कारणों का विश्लेषण किया और युवा यात्रिओं को सूचीबद्ध किया। पश्चिमी यूरोप में युवा गतिशीलता और यात्रा पर उनके काम में, उन्होंने यूरोपीय संघ की नीतियों और ''युवा गतिशीलता'' की अवधारणा को यूरोपीय चेतना के उद्भव और अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति में एक फलदायक सहयोग से जोड़ा। उदाहरण के लिये, यह तर्क देते हुये कि यूरोपीय इंटररेल टिकट ने किसी संस्थागत विनिमय कार्यक्रम से कहीं अधिक युवा स्वीड् के अनुभव को ''यूरोपीय'' बनने में योगदान दिया और कि युवा लोगों की यात्रा करने की इच्छा उनकी विदेशी भाषा बोल सकने की क्षमता के साथ सहसंबंधित है।

जब डलारना विश्वविद्यालय ने यूरोपीय पर्यटन प्रबंधन (ETM) कार्यक्रम को बनाने के लिये पांच अन्य यूरोपीय विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी में प्रवेश किया, जुरगेन ने पर्यटन में अपनी रूचि को अपना पेशा बनाने के अवसर को पकड़ लिया और पे इस परास्नातक कार्यक्रम के स्वीडिश भाग के निदेशक (1994-2008) बन गये। उन्हें शिक्षण से प्यार था और सेवानिवृत्ति के बाद तक व्याख्यान देना जारी रखा।

जुरगेन कई लोगों के लिये एक सच्चे दोस्त और RC34 के सभी सदस्यों के महान साथी थे। हम सभी उनकी टीम भावना, उनकी हंसमुख मुस्कान और गले मिलना, उनकी जिंदादिल हंसी, जिज्ञासु मन, बुद्धिमत्तापूर्ण सुझाव और प्रोत्साहन की कमी महसूस करेंगे। यदि हम उनकी छोड़ी गयी समृद्ध विरासत पर निर्माण करते हैं, तो वो हमारे कार्य और यादों में जीवित रहेंगे। ■

सिल्विया ट्रंका से पत्र व्यवहार हेतु पता
<sylvia.trnka@aon.at>
ल्यूडमिला नर्स से पत्र व्यवहार हेतु पता
<lyudmilanurse@oxford-xxi.org>

[1] हम Izabela Barlinkska, John Bynner, Helensa Heklve और Petar-Emil Mitev के योगदानों के लिये आभारी हैं।